श्री शिव पुराण

(द्वितीय खण्ड)

।। शिव का अश्वत्थामा के रूप में अवतार ।।

सनत्कुमार सर्वज्ञ शिवस्य परमात्मनः ।
अवतारं शृणु विभोरश्वत्थामाह्वयं परम् ।१
बृहस्पतेर्महाबुद्धे र्देवर्षेरंशतो मुने ।
भरद्वाजात्समुत्पन्नो द्रोणोऽयोनिज आत्मवान् ।२
धनुर्भृतां वरः शूरो विप्रर्षिः सर्वशास्त्रवित् ।
बृहत्कीर्तिर्महातेजा यः सर्वास्त्रविदुत्तमः ।३
धनुर्वेदे च वेदे च निष्णातं यं विदुर्बुधाः ।
वरिष्ठं चित्रकर्माणं द्रोणं स्वकुलवर्धनम् ।४
कौरवाणां स आचार्य्य आसीत्स्वबलतो द्विज ।
महारथिषु विख्यातः षटसु कौरवमध्यतः ।५
साहाय्यार्थं कोवारणां स तेपे विपुलं तपः ।
शिवमुद्दिश्य पुत्रार्थं द्रोणाचार्यो द्विजोत्तम ।६
ततः प्रसन्नो भगवाच्छंकरो भक्तवत्सलः ।
आविर्बभूव पुरतो द्रोणस्य मुनिसत्तम ।७

नन्दीश्वर ने कहा हे सर्वज्ञ ! हे सनत्कुमार । अब आप सब में व्याप्त रहने वाले परमेश प्रभु शिव का 'अश्वत्थामा'-इस नाम से होने वाले उत्तम अवतार की कथा श्रवण करो ।।१। हे मुने ! महा मनीषा से सम्पन्न देवगुरु बृहस्पति के अंश में भरद्वाज ऋषि के द्वारा द्रोण-इस नाम वाला एक अयोनिज पुत्र उत्पन्न हुआ।२।यह द्रोण संसार के समस्त धनुषधारियों में परम श्रेष्ठ अद्भुतवीर,विप्रर्षि,समस्त शास्त्रोंका ज्ञाता,कीर्तिसम्पन्न महान् तेजस्वी और सभी शस्त्रास्त्रों के चलाने की विधि का जानने वाला हुआ था ।३। बुद्धिशाली द्रोण बाण विद्या का पारङ्गत पण्डित वेदार्थ ज्ञान का धुरन्दर विद्वान् एक से-एक अद्भुत कर्मों के करनेवाला अपने कुल का वर्द्धक वरिष्ठ परम प्रसिद्ध था ।४। हे द्विजवर्य ! यह महाबलवान् द्रोण कौरव कुल का आचार्य और छै महारथियों में अत्यन्त प्रसिद्ध थे ।५। ब्राह्मणों में अत्युत्तम द्रोणाचार्यने कौरव कुल की सहायता करनेकेलिए एकमहावीर पुत्रके उद्देश्य को लेकर शिवके प्रीत्यर्थ उग्र तपस्या की ६। द्रोणके तप से मुनि सत्तम! भक्तों पर कृपा रखने वाले भगवान् शङ्कर प्रसन्न होकर द्रोणाचार्य के समक्ष में प्रकट हो गये ।७।

तं दृष्ट्वा स द्विजो द्रोणास्तुष्टावाश् प्रणम्य तम् ।
महाप्रसन्नहृदयो नतकः सुकृताञ्जलिः ।८
तस्य स्तुत्या च तपसा सन्तुष्टः शङ्करः प्रभुः
वरं ब्रूहीति चोवाच द्रोणं तं भक्तवत्सलः ।९
तच्छ्रुत्वा शम्भुवचन द्रोणः प्राहाथ सन्नतः ।
स्वांशज तनयं देहि सर्वाजेयं महाबलम् १०
तच्छ्रुत्वा द्रोणवचन शम्भुः प्रोचे तथास्त्विति ।
अभूदन्तर्हितात कौतुकी सखकृन्मुने ।११
द्रोणोऽपगच्छत्स्वं धाम महाहृष्टो गतभ्रमः ।
स्वपत्न्यै कथयामास तद्वृत्त सकल मुदा ।१२

अथावसरमासाद्य द्रुरुः सर्वान्तकः प्रभः ।
स्वांशने तनयो जज्ञे द्रोणस्य स महाबलः ।१३
अश्वत्थामेति विख्यातः स बभूव क्षितौ मुने।
प्रवीरः कञ्जपत्राक्षः शत्रुपक्षक्षयङ्करः ।१४

भगवान् शिवका दर्शन कर ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य ने हृदयमें अत्यन्त प्रसन्न होकर हाथ जोड़ते हुए नम्र भावसे शिवको प्रणाम किया।८ द्रोण की स्तुति से तथा घोर तपश्चर्यासे भक्तवत्सल शिव ने प्रसन्नता पूर्वकद्रोणसे कहा-'जो चाहो वरदान माँगों।९। शिवके ऐसे आनन्दप्रद वचनोंको सुनकर द्रोणाचार्य ने नम्रता से प्रार्थना की कि सभी के द्वारा अजेय और अतुल बल शाली अपने ही अंश से उत्पन्न होने वाले पुत्र का वर दीजिये ।।१० हे तात हे मुनिवर द्रोणाचार्य की इस प्रार्थना को सुनकर शिव ने कहा-ऐसा होगा।'बस इतना कहनेके उपरान्त कौतुक करनेवालेसुखदायी शिवअंतर्धान होगये ।११।तबतो आचार्य द्रोण का संशय मिट गया और अत्यन्त प्रसन्नता के साथअपने निवास स्थानपर पहुँचकर शिवसे प्राप्त इस वरदानका समस्त वृत्तान्त अपनी पत्नी को कह सुनाया ।१२। इसके अन्तर समय आने पर जगत्के संहारक प्रभु शिव अपने अंशसे आचार्य द्रोणके यहाँ महाबलशाली पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए।१३। हे मुनिराज ! वह कमल दलके तुल्य सुन्दर नेत्र वाले और शत्रुओं के बलके नाश करने वाले महाबली शङ्कर संसारमें अश्वत्थामा—इस नाम से विख्यात हुए ।।१४।।

यो भारते रणे ख्यातः पितुराज्ञामवाप्य च ।
सहायकृद्भूवाथ कौरवाणां महाबलः ।१५
यमाश्रित्य महावीरं कौरवाः सुमहाबला ।
भीष्म दयो बभूवुस्तेऽजेया अपि दिवौकसाम् ।१६
यद्भयात्पाण्डवाः सर्वे कौरवाञ्जेतुमक्षमाः ।
आसन्नष्टा महावीरा अपि सर्वे च कोविदाः ।१७

कृष्णोपदेशतः शम्भोस्तपः कृत्वातिदारुणम् ।
प्राप्य चास्त्रं शम्भुवराज्जिग्ये तानर्जुनस्ततः ।१८
अश्वत्थामा महावीरो महादेवांशजो मुने ।
तथापि तद्भक्तिवशः स्वप्रतापमदर्शयत् ।१९
विनाश्य पाण्डवसुताञ्शिक्षितानपि यत्नतः ।
कृष्णादिभिर्महावीरैरनिवार्य्यबलः परैः ।२०
पुत्रशोकेन विकलमापतन्तं तमर्जुनम् ।
रथेनाच्युतवतं हि दृष्ट्वा स च पराद्रवत् ।२१

इस महान् बलशाली अश्वत्थामा ने महाभारत के युद्ध में अपने पिता की आज्ञा से बड़ी ख्याति के साथ कौरव कुल के पक्ष की सहायता की थी ।। १५ ।। इसी महावीर अश्वत्थामा का आश्रय पाकर पराक्रमी कौरव और पितामह भीष्म आदि सभी देवों के द्वारा भी अजेय हो गये थे ।। १६ ।। जिस के भय होने के कारण बड़े भारी शूरवीर तथा परम विद्वान् पाण्डव कौरवों के जीत लेने में एकदम असमर्थ हो गये और प्रायः नष्ट भ्रष्ट से हो गये थे ।। १७ ।। तब भगवान् श्री कृष्ण के उपदेशको प्राप्त कर अर्जुन ने भगवान् शिव की अत्यन्त उग्र तपस्या की और उनकी कृपा से अनेक अमोघ अस्त्र प्राप्त कर कौरवों पर विजय प्राप्त की ।।१८।। हे मुनीन्द्र ! अश्वत्थामा ने साक्षात् भगवान् शङ्कर के अंश से उत्पन्न होकर कौरवों की भक्ति के वश में आकर संग्राम में अपने प्रताप का वैभव दिखलाया था ।। १९ । महान् बलशाली कृष्ण आदि शत्रुओंके द्वारा भी बड़े यत्न के साथ शिक्षा लिये हुए पाण्डवों के पुत्रों को अश्वत्थामा से मार गिराने पर भी उसकी बल-शक्ति को हटाया न जा सका था ।।२०।। अपने मृत पुत्रों के शोक से अत्यन्त व्याकुल अर्जुन को श्री कृष्ण के साथ रथ पर सवार होकर, दौड़कर आते हुए देखकर अश्वत्थामा भाग गया ।। २१ ।।

अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम तदुपर्य्यसृजत्स हि ।
ततः प्रादुरभूत्तेजः प्रचण्डं सर्वतो दिशम् ।२२

प्राणापदमभिप्रेक्ष्य सोऽर्जुनः क्लेशसंयुतः ।
उवाच कृष्ण विक्लान्तो नष्टतेजा महाभय ।२३
किमिदं क्वित्कुतो वेति कृष्ण कृष्ण न वेद्म्यहम् ।
सर्वतोमुखमायाति तेजश्चेद सुदुःसहम् ।२४
श्रुत्वार्जुनवचश्चेदं स कृष्णः शैवसत्तमः ।
दध्यौ शिव सदार च प्रत्याहार्जुनमादरात् ।२५
वेत्थेद द्रोणापुत्रस्य ब्राह्मस्त्र महोल्बणम् ।
न ह्यस्यान्यतम किञ्चिदस्त्र प्रत्यवकर्शनम् ।२६
शिव स्मर द्रुत शम्भु स्वप्रभु भक्तरक्षकम्।
येन दत्त हि ते स्वास्त्र सर्वकार्यकर परम् ।२७
जह्यस्त्रतेज उन्नद्ध त्व तच्चैवास्त्रतेजसा ।
इत्युक्त्वा च स्वय कृष्णः शिवं दध्यौ तदर्थकः ।२८

उस समय भागकर जाते हुए भी अश्वत्थामा ने ब्रह्मशिर नाम वाला अस्त्र अर्जुन पर छोड़ दिया था कि जिसके परम प्रचण्ड तेज का प्रकाश समस्त दिशाओं में प्रकट हो गया ।२२। उस वक्त प्राणों पर आई हुई इस विपत्ति को देखकर अर्जुन भय से व्याकुल हो उठा और उसके तेज से दुःखित होकर उसने श्रीकृष्ण से कहा ।२३। अर्जुन ने कहा—हे कृष्ण ! हे कृष्ण ! यह कहाँ से किसका अति दुस्सह तेज सब ओर से चला आ रहा है और क्या है ? मैं इसको अभी तक नही समझ पा रहा हूँ ।२४। नन्दीश्वर ने कहा—उस समय कातर अर्जुन के इन खेद भरे वचनों को सुनकर पार्वती के सहित शङ्कर का ध्यान करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा ।२५।—हे अर्जुन ! तुम जानते हो, यह आचार्यवर द्रोण के आत्मज अश्वत्थामा के द्वारा छोड़ा हुआ अत्यन्त तीव्रतम ब्रह्मास्त्र है संसार में इसके समान अन्य कोई भी अस्त्र इतना महान् घातक नही है।२६।अब तुम्हारा यही कर्त्तव्य हैकि बहुत शीघ्रअपने प्रभु और भक्तवत्सल शिवजी का आदर सहित ध्यान-स्मरण करो। उन्होंने तुम्हें भी समस्त कार्य पूर्ण करने वाला महान् अस्त्रप्रदान किया हैं।२७।अब तुम अपने उसी शैव अस्त्रसे इस ब्रह्मास्त्र के तेज का निवारण कर सकते हो।

यह कहते हुए श्रीकृष्ण भी स्वयं इसकी रक्षा के लिये श्री शिव का मन में ध्यान करने लगे ।२८।

तच्छ्रुत्वा कृष्णवचनं पार्थः स्मृत्वा शिवं हृदि ।
स्पृष्ट्वापस्तं प्रणम्याशु चिक्षेपास्त्रं ततो मुने ।२९
यद्यप्यस्त्रं ब्रह्मशिरस्त्वमोघश्चाप्रतिक्रियम् ।
शैवास्त्रतेजसा सद्यः समशाम्यन्महामुने ।३०
मंस्था मा ह्येतदाश्चर्यं सर्वचित्रमये शिवे ।
यः स्वशक्तयाऽखिलं विश्वं सृजत्यवति हन्त्यज ।
अश्वत्थामा ततो ज्ञात्वा वृत्तमेतच्छिवांशजः ।३१
शैवं न विव्यथे किञ्चिच्छिवेच्छातुष्टधीर्मुने ।३२
अथ द्रौणिरिदं विश्वं कृत्स्नं कर्तुमपाण्डवम् ।
उत्तरागर्भगं बाल नाशितुं मन आदधे ।३३
ब्रह्मास्त्रमनिवार्य्यं तदन्यैरस्त्रैर्महाप्रभम् ।
उत्तरागर्भमुद्दिश्य चिक्षेप स महाप्रभुः ।३४

हे मुने ! इस प्रकार अर्जुन ने श्रीकृष्ण की आज्ञा पाते ही शिव के चरणों का स्मण अपने मनमें किया और उनको प्रणाम करते हुए जल का स्पर्श करके शिवके द्वारा प्रदत्तशैवास्त्र को छोड़ दिया । ९। हे महामुने ! ब्रह्मशिर अस्त्र का तेज यद्यपि कभी भी निष्फल होने वाला नहीं थातो भी उस शैवास्त्र के तेज के द्वारा वह उसी समय शान्त हो गया था ।३०। इस प्रकारकी अत्यन्त विचित्र लीलाओंके दिखाने वाले श्रीशिव के विषयमें कभी भी आश्चर्य नहीं समझना चाहिए । वेपरम अजेयहैं और अपनी अजित एवं अपरिमित शक्तिके द्वारा इस समस्त ससारकीउत्पत्ति तथा नाश कियाकरते हैं।३१।हे मुनीश्वर ! उस वक्त शिव की अंश शक्ति से समुत्पन्न अश्वत्थामा ने शिव की इच्छा को जानकर सन्तुष्ट होते हुए उस शैवास्त्र का छेदननहीं किया ।३२। इसके अनन्तर आचार्य द्रोण के आत्मज अश्वत्थामाने समस्त संसार को पाण्डवहीनकर देने की इच्छासे उत्तरा के गर्भमें रहनेबालेबालक के संहार करने का विचार मन में स्थिर किया ।३३। इसके अनन्तर अश्व-

त्थामा ने परम कान्तिसे युक्त तथा अन्य किसी भी अस्त्रसे न हटाये जानेकी शक्ति रखने वाले उस ब्रह्मास्त्रका उत्तरा के गर्भपर प्रहार करदिया।३४।

ततश्च सोत्तरा जिष्णुवधूर्विकलमानसा ।
कृष्ण तुष्टाव लक्ष्मीश दह्यमाना तदस्त्रतः ।३५
ततः कृष्णः शिवं ध्यात्वा हृदा स्तुत्वा प्रणम्य च ।
अपाण्डवमिदं कर्तुं द्रौणेरस्त्रमबुध्यत ।३६
स्वरक्षार्थेन्द्रदत्तेन तदस्त्रेण सुवर्चसा ।
सुदर्शनेन तस्याश्च व्यधाद्रक्षां शिवाज्ञया ।७
स्वरूपं शंकरादेशात्कृतं शैववरेण ह ।
कृष्णेन चरित ज्ञात्वा विमनस्कः शनैरभूत् ।३८
ततः स कृष्णः प्रीतात्मा पाण्डवान्सकलानपि।
अपातयत्तदध्वयोस्तु तुष्टये तस्य शैवराट् ।३९
अथ द्रौणिः प्रसन्नात्मा पाण्डवान्कृष्णमेव च।
नानावरान्ददौ प्रीत्या सोऽश्वत्थामाऽनुगृह्य च ।
इत्थं महेश्वर स्तात चक्रे लीलां परां प्रभुः ।
अवतीर्य्य क्षितो द्रौणिरूपेण मुनिसत्तम ।४१
शिवावतारोऽश्वत्थामा महाबलपराक्रमः ।
त्रैलोक्यसुखदोऽद्यापि वर्तते जाह्नवीतटे ।४२
अश्वत्थामावतारस्ते वर्णितः शङ्करप्रभोः ।
सर्वसिद्धिकरश्चापि भक्ताभीष्टफलप्रदः ।४३
य इदं शृणुयाद् भक्त्या की येद्वा समाहित।
स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टमन्ते शिवपुरं व्रजेत् ।४४

इस ब्रह्मास्त्र के तेज से अत्यन्त व्याकुल मन वाली अर्जुन के पुत्र की भार्या उत्तरा जलकर भस्मीभूत होती हुई लक्ष्मी पति भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करने लगी।३५।उत्तरा की स्तुति से सावधान होकर श्रीकृष्ण ने मन में शिवका प्रणामपूर्वक ध्यान एवं स्तवन करतेहुए यह समझ लियाकियह

पाण्डव कुल के पूर्ण विनाश करने के लिये अश्वत्थामा के द्वारा छोड़े हुए ब्रह्मास्त्र का प्रभाव है ।३६। उस समय श्रीशिव की ही आज्ञा से श्रीकृष्ण ने इन्द्र द्वारा अपनी सुरक्षा के लिये प्राप्त सुदर्शन चक्र से उत्तरा के गर्भ की रक्षा की, जिस सुदर्शन चक्र का भी अति दुस्सह तेज था ।।३७।। यह समस्त चरित्र समझकर शिव के परम भक्त श्रीकृष्ण ने उत्तरा के गर्भ को शिवाज्ञा से अपना ही रूप बना दिया तो वह ब्रह्मास्त्र शनैःशनैः शान्त हो गया ।३८। इसके पश्चात् शिव के परम भक्त श्रीकृष्ण ने प्रसन्न होकर सब पाण्डवों को अश्वत्थामा की प्रसन्नता प्राप्त करके के लिये उसके चरणों में प्रणिपात के लिये गिरने की प्रेरणा दी ।३९। इससे आचार्य द्रोण के पुत्र शिव के अंशावतारी अश्वत्थामा बहुत प्रसन्न हुए और प्रेमपूर्वक पाण्डवों तथा श्रीकृष्ण पर कृपा करके उन्हें अनेक उत्तम वरदान भी दिये ।४०। हे तात ! हे मुनिश्रेष्ठ ! इस प्रकार से जगत् के प्रभु शिव ने अश्वत्थामा के रूप में अवतीर्ण होकर पृथ्वीतल में अनेकानेक अति अद्भुत लीलाएँ दिखलाई थीं ।४१। महान् बल तथा प्रबल पराक्रम वाले अश्वत्थामा का अवतार ग्रहण करने वाले शिव त्रिभुवन को परम सुखदायी अब तक भी गङ्गा के तट पर विराजमान हैं ।४२। मैंने यह शिव के अश्वत्थामा नाम वाले अवतार का चरित्र आपको सुना दिया, यह समस्त सिद्धियों का दाता और भक्तों के मनोरथ पूर्ण करने वाला है ।४३। जो भी कोई मनुष्य इस पावन चरित्र को चित्त को सावधान करके सुनता है तथा भक्ति को भावना से इसका कीर्तन करता है । वह अपने सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि प्राप्त कर अन्तिम काल में भगवान् शङ्कर के लोक चला जाता है ।४४।

।। द्वादश ज्योतिर्लिंगावतार का वर्णन ।।

अवताराञ्छृणु विभोर्द्वादशप्रमितान्पराम् ।
ज्योतिर्लिङ्गस्वरूपान्वै परमोत्तमकान्मुने ।१
केदारो हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करः ।
वाराणस्यां च विश्वेशस्त्र्यम्बको गौतमीतटे ।२
सौराष्ट्रे सोमनाथश्च श्रीशैले मल्लिकार्जुन ।

उज्जयिन्यां महाकाल ओंकारे चामरेश्वरः ।३
वैद्यनाथश्चिताभूमौ नागेशो दारुकावने ।
सेतुबन्धे च रामेशो घुश्मेशश्च शिवालये ।४
अवतारद्वादशकमेतच्छम्भोः परात्मनः ।
सर्वानन्दकर पुंसा दर्शनात्स्पर्शनान्मुने ।५
तत्राद्यः सोमनाथो हि चन्द्रदुःखक्षयङ्करः ।
क्षयकुष्ठादिरोगाणां नाशकः पूजनान्मुने ।६
शिवावतारः सोमेशो लिङ्गरूपेण संस्थित ।
सौराष्ट्रे शुभदेशे च शशिना पूजितः पुरा ।७

नन्दीश्वर ने कहा–हे मुने ! अब आप मुझ से सब में व्यापक रहने वाले ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप वाले बारह उत्तम अवतारों की की कथा सुनिये ।१। इन अवतारों के पीठ-स्थान इस प्रकार से हैं–हिमाचल पर केदारनाथ, डाकिनी में श्री भीमशङ्कर, काशीपुरी में विश्वनाथ, गौतमी नदी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर, सौराष्ट्र देश में सोमनाथ स्वामी हैं । श्री शैल में मल्लिकार्जुन का स्वरूप है, उज्जयिनी में महाकालेश्वर, ओङ्कार में अमरनाथ, चिताभूमि में वैद्यनाथ भगवान्, दारुक वन में नागेश्वर, सेतुबन्ध में श्री रामेश्वर तथा शिवालय में घुश्मेश्वर अवतार है ।२-३-४। हे मुने ! परमेश भगवान् शिव के ये उक्त द्वादश अवतार हुए हैं । जिनके दर्शन एवं स्पर्श करने से मनुष्यों को परम आनन्द तथा सुख-सौभाग्य का लाभ होता है ।५। हे मुनिवर ! इन सब में प्रथम श्री सोमनाथ चन्द्रदेव के दुःख का नाश करने वाले हैं । इनके अर्चन करने से कुष्ठ और क्षय रोग का सर्वथा नाश हो जाता है ।६। श्री सोमनाथ इस पावन नाम से होने वाला अवतार सोराष्ट्र देश में हुआ था जो कि वहाँ लिङ्ग के स्वरूप में विराजमान है । इनका सर्वप्रथम पूजन चन्द्रदेव ने ही किया था ।७।

चन्द्रकुण्डं च तत्रैव सर्वपापविनाशम् ।
तत्र स्नात्वा नरो धीमान्सर्वरोगैः प्रमुच्यते ।८
सोमेश्वरं महालिङ्गं शिवस्य परमात्मकम् ।
दृष्ट्वा प्रमुच्यते पापाद्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।९

मल्लिकार्जुनसंज्ञश्चावतारः शङ्करस्य वै ।
द्वितीयः श्रीगिरौ ताम भक्ताभीष्टफलप्रदः ।१०
संस्तुतो लिङ्गरूपेण सुतदर्शनहेतुतः ।
गतस्तत्र महाप्रीत्या स शिवः स्वगिरेर्मुने ।११
ज्योतिर्लिङ्गं द्वितीयं तद्दर्शनात्पूजनान्मुने ।
महासुखकरं चान्ते मुक्तिदं नात्र संशयः ।१२
महाकालाभिधस्तातावतारः शङ्करस्य वै ।
उज्जयिन्यां नगर्यां च बभूव स्वजनावनः ।१३

वह चन्द्र कुण्डके नाम से एक जलाशयहै । चतुर लोग वहाँ उस कुंड में स्नान करके समस्त रोगों से मुक्ति पा जाया करते हैं।८।श्रीसोमनाथ का लिङ्ग स्वरूप साक्षात् श्रीशिवकेआत्मरूप है । इस महालिङ्गके दर्शनसे पापों से छुटकारा पाकर मनुष्य भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति कर लेतेहैं ।९। हे तात!भगवान् शङ्कर का द्वितीय अवतार मल्लिकार्जुन नाम वालाहै और वह श्रीगिरि पर्वत पर विराजमान हैं तथा अपने भक्तजनों के मनचाहेफल प्रदान किया करते हैं ।१०।हे मुनिवर ! पुत्रके मुख को देखने के लिये यहाँ लिङ्ग के स्वरूपमें ही भगवान् शिव की स्तुति की गई थी।वहांसे फिरशिव प्रसन्नता के साथ कैलाश पर्वत के अपने निवास स्थानको चले गये हैं।११। हे मुने ! यह ही द्वादश अवतारों में द्वितीय ज्योर्लिङ्ग है । इसके दर्शन से महान् सुख और जीवन के अन्तिम काल में निस्सन्देह मोक्ष प्राप्त होता है ।१२। हे मुनिराज ! हे तात ! अपने परिवार की रक्षा करने के लिये उज्जयिनी में महाकालेश्वर नाम वाला शिव का अवतार हुआ है ।१३।

दूषणाख्यासुरं यस्तु वेदधर्मप्रमर्दकम् ।
उज्जियिन्यां गतं विप्रद्वेषिणं सर्वनाशनम् ।१४
वेदविप्रसुतध्यातो हुङ्कारेणैव स द्रुतम् ।
भस्मसाकृतवांस्तं च रत्नमालनिवासिनम् ।१५

तं हत्वा स महाकालो ज्योतिर्लिङ्गस्वरूपतः ।
देवैः स प्रार्थितोऽतिष्ठत्स्वभक्तपरिपालकः ।१६
महामालाह्वयं लिङ्गं दृष्ट्वाऽभ्यर्च्य प्रयत्नतः ।
सर्वान्कामानवाप्नोति लभते परतो गतिम् ।१७
ओंकारः परमेशानो धृतः शम्भो परात्मनः ।
अवतारश्चतुर्थो हि भक्ताभीष्टफलप्रदः ।१८
विधिना स्थापितो भक्त्या स्वलिङ्गोत्पार्थिवान्मुने ।
प्रादुर्भूतो महादेवो विन्ध्यकामप्रपूरकः ।१९
देवैः सप्रार्थितस्तत्र द्विधारूपेण संस्थितः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदो लिङ्गरूपो वै भक्तवत्सल ।२०
प्रणवे चैव ओंकारनामासील्लिगमुत्तमम् ।
परमेश्वरनामाऽऽसीत्पार्थिवश्च मुनिश्वरः ।२१

महाकालेश्वर शिव ने उज्जयिनी में वेद एवं विप्रों से द्वेष करनेवाले आये हुए दुरात्मा दूषण नाम वाले दैत्य को एक हूँकार से ही नष्ट करदिया था। यहाँ वह वेद-विप्रके पुत्र का वध करने के लिये आया था जोकिरत्न माल देश में भगवान् शङ्कर के ध्यान में सर्वदा निरत रहा करता था।१४ ।१५। उसी समयमें दैत्य का संहार कर भक्तवत्सल शिवदेवगण से प्रार्थित होनेपर महाकालेश्वर नाम से ज्योतिर्लिङ्ग के स्वरूप में उज्जयिनीनगरीमें विराजमान हुए हैं।१६।उज्जयिनीमें स्थित महाकालेश्वरके दर्शनका महान् फल होता है । जो इस ज्योतिर्लिङ्गके दर्शन तथा सयत्न समर्चनकरताहै, वह अपने सम्पूर्ण मनोरथ पाकर अन्त में निश्चय ही पर गतिकोप्राप्तकिया करता है।१७।शङ्कर का चतुर्थ अवतार ओङ्कारनाथ नाम वालाहै । यहभी भक्तोंके समस्त अभीष्ट फलों के प्रदान करने वाले हैं और अन्त में सद्गति दिया करते हैं ।१८। हे मुनिवर ! ओङ्कारनाथ पार्थिव लिङ्ग के अनुसार सविधि भक्तिपूर्वकसंस्थापित महादेव ने प्रकट होकर विन्ध्यके मनोरथोंको पूर्ण किया ।१९।देवताओं से प्रार्थना किये जाने पर वहाँ शिव ने अपने दो

स्वरूप धारण किये थे। भक्तों पर प्रेम करने वाले लिङ्ग रूप में विराजमान शिव भुक्ति-मुक्ति के देने वाले हैं ।२०। हे मुने ! ओङ्कार नाम प्रणव में सर्वोत्तम लिङ्ग है और वहाँ परमेश्वर नाम वाले पार्थिव रूप में प्रकट हुए हैं ।२१।

भक्ताभीष्टप्रदो ज्ञेया योऽपि ष्टोर्ट्चितो मुने ।
ज्योतिर्लिंगे महादिव्ये वर्णिते ते महामुने ।२२
केदारेशोऽवतारस्तु पञ्चमः परमः शिवः ।
ज्योतिर्लिंगस्वरूपेण केदारे संस्थितः स च ।२३
नरनारायणा ख्यौ यावतारौ हरेर्मुने ।
तत्प्रार्थितः शिवस्तत्स्थैः केदारे हिमभूधरे ।२४
ताभ्यां च पूजितो नित्यं केदारेश्वरसज्ञकः ।
भक्ताभीष्टप्रदः शम्भुर्दर्शनादर्चनादपि ।२५
अस्य खण्डस्य स स्वामी सर्वेशोऽपि विशेषतः ।
सर्वकामप्रदस्तात सोऽवतारः शिवस्य वै ।२६
भीमशङ्करसंज्ञस्तु षष्ठः शम्भोर्महाप्रभोः ।
अवतारो महालीलो भीमासुरविनाशनः ।२७
सुदक्षिणाभिधं भक्तङ्कामरूपेश्वरं वृषम् ।
यो ररक्षाम्दुतं हत्वाऽसुरं त भक्तदुःखदम् ।२८
भीमशङ्करनामा स डाकिन्यां संस्थितः स्वयम् ।
ज्योतिर्लिङ्गाख्यरूपेण प्रार्थितस्तेन शङ्करः ।२९

हे मुने ! शङ्कर के इस स्वरूप के दर्शन तथा पूजन से भक्तों के सभी अभीष्टफल प्राप्त होते हैं। मैंने तुम्हारे सामने इस महान् दिव्य ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन सुना दिया है।२।शिव का पञ्चम ज्योतिर्लिङ्ग केदारेश्वर के नाम से अवतीर्ण होकर केदारनाथ नामक स्थान में विराजमान है ।२३। हे मुनिवर ! भगवान् विष्णु के नर और नारायण नाम वाले अवतारों द्वारा हिमाचल पर शिव की प्रार्थना की गई थी।२४।इनके पूजित ही शिव केदारनाथ नाम से विख्यात हुए हैं । इनके दर्शन तथा अर्चनसे भक्तजन के सभी अभीष्ट पूर्ण हो जाते हैं ।२५। हे तात ! यह शङ्कर का अवतार सबका स्वामी एवं

समस्त कामनाओं को प्रदान करने वाला है और इस खण्ड का प्रभु है ।२६। महाप्रभु शङ्कर का षष्ठ अवतार भीमशंकर नाम वाला है जो अनेक लीलाओं के करने वाला तथा भीमासुर का वध करने वाला था ।२७। शिवभक्तों को सताने वाले इस दैत्य का वध कर कामरूप देश के सुदक्षिण नाम वाले राजा की भगवान् शिव ने इस अवतार में रक्षा की थी ।२८। तभी से शिव भीमशंकर इस नाम से विख्यात होकर डाकिनी में अपने भक्त सुदक्षिण नृप से स्तुति किये जाने पर स्वयं लिङ्गरूप में वहाँ विराजमान हो गये ।२९।

विश्वेश्वरावतारस्तु काश्यां जातो हि सप्तमः ।
सर्वब्रह्माण्डरूपश्च भुक्तिमुक्तिप्रदो मुने ।३०।
पूजितः सर्वदेवैश्च भक्त्या विष्ण्वादिभिः सदा ।
कैलासपतिना चापि भैरवेणापि नित्यशः ।३१।
ज्योतिर्लिंगस्वरूपेण संस्थितस्तत्र मुक्तिदः ।
स्वयं सिद्धस्वरूपो हि तथा स्वपुरि स प्रभुः ।३२।
काशीविश्वेशयोर्भक्त्या तन्नामजपकारकाः ।
निर्लिप्ताः कर्मभिर्नित्यं कैवल्यपदभागिनः ।३३।
त्र्यम्बकाख्योऽवतारो यः सोऽष्टमो गौतमीतटे ।
प्रार्थितो गौतमेनाविर्बभूव शशिमौलिनः ।३४।
गौतमस्य प्रार्थनया ज्योतिर्लिंगस्वरूपतः ।
स्थितस्तत्राचलः प्रीत्या तन्मुनेः प्रीतिकाम्यया ।३५।
तस्य सन्दर्शनात्स्पर्शाद्दर्शनाच्च महेशितुः ।
सर्वे कामाः प्रसिध्यन्ति ततो मुक्तिर्भवेदहो ।३६।
शिवानुग्रहतस्तत्र गंगानाम्ना तु गौतमी ।
संस्थिता गौतमप्रीत्या पावनी शंकरप्रिया ।३७।

हे मुने ! शिवका सप्तम अवतार काशी में विश्वेश्वर इस नाम से हुआ था जो इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का स्वरूप है और भुक्ति-मुक्ति का प्रदान करने वाला है ।३० उस समय भगवान् विष्णु आदि समस्त देवगणने उनकी स्तुति की । वह कैलाशके स्वामी यहाँ भैरव के एक रूप से स्थित हुए ।३१। और

एक अन्य ज्योतर्लिगके स्वरूप से वहाँ विराजमान हैं जो मुक्ति प्रदान करने वाले स्वयं सिद्ध स्वरूप एवं अपनी पुरी के प्रभु हैं।३२। काशीपुरी तथा वहाँ के स्वामी भगवान् विश्वनाथ की भक्तिभाव से अर्चना करने वाले और उनके पावन नाम का जप करने वाले पुरुष कर्म बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष पद के अधिकारी हो जाते हैं।३३। शिव का त्र्यम्बक-इस नाम वाला अष्टम अवतार गौतम ऋषि की प्रार्थना से गौतमी नदी के तट पर हुआ है।३४। शशिशेखर शिव गौतम मुनिकी प्रेम-भक्ति और कामनासे समन्वित प्रार्थनाके होने के कारण ही ज्योतिर्लिगके सहित अचल होकर वहीं विराजमान हुएहैं।३५ यहाँ पर भगवान् शिवके दर्शन और स्पर्श न करने से मनुष्योंकी सम्पूर्ण कामनायें परिपूर्ण हो जाती हैं और अन्त समय में मोक्षपद प्राप्त होता है।३६। गौतम मुनिकी उत्कृष्ट प्रीतिके कारणही शंकरभगवान्की कृपासे वहां गौतमी गंगा के नाम वाली परम प्रसिद्ध एवं अति पावन नदी स्थित रहती है।३७।

वैद्यनाथवतारो हि नवमस्तत्र कीर्तितः।
आविर्भूतो रावणार्थं बहुलीलाकरः प्रभुः।३८।
तदानयनरूपं हि व्याजं कृत्वा महेश्वरः।
ज्योतिर्लिगस्वरूपेण चिताभूमौ प्रतिष्ठितः।३९।
वैद्यनाथेश्वरो नाम्ना प्रसिद्धोऽभूज्जगत्त्रये।
दर्शनात्पूजनाद् भक्त्या भुक्तिमुक्तिप्रदः स हि।४०।
वैद्यनाथेश्वरशिवमाहात्म्यमनुशासनम्।
पठतां शृण्वतां चापि भुक्तिमुक्तिप्रदं मुने।४१।
नागेश्वरावतारस्तु दशमः परिकीर्तितः।
आविर्भूतः स्वभक्तार्थं दुष्टानां दण्डदः सदा।४२।
हत्वा दारुकनामानं राक्षसं धर्मघातकम्।
स्वभक्तं वैश्यनाथं च प्रारक्षत्सुप्रियाभिधम्।४३।

शिव का नवम अवतार वैद्यनाथ के नाम वाला हुआ है जो लकेश्वर रावणके हित सम्पादनके लिये नाना प्रकारकी लीलायें प्रकट करने वाले थे।३८। शिवभक्त रावण उन्हें अपने साथलिये जानेकी इच्छाकर रहा था तब

उस समय बहाना करके चिता भूमि में वे ज्योतिर्लिंग के स्वरूप से स्थितहो गये ।३९। उस स्थान पर भगवन् शिव वैद्यनाथेश्वरके नामसे सर्वत्र विख्यात होगये जिनके भक्तिपूर्वक दर्शन करनेपर तथा पूजन करनेपर अपनीपूर्ण भक्ति एवं मुक्ति वे प्रदान करते हैं ।४०। हे मुनीश्वर ! वैद्यनाथेश्वर शङ्कर अपने इस अनुशासनयुक्त महात्म्य को पठन एवं श्रवण करने वाले पुरुष का भुक्ति तथा मुक्ति दोनों ही प्रदान किया करते हैं ।४१। भगवान् का दशम अवतार नागेश्वर नाम से प्रसिद्ध है जो अपने भक्तजनोंको अर्थ और दुष्टजनोंको दण्ड देने के लिये ही प्रकट हुए थे ।४२। इस अवतार में शिव ने दारुक दैत्यका वध कर सुप्रिय नाम वाले अपने परम भक्त एक वैश्य की रक्षा की थी ।४३।

लोकानामुपकारार्थं ज्योतिर्लिंगस्वरूपधृक् ।
सन्तस्थौ साम्बिकः शंभुर्बहुलीलाकरः परः ।४४।
तद् दृष्टवा शिवलिंगं तु मुने नागेश्वराभिधम् ।
विनश्यन्ति द्रुतं चार्च्य महापातकराशयः ।४५।
रामेश्वरावतारस्तु शिवस्यैकादशः स्मृतः ।
रामचन्द्रप्रियकरो रामसंस्थापितो मुने ।४६।
ददौ जयवरं प्रीत्या यो रामाय सुतोषितः ।
अविर्भूतः स लिंगस्तु शंकरो भक्तवत्सलः ।४७।
रामेण प्रार्थितोऽत्यर्थं ज्योतिर्लिङ्गस्वरूपतः ।
सन्तस्थौ सेतुबन्धे च रामसंसेवितो मुने ।४८।
रामेश्वरस्य महिमाद्भुतोऽभूद्भुवि चातुलः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदश्चैव सर्वदा भक्तकामदः ।४९।

नाना प्रकार की अद्भुत लीलायें करने वाले जगदम्बा भगवानोकेसहित शिव ज्योतिर्लिंग का स्वरूप धारण करके संसार के मनुष्योंकी भलाईके लिए वहाँ विराजमान हुए हैं ।४४। हे मुने ! नागेश्वर नाम वाले भगवान् शिवके लिंग का दर्शनार्चन करने से बड़े से बड़े महान् पातकों के समूहभी शीघ्र ही समूल नष्ट हो जाया करते हैं।४४।हे मुनिराज ! भगवान शिव का रामेश्वर नाम वाला ग्यारहवाँ अवतार हुआहैजिसको श्रीरामचन्द्र भगवाननेस्थापित

किया था और उनका प्रिय कार्य करने वाले हुए हैं।।४६।। ज्योतिर्लिंग के सुन्दर स्वरूप में संस्थित भक्तवत्सल भगवान् शम्भु श्री रामचन्द्र जी की भक्ति-भावना से अत्यन्त सन्तुष्ट हुए और उन्होंने श्रीराघवेन्द्र को विजय प्राप्त करने का वरदान दिया था।४७। हे मुने ! सेतुबन्ध में भगवाण् श्रीरामचन्द्र ने उनकी अति सेवा की ओर उन्हीं की प्रार्थना से भगवान् शङ्कर ज्योतिर्लिंग के स्वरूप में विराजमान हुए हैं ।।४८।। इस भूमिमण्डल में श्रीरामेश्वर की बहुत अधिक तथा अत्यन्त अद्भुत महिमा है। रामेश्वर प्रभु भोग-मोक्ष और मन की सम्पूर्ण कामनाओं को पूरे करने वाले भक्तवत्सल हैं ।४९।

त च गंगाजलेनैव स्नानपयिष्यति यो नरः।
राभेश्वरं च सद्भक्त्या स जीवन्मुक्त एव हि ।५०।
इह भुक्त्वाखिलान्भोगान्देवतादुर्ल्लभानपि ।
अतः प्राप्य परं ज्ञानं कैवल्यं मोक्षमाप्नुयात् ।५१।
घुश्मेश्वरावतारस्तु द्वादशः शंकरस्य हि ।
नानालीलाकरो घुश्मानन्ददो भक्तवत्सलः ।५२।
दक्षिणस्यां दिशि मुने देवशैलसमीपतः ।
आविर्बभूव सरसि घुश्माप्रियकरः प्रभु ५३।
सुदेह्यमारितं घुश्मापुत्रं साकल्यतो मुने ।
तुष्टस्तद्भक्तितः शम्भर्योऽरक्षद्भक्तवत्सलः ।५४।
तत्प्रार्थितः स वै शम्भुस्तडागे तत्र कामदः ।
ज्योतिर्लिङ्गस्वरूपेण तस्थौ घुश्मेश्वराभिधः ।५५।
तं दृष्ट्वा शिवलिंग तु समभ्यर्च्य भक्तितः ।
इह सर्वसुखं भुक्त्वा ततो मुक्तिं च विन्दति ।५६।

जो मनुष्य श्रीरामेश्वर महादेव को दृढ़ भक्ति की भावना से गंगाजल से स्नान कराता है वह निश्चय ही जीवन्मुक्त हो जाता है।५०। ऐसा पुरुष संसार में देव दुर्लभ परम सुख-सौभाग्यका उपभोगकर अत्यन्त ज्ञानकी प्राप्ति करता है और अन्त में उसका मोक्ष हो जाता है ।५१। भगवान् शिव का बारहवाँअवतार घुश्मेश्वर नाम वाला हुआहै। यहअवतार अपने अनन्यभक्तो के ऊपर अत्यन्त दया करने वाला हुआ है और इसने घुश्माको महान् आनन्द

का प्रदान किया है ।५२। हे मुनीश्वर ! दक्षिण दिशा में एक देवशैल है, वहाँ पर ही एक सरोवर के निकट महाप्रभु शिव प्रकट हुए हैं। जिन्होंने घुश्मा का प्रिय कार्य किया था ।५३। हे मुने ! भक्तों पर प्यार करने वाले भगवान् शङ्कर ने सुदेह्य नामक दैत्य के द्वारा मारे हुए घुश्मा के पुत्र के प्राणों की रक्षा भक्ति से सन्तुष्ट होकर की था ।५४। घुश्मा की प्रार्थना पर कामना देने वाले प्रभु शिव वहाँ एक सरोवर के समीप में ही घुश्मेश्वर नाम से ज्योतिर्लिङ्ग के स्वरूप में स्थित हो गये ।५५। इन ज्योतिर्लिङ्ग स्वरूप शिव के दर्शन एवं भक्ति समन्वित समर्चन से मनुष्य इहलौकिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्दोपभोग करते हुए आगे चलकर मोक्षपद की सद्गति का लाभ प्राप्त किया करता है ।५६।

इति ते हि समाख्याता ज्योतिर्लिङ्गावली मया ।
द्वादशप्रमिता दिव्या भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।५७।
एतां ज्योतिर्लिगकथां यः पठेच्छृणुयादपि ।
मुच्यते सर्वपापभ्यो भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ५८।
शतरुद्राभिधा चेयं वार्णिता सहिता मया ।
शतावतारः सत्कीर्तिः सर्वकामफलप्रदा ।५९।
इमां यः पठते नित्यं शृणुयाद्वा समाहितः ।
सर्वान्कामनवाप्नोति ततो मुक्तिं लभेद् ध्रुवम् ।६०।

हे मुनिराज ! मैंने तुम्हारे समक्ष में इन द्वादश संख्या वाले ज्योतिर्लिंगों का पूरा वर्णन कर दिया जिनके दर्शन स्पर्शन श्रवण और पठन से भुक्ति मुक्ति दोनों की प्राप्ति निस्सन्देह ही होती है ।५७। जो कोई मनुष्य संसार में इस ज्योतिर्लिग की कथा को सुनता व सुनाता है वह समस्त पापों से छुटकारा पाकर भोग मोक्ष पाता है ।५८। हे मुने ! मैंने अब यह शतरुद्र संहिता का वर्णन सुना दिया है जो कि शिव के सौ अवतारों की कीर्तिस्वरूप है और सब मनोरथों का पूरा करने वाली होती है ।५९। जो पुरुष पूर्णतया सावधान चित्त होकर इस शतरुद्र सहिता को पढ़ता अथवा श्रवण करता है वह अपनी समस्त कामनाओं की प्राप्ति कर निश्चय ही पीछे मुक्ति को प्राप्त करता है ।।६०।।

कोटिरुद्र संहिता

।। द्वादश ज्योतिर्लिंगों का माहात्म्य ।।

यो धत्ते निजमायया भुवनाकारं विकारोज्झितो
यस्याहुः करुणाकटाक्षविभवौ स्वर्गापवर्गाभिधौ ।
प्रत्यग्बोधसुखाद्वयं हृदि सदा पश्यन्ति यं योगिनः
तस्मै शैलसुताश्चितार्द्ध वपुषे शश्वन्नमस्तेजसे ।१।
कृपाललितवीक्षणं स्मितमनोज्ञवक्त्राम्बुजं—
शशांककलयोज्ज्वलं शमितघोरतापत्रयम् ।
करोतु किमपि स्फुरत्परमसौख्यसच्चिद्वपु—
र्धराधरसुताभुजोद्वलयितमहो मङ्गलम् ।२।
सम्यगुक्तं त्वया सूत लोकानां हितकाम्यया ।
शिवावतारमाहात्म्यं नानाख्यानसमन्वितम् ।३।
पुनश्च कथ्यतां तात शिवमहात्म्यमुत्तमम् ।
लिंगसम्बन्धिसुप्रीत्या धन्नस्त्व शैवसत्तमः ।४।
शृण्वन्तस्त्वन्मुखाम्भोजान्न तृप्तास्मो वय प्रभो ।
शैव यशोऽमृतं रम्यं तदेव पुनरुच्यताम् ।५।
पृथिव्यां यानि लिङ्गानि तीर्थे तीर्थे शुभानि हि ।
अन्यत्र वा स्थले यानि प्रसिद्धानि स्थितानि वै ।६।
तानि तानि च दिव्यानि लिङ्गामि परमेशितुः ।
व्यासशिष्य समाचक्ष्व लोकानां हितकाम्यया ।७।

समस्त प्रकार के विकारों से रहित, स्वकी भुवनमोहिनी माया से सब भुवनों को धारण करने वाले और जगदम्बा पार्वतीको अपने आधे अङ्ग में धारण करते हुए तेजमय स्वरूप वाले भगवान् शङ्करको सर्वदा प्रणाम करता हूँ जिनके करुणापूर्ण कटाक्षसे स्वर्ग तथा अपवर्गके सम्पूर्ण वैभव उनके भक्तों को प्राप्त हो जाया करते हैं और योगीजन जिनका पूर्ण बोध सुख सर्वदा अपने हृदय में देखा करते हैं ।१। आधिभौतिक आध्यात्मिक और आधिदैविक इन

तीनों तापों के संताप को शान्त कर देने वाले कृपा से परिपूर्ण सुन्दर दृष्टि-पात करने वाले, स्मित से मनोहर मुख कमल वाले, चन्द्रदेव की कला के परमोज्जवल स्वरूपयुक्त समस्त सुखों के दाता, स्फूर्तिमान्, सच्चिदानन्द स्वरूप तथा भवानीकी भुजाओं से अलिंगित भगवान् शङ्कर का वपु हमारा सर्वदा मंगल करे।२। ऋषिवों ने कहा-हे सूतजी ! आपने लोकों को भलाई के लिए बहुत ही अच्छी बात कहने की कृपा की है। अब यह प्रार्थना की है कि आप अनेक सुन्दर आख्यानों से पूर्ण भगवान् शिव के अवतारों का माहात्म्य हमको बताइये।३। हे तात ! आप भगवान् शिवके भक्तों में सर्व श्रेष्ठ है और परम धन्य हैं। भगवान् शङ्कर के लिंगस्वरूप से सम्बन्धित माहात्म्यका वर्णन विस्तृत रूप से करने की कृपा करें ॥४॥ हे प्रभो ! आपके मुखाम्बुज से विस्तृत शम्भु के यशो मृत का श्रवणों द्वारा पान करते हुए हमारे मनको तृप्ति नहीं हो रही है अतएव आपसे निवेदन है कि उसे पुनः सुनाने का अनुग्रह करें।५। इस भूमण्डल में प्रत्येक तीर्थ में जहाँ पर भी जितने शिवके शुभ लिंग स्थापित किये हैं तथा अन्य स्थलों में जितने विख्यात शिव लिंग विराजमान हैं उन समस्त परमेश महेश के दिव्य लगो का आपको पूर्ण ज्ञान है। हे व्यासजी के शिष्य ! आप सब लोकों के कल्याण की कामना से ही हमारे समक्ष में इस समय वर्णन करने का अनुग्रह करें।।६-७।।

साधु पृष्ठमृषिश्रेष्ठा लोकानां हितकाम्यया।
कथयामि भदत्स्नेहात्तानि संक्षेपतो द्विजाः।८।
सर्वेषां शिवलिंगानां मुने संख्या न विद्यते।
सर्वा लिङ्गममी भूमिः सर्वं लिङ्गमयं जगत्।९।
लिंगयुक्त नि तीर्थानि सर्वलिंगे प्रतिष्ठितम्।
सख्या न विद्यते तेषां तानि किञ्चिद् ब्रवीम्यहम्।१०।
यात्किंचिद् दृश्यते दृश्यं वर्ण्यते स्मर्यते च यत्।
तत्सर्वं शिवरूपं हि नान्यदस्तीति किञ्चन।११।
तथापि श्रूतां प्रीत्या कथयामि यथा श्रुतम्।
लिंगानि च ऋषिश्रेष्ठाः पृथिव्यां यानि तानि ह।१२।

पाताले चापि वर्धन्ते स्वर्गे चापि तथा भुवि ।
सर्वत्र तूज्यते शम्भुः सदेवासुरमानुषैः ।१३।
त्रिजगच्छम्भुना व्याप्तं सदेवासुरमानुषम् ।
अनुग्रहाय लोकानां लिङ्गरूपेण सत्तमाः ।१४।

श्री सूतजी ने कहा–हे मुनिश्रेष्ठ ! इस समय आप लोगों ने समस्त लोकों के हित की भावना लेकर अच्छा प्रश्न किया है हे ब्राह्मणो ! मुझे आप लोगों से बहुत ही स्नेह है अतः मैं सब कुछ सक्षिप्त रूप से आपके सामने वर्णन करता हूँ ।८। हे मुनीश्वर ! भगवान् शिव के समस्त लिंगों की संख्या बतला देना असम्भव है और उन्हें पूर्णतया बतला देने की सामर्थ्य किसी में नहीं हो सकती है क्योंकि सारा भूमण्डल एवं जगत् लिंगमय ही है ।९। समस्त तीर्थ लिंगमय हैं और सभी कुछ लिंग के द्वारा ही प्रतिष्ठित है तथा लिंग में ही स्थित है । उनकी संख्या वर्णनातीत है तथापि मैं दिव्य ज्योतिर्लिंगों का वर्णन करता हूँ ।१०। इस जगतीतल में जो कुछ भी दर्शनीय पदार्थ हैं तथा जिनका भी वर्णन किया जाता है और स्मरण किया जाता है वह सब भगवान् शङ्कर का ही स्वरूप है । इसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है ।११। हे श्रेष्ठ ऋषिवृन्द ! तो भी पृथ्वी तल में जितने दिव्य लिंग हैं उनका वर्णन अपने श्रुत के अनुसार मैं करता हूँ। आप प्रेमपूर्वक सुनो ।१२। भगवान् शङ्कर के ज्योतिर्लिंग पृथ्वी, स्वर्ग और पाताल में सर्वत्र विद्यमान हैं और वे देवे, असुर तथा मनुष्यों के द्वारा सभी स्थलों में पूजित एवं वन्दित होते हैं ।१३। हे ऋषिश्रेष्ठ ! देव, दैत्य और मानवों के सहित य त्रिभुवन महेश्वर से व्याप्त है और भगवान् शङ्कर संसार के कल्याण के लिये अनुग्रह करते हुए सर्वत्र लिंग स्वरूप में विराजमान रहते हैं ।१४।

अनुग्रहाय लोकानां लिङ्गानि च महेश्वरः ।
दधाति विविधान्यत्र तीर्थे चान्यस्थले तथा ।१५।
यत्र यत्र यदा शम्भुर्भुक्त्वा भक्तैश्च संस्मृतः ।
तत्र तत्रावतीर्याथ कार्यं कृत्वा स्थितस्तदा ।१६।
लोकानामुपकारार्थं स्वलिंगं चात्यकल्पयत् ।
तल्लिङ्गं पूजयित्वा तु सिद्धिं समधिगच्छति ।१७।

पृथिव्यां यानि लिङ्गानि तेषां संख्या न विद्यते ।
तथापि च प्रधानानि कथ्यते च मया द्विजाः ।१८।
प्रधानेषु च यानीह मुख्यानि प्रवदाम्यहम् ।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते मानवः क्षणात् ।१९।
ज्योतिर्लिंगानि यानीह मुख्यमुख्यानि सत्तम ।
तान्यहं कथयाम्यद्य श्रुत्वा पाप व्यपोहति ।२०।
सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैदे मल्लिकार्जुनम् ।
ऊज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम् ।२१।

भगवान् महेश्वर लोक कल्याणार्थ अनुग्रह करके समस्त तीर्थ स्थलों में विविध प्रकार के लिंगों का स्वरूप धारण करते हैं ।१५। जब जिस समय जहाँ जहाँ पर शिव भक्तों ने अपने अभीष्ट देव शिव का स्मरण किया है उसी समय वहाँ-वहाँ पर अवतार लेकर भक्त-कार्य पूर्ण करके महेश्वर विराजमान हो गये हैं ।१६। सांसारिक लोगों के उपकार करने के लिये महेश्वर ने अपना लिंग स्वरूप प्रकट कर दिया है । उसी लिंग प्रतिमा का समर्चन कर संसार में मनुष्य अनेकानेक सिद्धियों को प्राप्त किया करते हैं ।१७। हे द्विजवरो ! यद्यपि इस पृथ्वी तल पर विराजमान लिंग भी गणना करने के योग्य नहीं हैं तथापि मैं कतिपय प्रमुख लिंगों का वर्णन करता हूँ ।१८। इस भूमि मण्डल के प्रधान स्थलों में जहां-जहाँ पर भी मुख्य-मुख्य शिव की लिंग मूर्तियाँ विराजमान हैं मैं इस समय उन्हीं का वर्णन करना चाहता हूँ, जिनके अख्यानों का श्रवण कर मनुष्य उसी समय समस्त स्वविहित पापों से छुटकारा पा जाता है ।१९। हे सत्तम ! जितने भी मुख्य-मुख्य महेश्वर के ज्योतिर्लिंग हैं अब उनके ही विषय में कुछ वर्णन करता हूँ उसको सुनकर प्राणी पापों से विमुक्त हो जाता है ।२०। सौराष्ट्र में सोमनाथ, उज्जयिनी पुरी में महाकाल, श्री शैल में मल्लिकार्जुन और ओङ्कार में परमेश्वर ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थित हैं ।२१।

केदारं हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।२२।
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुकावने ।
सेतुबंधे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये ।२३।

द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।
सर्वपापविनिर्मुक्त सर्वसिद्धिफलं लभेत् ।२४।
यं यं काममपेक्ष पठिष्यन्ति नरोत्तमाः ।
प्राप्यंति कामं तं तं हि परत्रेह मुनीश्वरा ।२५।
ये निष्कामतया तानि पठिष्यन्ति शुभाशयाः ।
तेषां च जननीगर्भे वासो नैव भविष्यति ।२६।
एतेषां पूजनेनैव वर्णानां दुःखनाषनम् ।
इक लोमे परत्रापि मुक्तभर्वति निश्चितम् ।२७।
ग्राह्यमेषां च नैवेद्यं भाजनीयं प्रयत्नतः ।
तत्कर्तुः सर्वपापानि भस्मसाद्यान्ति वै क्षणात् ।२८।

हिमाचल पर केदारनाथ, डाकिनी में भीमशङ्कर, वाराणसी पुरी में विश्वनाथ और गौतमी नदी के तट पर त्र्यम्बकेश्वर नामक ज्योतिर्लिंग हैं। ।२२। चिताभूमि में वैद्यनाथ, सेतुबन्ध में रामेश्वरनाथ,दारुक वनमें नागेश और शिवालय में घुश्मेश्वर नाम वाम वाले शिवके ज्योतिर्लिंग सस्थितहैं२३ इन द्वादश शिव के नामों का जो प्रात कालमें उठते ही स्मरण करता हैं वह सब पापों से मुक्ति होकर समस्त सिद्धियाँ प्राप्त करताहै २४।हे मुनीश्वरो ! जो श्रेष्ठ मानव हृदयमें जिस-जिस मनोरथका उद्देश्य लेकर इन द्वादश शम्भु के शुभ नामों का पाठ एवं स्मरण करेंगे वे उन मनोरथों को इस लोक और परलोक में अवश्य ही प्राप्त कर लेंगे ।२५। जो मानव निष्काम भावनासे ही अपना कर्त्तव्य समझते हुए उपास्य देव श्री महादेव के इन बारह नामों का स्मरण करेंगे उन्हें फिर संसार में माता के गर्भ में आकर कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा ।२६। उपर्युक्त द्वादश ज्योतिर्लिगोंके अर्चन करने मात्रसे समस्त वर्णों के दुःख-दारिद्र्य का नाश होजाता है और इस लोकमें सुखोपभोग तथा पर लोक में मोक्ष मिलता है ।२७। इन ज्योतिर्लिंग स्वरूप शिव प्रतिमाओं पर चढ़ा हुआ नैवेद्य (मिठाई) ग्रहण करनी चाहिए और उसे सयत्न खालेना भी उचित है । ऐसा करने वालों के समस्त पाप उसी समय भस्मीभूत हो जाया करते हैं ।२८।

ज्योतिषां चैव लिंगानां ब्रह्मादिभिरलं द्विजाः ।
विशेषनः फलं वक्तुं शक्यते न नरैस्तथा ।२९।
एकं च पूजितं येन षण्मासं तन्निरन्तरम् ।
तस्य दुख न जायेत मातृकुक्षिसमुद्भवम् ।३०।
हीनयौनौ यदा जातो ज्योतिर्लिंग च पश्यति ।
तस्य जन्म भवेत्तत्र विमले सत्कुले पुनः ।३१।
सत्कुले जन्म संप्राप्य धनाढ्यो वेदपारगः ।
शुभकर्म तदा कृत्वा मुक्ति यात्नपायिनीम् ।३२।
म्लेच्छो वाप्यन्तजो वापि षण्णो वापि मुनीश्वराः ।
द्विजो भूत्वा भवेन्मुक्तस्तस्मात्तद्दर्शन चरेद् ।३३।
ज्योतिषां चैव लिंगानां किंचित्प्रोक्तं फलं मया ।
ज्योतिषां चोपलिगानि श्रूयन्तामृषिसत्तमाः ।३४।
सोमेश्वरस्य यल्लिगमन्तकेशमुदाहृतम् ।
मह्याः सागरसयोगे तल्लिगमुपलिगकम् ।३५।

हे द्विजवरो ! इन द्वादश ज्योतिर्लिंग का वन्दनार्चन द्वारा प्राप्त फल का यथातथ वर्णन करने की सामर्थ्य ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवताओं में भी नहीं है अन्य साधारण की तो बात ही क्या है ।।२९।। जो पुरुष निरन्तर नित्य ही छै मास तक किसी भी एक ज्योतिर्लिंग का पूजन करता है उसे फिर माता की कुक्षि में निवास करने की पीड़ा नहीं भोगनी पड़ती है ।।३०।। जो किसी निकृष्ट योनि में जन्म लेकर भी शिव की लिंगमयी प्रतिमा का दर्शन करता है तो उसके अगले जन्म में श्रेष्ठकुल प्राप्त हो जाता है ।। ३१ ।। इस तरह शुद्ध एवं श्रेष्ठ कुल में जन्म पाने के साथ धनाढ्य और वेद-शास्त्र का पारगामी विद्वान् भी हो जाता है जिससे श्रेष्ठ कर्म करके विनाश-विहीन विमुक्ति की प्राप्ति कर लेता है ।।०२।। हे मुनीश्वरो ! चाहे कोई म्लेच्छ हो अथवा अन्त्यज हो तथा नपुंसक हो–केसा भी कोई क्यों न हो, वह यदि शिवभक्त रोज शिव पूजन करता है तो दूसरे जन्म में द्विज होकर अवश्य ही मुक्त हो जाता है । अतएव महेश्वर के दर्शन हरएक को अवश्य ही करना चाहिए ।३३। हे श्रेष्ठ ऋषि-

गण ! तभी तक मैने आप लोगों के सामने शिव के ज्योतिर्लिंग का पूजन एवं दर्शन के फल का वर्णन किया है । अब मैं उनके उप-लिंगों के फल का वर्णन करता हूँ आप उसे श्रवण करें ।। ३४ ।। भूमि और समुद्र के संयोग में सोमेश्वर का उपलिंग अन्तकेश नाम से प्रथित है ।३५।

मल्लिकार्जुनसंभूतमुपलिंगमुदाहृतम् ।
रुद्रश्वेरमिति ख्यात भृगुकक्षे सुखावहम् ।३६।
महाकालभवं लिंग दुग्धेशमिति विश्रुतम् ।
नर्मदायां प्रसिद्धं तत्सर्वपापहरं स्मृतम् ।३७।
ॐ कारज च यल्लिङ्गं कर्दमेशमिति श्रुतम्।
प्रसिद्धं बिन्दुसरसि सर्वकामफलप्रदम् ।३८।
केदारेश्वरसंजातं भूतेशं यमुनातटे ।
महापापहरं प्रोक्तं पश्यतामर्चतां तथा ।३९।
भीमशङ्करसंभूतं भीमेश्वरमिति स्मृतम् ।
सह्याचले प्रसिद्धं तन्महाबलविवर्द्धनम् ।४०।
नागेश्वरसमुद्भूतं भूतेश्वरमुदाहृतम् ।
मल्लिकासरस्वतीतीरे दर्शनात्पापहारकम् ।४१।
रामेश्वरराच्च यज्जातं गुप्तेश्वरमिति स्मृतम् ।
घुश्मेशाच्चैव यज्जातं व्याघ्रेश्वरमिति स्मृतम् ।४२।
ज्योतिर्लिंगोपलिंगानि प्रोक्तानीह मया द्विजाः ।
दर्शनात्पापहारीणि सर्वकामप्रदानि च ।४३।
एतानि सुप्रधानानि मुख्यतां हि गतानि च ।
अन्यायि चापि मुख्यानि श्रूयतामृषिसत्तमाः ।४४।

भृगु कक्ष में में मल्लिकार्जुन से प्रकट होने वाला परमसुख का दाता रुद्रेश्वर नाम वाला उपलिंग कहा गया है ।३६। नर्मदा नदी के तट पर महाकाल ज्योतिर्लिंग से उत्पन्न हुआ दुग्धेश नाम वाला उपलिंग है जोकि समस्त पापराशि का हरण करने वाला बताया गया है ।३७।श्रीओङ्कार से समुत्पन्न कर्दमेश नामक एक उपलिंग है जो कि विन्दु सरोवर में विख्यात है और सब कामनाओं का देने वाला बताया गया है ।३८।श्रीसूर्य तनया यमुना

के तट पर केदारेश्वर ज्योतिर्लिंग से समुद्भुत होने वाला भूतेश नाम से विख्यात उपलिंग है जिसके दर्शन तथा पूजनार्चन करने से महापाप भी दूर हो जाया करते हैं।३९। भीम शंकर से समुत्पन्न भीमेश्वर नाम वाला उपलिंग है जो कि सह्य नामक पर्वत पर विख्यात है और बहुत भारी बल का प्रदान करने वाला है।४०। मल्लिका सरस्वती नदी के तट पर नागेश्वर ज्योतिर्लिंग से उद्भव प्राप्त करने वाला भूतेश्वर नामक शिव का उपलिंग है अिसके केवल दर्शन मात्र से ही पापों से छुटकारा हो जाता है।४१। श्री रामेश्वर भगवान् से उत्पन्न होने वाले घुश्मेश्वर तथा घुश्मेश शम्भु के ज्योतिर्लिंग से उत्पन्न व्याघ्रेश्वर उपलिंग है।४२। हे द्विजगणों ! अब यह मैंने आप लोगों के सामने ज्योतिर्लिंगों के समीपस्थ उपलिंगों का वर्णन किया है जिनके दर्शन का भी महान् पुण्य एवं फल होता है और समस्त पाप छूट करते हैं एवं सम्पूर्ण मनोरथ पूरे हो जाते हैं।४३। हे ऋषिश्रेष्ठो ! ये वर्णित सभी उपलिंग बहुत ही प्रसिद्ध हैं और मुख्य रूप से कहे गये हैं। इसके अनन्तर अब अन्य विख्यात लिंगों का वर्णन भी करता हूँ जिसे आप लोग श्रवण करेंगे।४४।

।। अन्यान्य शिव लिंगों का माहात्म्य ।।

गंगातीरे सुप्रसिद्धा काशी खलु विमुक्तिदा।
सा हि लिंगमयी ज्ञेया शिववासस्थली स्मृता।१।
लिंगं तत्रैव मुख्य च सम्प्रोक्तमविमुक्तकम्।
कृत्तिवासेश्वरः साक्षात्तत्तुल्यो मृद्धबालकः।२।
तिलभण्डेश्वरेवर दशाश्वमेध एव च।
गंगासागरसंयोगे संगमेश इति स्मृतः।३।
भूतेश्वरो यः संप्रोक्तो भक्तसर्वार्थवः सदा।
नारीश्वर इति ख्यातः कौशिक्यः स समीपगः।४।
वर्तते गण्डकीतीरे वटुकेश्वर एव सः।
पूरेश्वर इति ख्यातः कल्गुतीरे सुखप्रदः।५।

सिद्धनाथेश्वरश्चैव दर्शनात्सिद्धिदो नृणाम् ।
दूरेश्वर इति ख्यातः पत्तने चोत्तरे तथा ।६।
भृगेश्वरश्च नाम्ना वै वैद्यनाथस्तथैव च ।
जप्येश्वरस्तथा ख्यातो यो दधीचिरणस्थले ।७।

श्री सूत जी ने कहा—भागीरथी के परम पावन तट पर बसी हुई मुक्ति के प्रदान करने वाली अति विख्यात काशी नाम की नगरी है वह समस्त लिंगमयी तथा भगवान् विश्वनाथ के निवास करने की भूमि कही गई है । ।१। काशीपुरी में मुक्ति के प्रदान करने वाली भगवान् शिव की मुख्य प्रतिमा विराजमान है और कृत्तिवास शिव भी वहाँ पर स्थित हैं । वहाँ काशी में नित्य निवास करने वाला, चाहे वृद्ध हो, बालक हो, साक्षात् शिव के तुल्य ही हो जाया करता है ।२। वहाँ तिलभाण्डेश्वर तथा दशाश्वमेध नाम वाले भी शिव हैं। गंगा सागर के संगम में संगमेश नामक शिव विराजते हैं ।३। भूतेश्वर एवं नारीश्वर नामों से विख्यात होने वाले शिव कौशिकी नदी के समीप में विराजमान हैं जो अपने भक्तों को निरन्तर समस्त वस्तुओं को प्रदान करने वाले हैं ।४। गण्डकी नदी के तट पर बटुकेश्वर नाम वाले महादेव हैं और फल्गु नदी के किनारे पर सुख के दाता पूरेश्वर नाम वाले भगवान् शङ्कर हैं । उत्तर नगर में सिद्धनाथेश्वर शिव हैं जो दर्शन मात्र से ही मनुष्यों को सिद्धि देने वाले प्रसिद्ध हैं और वहाँ पर ही दूरेश्वर नामक भी शिव विराजमान हैं । ।५-६। दधीचि मुनि के युद्धस्थल में प्रसिद्ध होने वाले भृगेश्वर वैद्यनाथ तथा जप्येश्वर नामक शिवलिंग विराजमान है ।७।

गोपेश्वरः समाख्तो रगेश्वर इति स्मृतः ।
वामेश्वरश्च नागेशः कामेशो विमलेश्वरः ।८।
व्यासेश्वरश्च विख्यातः सुकेशश्च तथैव हि ।
भाण्डेश्वरश्च विख्यातो हुँकारेशस्तथैव च ।९।
सुरोचनश्च विख्यातो भूतेश्वर इति स्वयम् ।
संगमेशस्तथा प्रोक्तो महापातकनाशनः ।१०।
ततश्च तारकातीरे कुमारेश्वर एव च ।

सिद्धेश्वरश्च विख्यातः सेनेशश्च तथा स्मृतः ।११।
रामेश्वर इति प्रोक्तो कुंभेशश्च परो मतः ।
नन्दीश्वरश्च पुजेशः पूर्णायां पूर्णकस्तथा ।१२।
ब्रह्मेश्वरः प्रयागे च ब्रह्मणा स्थापितः पुरा ।
दशाश्वमेधतीर्थे हि चतुर्वर्गफलप्रदः ।१३।
तथा रामेश्वरस्तत्र सर्वापद्विनिवारकः ।
भारद्वाजेश्वरश्चैव ब्रह्मवर्चः प्रवर्द्धकः ।१४।

वहाँ पर गोपेश्वर, रंगेश्वर, वामेश्वर, नागेश, कामेश और विमलेश्वर नाम वाली शिव की मूर्तियाँ स्थित हैं ।८। इनके अतिरिक्त व्यासेश्वर, सुकेश, माण्डेश्वर, हुँकारेश नाम की प्रतिमाएँ भी है ।। ९ ।। और भी सुरोचन, भूतेश्वर, तथा संगमेश नाम से परम विख्यात भगवान् शम्भु के ज्योतिर्लिंग हैं जिनके दर्शनार्चन से मनुष्यों के पापों का क्षय हो जाता है ।।१०।। तप्तका नाम की नदी के तट पर शिव की सिद्धेश्वर, कुमारेश्वर और सेनेश नाम वाली प्रसिद्ध प्रतिमाऐं हैं ।। ११ ।। पूर्णा में रामेश्वर, कुम्भेश, नन्दीश्वर; पुंजेश और पूर्णक नाम वाले भगवान् शिव की मूर्त्तियाँ हैं ।।१२।। प्रयाग में प्राचीन समय में ब्रह्माजी के द्वारा संस्थापित दशाश्वमेध तीर्थ पर ब्रह्मेश्वर नामक शिव कर्म अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों फलों को देने वाले विराजमान हैं ।।१३।। वहाँ पर सोमेश्वर नामधारी शिव समस्त आपत्तियों के हटा देने वाले हैं और भारद्वाजेश्वर ब्रह्मतेज के प्रदान करने वाले हैं ।।१४।।

शूलटकेश्वरः साक्षात्कामनाप्रद ईरितः ।
माधवेशश्च तत्रैव भक्तरक्षाविधायकः ।१५।
नागेशाख्यः प्रसिद्धो हि साकेतनगरे द्विजाः ।
सूर्यवंशोद्भवानां च विशेषेण सुखप्रदः ।१६।
पुरुषोत्तमपुर्यां तु भुवनेशः सुसिद्धिदः ।
लोकेशश्च महालिंगः सर्वानन्दप्रदायकः ।१७।
कामेश्वरः शंभुलिंगो गणेशः परशुद्धिकृत् ।
शक्रेश्वरः शुक्रसिद्धो लोकानां हितकाम्यया ।१८।

तथा वटेश्वरः ख्यातः सर्वकामफलप्रदः ।
सिंधुतीरे कपालेशो वक्त्रेशः सर्वपापहा ।१९।
धौतपापेश्वरः साक्षादशेन परमेश्वरः ।
भीमेश्वर इति प्रोक्तः सूर्येश्वर इति स्मृतः ।२०।
नन्देश्वरश्च विज्ञेयो ज्ञानदो लोकपूजितः ।
नाकेश्वरो महापुण्यस्तथा रामेश्वरः स्मृतः ।२१।

सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले शूलटकेश्वर महादेव हैं तथा भगवान् माधवेश्वर अपने भक्तों की रक्षा करने वाले विराजमान हैं ।१५। हे विप्रवृन्द ! अयोध्यापुरी में नागेश नामक परम प्रसिद्ध शिव हैं जो सूर्य वंशमें उत्पन्न होने वाले मनुष्यों को विशेष रूपसे सुख-सौभाग्य प्रदानकिय करते हैं ।१६। पुरुषोत्तमपुरी में श्री भुवनेश शिव की प्रतिमा बहुत प्रसिद्ध है और वहाँ लोकेश नाम वाले महालिंग मनुष्योंको पूर्ण आनन्द देने वाले हैं ।१७। भगवान् शम्भु की कमेश्वर नामक मूर्ति ज्योतिर्लिंग के रूप में है तथा गंगेश शुद्धि करने वाले और शुक्रेश्वर एवं शुक्र सिद्ध भगवान्शिव लोकों की हित सम्पादन करने की इच्छा से वहाँ स्थापित हुए हैं ।।१८।। भगवान् वटेश्वर नामक परम प्रसिद्ध शिव समस्त कामनाओंके फलको प्रदान करने वालेहैं तथा सिन्धु नदीके तट पर श्रीकपालेश्वर और वक्त्रेश समस्त पापों का हरण करने वाले हैं ।१९। साक्षात् शिव के स्वरूप वाले वहाँ धौत पापेश्वर, भीमेश्वर और सूर्येश्वर नाम से प्रसिद्ध प्रतिमाएं विराजमान हैं ।।२०।। समस्त संसार में पूजित नन्देश्वर शिव ज्ञान के प्रकान करने वाले-नमस्कार महान् पुण्य के प्रदाता तथा रामेश्वर भगवान् महान् पुण्य के फलों के देने वाले स्थित हैं ।। २१ ।।

विमलेश्वरनामा वैकंटकेश्वर एव च ।
पूर्णसागरसंयोगे धर्तुकेशस्तथैव च ।२२।
चन्द्रेश्वरश्च विज्ञेयश्चन्द्रकान्तिफलप्रदः ।
सर्वकामप्रदश्चैव सिद्धेश्वर इति स्मृतः ।२३।
बिल्वेश्वरश्च विख्यातश्चान्धकेशस्तथैव च ।
यत्र वा अन्धको दैत्यः शङ्करेण हतः पुरा ।२४।

अयं स्वरूपमशेन धृत्वा शंभुः पुनः स्थितः ।
शरणेश्वरविख्यातो लोनांक सुखदः सदा ।२५।
कर्दमेशः परः प्रोक्तः कोटिशश्चः बुंदाचले ।
अचलेशश्च विख्यातो लोकानां सुखदः सदा ।२६।
नागेश्वरवस्तु कौशिक्यास्तीरे तिष्ठति नित्यशः ।
अन्तेश्वरसंज्ञश्च कल्याणशुभभाजनः ।२७।
योगेश्वरश्च विख्यातो वैद्यनाथेश्वरस्तथा ।
कोटोश्वरश्च विज्ञेयः सप्तेश्वर इति स्मृतः ।२८।
भद्रेश्वरश्च विख्यातो भद्रनामा हरः स्वयम् ।
चण्डीश्वरस्तथा प्रोक्तः संगमेश्वर एव च ।२९।

पूण सागर के संयोग के निकट में विमलेश्वर, कंटकेश्वर और धर्तुकेश शिव के ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं ।। २२ ।। चन्द्रमा के समान कान्ति प्रदान करने वाले चन्द्रेश्वर और सब मनोरथ दाता सिद्धेश्वर शिव बताये गये हैं ।। २३ ।। जिस स्थान पर प्राचीन काल में भगवान् शिव के अन्धक नाम वाले दैत्य का वध किया था वहाँ अन्धकेश तथा बिल्वेश्वर नाम से प्रथित हैं ।।२४।। भगवान् शम्भु ने अपने अंश से यही स्वरूप धारण करके यहाँ पर शरणेश्वर नाम से प्रसिद्ध होकर अपनी स्थिति की है जो संसार के प्राणियों को परम सुख प्रदान करने वाले हुए हैं ।।२५।। अर्बुद (आबू) नामक पर्वत पर सदा मनुष्यों को सुख प्रदान करने वाले कर्दमेश कोटीश और अचलेश नाम से भगवान् शिव विराजमान हैं ।। २६ ।। कौशिकी नामक नदी के तट पर नागेश्वर तथा अनन्तेश्वर नाम से विख्यात शिव प्रतिमाऐं कल्याण करने वाली हैं । ।।२७।। इनके अतिरिक्त योगेश्वर, वैद्यनाथ, सप्तेश्वर और कोटिश्वर नाम वाले शिव परम विख्यात हैं ।। २८।। भद्र नामक साक्षात् शिव भद्रेश्वर इस नाम से एवं चण्डीश्वर और संगमेश्वर नामों से विख्यात हैं ।।२९।।

।उत्तर दिशा के चन्द्रभाल पशुपति शिवलिङ्ग माहात्म्य।

शृणुतादरतो विप्रा औत्तराणां विशेषतः ।
नाहात्म्य शिवलिंगानां प्रवदामि समासतः २०।

गोकर्णं क्षेत्रमपरं महापातकनाशनम् ।
महावनं च तत्रास्ति पवित्रमतिविस्तरम् ।२।
तत्रास्ति चन्द्रभालाख्यं शिवलिंगमनुत्तमम् ।
रावणेन समानीतं सद्भक्त्या सर्वसिजुदम् ।३।
तस्य तत्र स्थितिर्वैद्यनाथस्येव मुनिश्वराः ।
सर्वलोकहितार्थाय करुणासागरस्य च ।४।
स्नान कृत्वा तु गोकर्णे चन्द्रभालं समर्च्य च ।
शिवलोकमवाप्नाति सत्यं सत्यं न संशयः ।५।
चन्द्रभालस्य लिंगस्य महिमा परमाऽद्भुता ।
न शक्या वर्णितुं व्यासाद् भक्तिस्नेहतरस्य हि ।६।
चन्द्रभालमहादेवलिंगस्य महिमा महान् ।
यथाकथंचित्संप्रोक्ता परलिंगस्य वै शृणु ।७।

श्री सूतजी ने कहा–हे विप्रवृन्द ! अब मैं आपके सामने उत्तर दिशा में विराजमान शिव के ज्योतिर्लिगों के माहात्म्य का वर्णन संक्षेपसे करता हूँ उसे आप सभी परम आदर तथा प्रेम से श्रवण करो ॥१॥ महान् पातकों का नाश करने वाला अन्य गोकर्णनाम वाला क्षेत्रहैऔर वहाँ अत्यन्त विशाल विस्तृत तथा परम पवित्र वन है ॥२॥ उस स्थान पर चन्द्रभाल नाम से विख्यात शिवका एकश्रेष्ठ ज्योतिर्लिग रावण के द्वारा भक्तिसे सहित स्थापित किया हुआ है जो समस्त सिद्धियों का प्रदान करने वाला है ।३। हे मुनिश्वर वृन्द ! समस्त संसार की भलाई के लिये दया के सागर भगवान चन्द्रभाल शिव के लिंग की वैद्यनाथ के तुल्य ही स्थिति है ।४। यह सर्वथा पूर्ण सत्य हैऔर नितान्त निस्सन्देह है कि गोकर्णमें स्नानकर चन्द्रभाल शिवलिंग का अर्चन-वदन करने वाले पुरुषों को शिवलोक की प्राप्ति हो जाती है ॥५॥ अत्यन्त सक्त-वत्सल चन्द्रभाल शङ्करकीमहिमा परम अद्भुतहैजिसका यथार्थ वर्णन करने में स्वयं व्यास मुनि भी असमर्थ होते है ।६। यद्यपि चन्द्रभाल शिव की महिमा बहुत ही बड़ी है तो भी मैं अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसका कुछ वर्णन करता हूँ आप लोग उसको श्रवण करें ॥७॥

दाधीचं शिवलिंग तु मिश्रर्षिवरतीर्थके ।
दधीचिना सुनीशेन सुप्रीत्या च प्रतिष्ठितम् ।८।
तत्र गत्वा च तत्तीर्थे स्नात्वा सम्यग्विधानतः ।
शिवलिंग समर्चेद्व दाधीश्वरमादरात् ।९।
दधीचमूर्तिस्तत्रैव समर्च्या विधिपूर्वकम् ।
शिवप्रीत्यर्थमेवाशु तीर्थयात्राफलार्थिभिः ।१०।
एवं कृते मुनिश्रेष्ठाः कृतकृत्यो भवेन्नरः ।
इह सर्वसुखं भुक्त्वा परत्र पतिम प्नुयात् ।११।
नैमिषारण्यतीर्थे तु निखिलर्षिप्रतिष्ठितमे ।
ऋषिश्वरमिति ख्यातं शिवलिंग सुखप्रदम् ।१२।
तद्दर्शनात्पूजनाच्च जनानां पापिनामपि ।
भुश्रिमुक्तिश्व तेषां तु परत्रेह मुनीश्वराः ।१३।
हत्याहरणतीर्थे तु शिवलिंगमघापहम्
पूजनीयं विशेषेण हत्याकोटिविनाशनम् ।१४।

मिश्र (मिश्र ऋषिनामक तीर्थ पर दाधीच नाम वाला शिव का लिंग बिराजमान है जिसको दाधीच मुनि ने परम प्रीति एवं भक्ति के साथ वहाँ स्थापित किया था ।८। वहाँ पहूँच कर सविधि स्नानादि करने के पश्चात् दाधीकेश्वर शिव की अर्चना करनी चाहिए ।९। अतिशीघ्र तीर्थ-यात्रा के फल प्राप्त करनेकी इच्छा रखने वालोंको भगवान् शिवके प्रसन्न करनेके लिए दाधीच ऋषि की संस्थापित प्रतिमा का विधिपूर्वक पूजन करमा आवश्यकहै ।१०। हे श्रेष्ठ मुनिय ! इस रीति से शिवार्चन करने से मनुष्य इस लोक में कृत-कृत्य होकर अन्त समयमें परलोककी सद्गतिको प्राप्त होजाया करता है ।११। नैमिषारण्य की पवित्र तपो भूमि में वहाँ के तपोनिष्ठ ऋषिगण के द्वारा संस्थापित ऋषीश्वर नामधारी शिव का ज्योतिर्लिंग है, जो मनुष्योंको सदा सुख प्रदान किया करते हैं ॥१२॥ हे मुनिवृन्द ! भगवान् ऋषीश्वर के दर्शन से पापात्मा मनुष्यों का भी उद्धार हो जाता है और वे भी अपने समस्त पाप राशिसे उन्मुक्त होते हुए इस लोकमें भुक्ति और परलोकमें मुक्ति

की प्राप्ति प्राप्त कर लिया करते हैं ।। १३ ।। हत्याहरण नामक तीर्थ में सम्पूर्ण पापों के नाश करने वाले और खासतौर से करोड़ों हत्याओं के विनाशक परम पूज्य का लिङ्ग विराजमान है ।।१४।।

देवप्रयागतीर्थे तु ललितेश्वरनामकम् ।
शिवलिंगं सदा पूज्यं नरैः सर्वाधनाशनम् ।१५।
नयपालाख्यपुर्य्यां तु प्रसिद्धायां महीतले ।
लिंगं पशुपतीशाख्यं सर्वकामफलप्रदम् ।१६।
शिरोभागस्वरूपेण शिवलिंग तदस्ति हि ।
तत्कथां वर्णयिष्यामि केदारेश्वरवर्णने ।१७।
तदारान्मुक्तिनाथाख्यं शिवलिंगं महाद्भुतम् ।
दर्शनादर्चनात्तस्य भुक्तिर्मुक्तिश्च लभ्यते ।१८।
इति वश्च समाख्यातं लिङ्गवर्णनमुत्तमम् ।
चतुर्दिक्षु मुनिश्रेष्ठाः किमन्यच्छ्रोतुमिच्छथ ।१९।

देवप्रय'ग नामक तीर्थ के स्थान में सब पापों का क्षय करने वाले ललितेश्वर नाम वाले शिव का सब पुरुषों को पूजन अवश्य ही करना चाहिए ।१५। परम विख्यात नयपालपुरी में अर्थात् नैपाल में पशुपतीश्वर नाम वाले अति प्रसिद्ध तथा समस्त मनोरथों की पूर्ति करने वाले ज्योतिर्लिङ्ग विराजमान हैं ।।१६।। यह शिव का लिंग शिर के भाग के स्वरूप में ही संस्थित है । इनकी कथा का वर्णन मैं केदारेश्वर के इतिहास में बतलाऊँगा ।। १७ ।। इनके समीप में ही मुक्तिनाथ वाले परम अद्भुत शिव का लिंग है जो दर्शन देकर एवं पूजित होकर भुक्ति-मुक्ति दोनों को प्रदान किया करते हैं ।।१८।। हे श्रेष्ठ मुनिगण ! इस प्रकार से चारों दिशाओं में विराजमान भगवान् शिव हैं । अब क्या श्रवण करना चाहते हो ? ।।१९।।

।। विष्णु द्वारा शिव सहस्त्र नाम का कीर्तन ।।

श्रूयतां भो ऋषिश्रेष्ठा येन तुष्टो महेश्वरः ।
तदहं कथयाम्यद्य शव नामसहस्त्रकम् ।१।

शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्पलोचनः ।
अर्थिगम्यः सदाचारः सर्वः शंभुर्महेश्वरः ।२।
चन्द्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः ।
वेदान्तसारसंदोहः कपाली नीललोहितः ।३।

श्री सूतजी ने कहा—हे श्रेष्ठ ऋषि वृन्द ! जैसा हमने सुना है वही अब बतलाते हैं । आप लोग इसका श्रवण ध्यानपूर्वक करें । विष्णु भगवान् की प्रार्थना से श्री शिव जिससे परम सन्तुष्ट हुए थे वह परम पवित्र सहस्रनाम मैं आपको सुनाता हूँ ।।१।। भगवान् विष्णु ने कहा—"शिवः"—यह भगवान् शङ्कर का नाम त्रिगुण से रहित परम मङ्गल वाचक होकर मङ्गल करने वाला है । शिव का "हर" यह नाम सृष्टि के अन्त में सब का संहार करने के कारण ही से पड़ा है । "मृड"—यह सुख का प्रदान करने से शिव का नाम पड़ गया है । "रुद्रः"—यह शिव का पवित्र नाम प्रजा को अन्त समय में सहार करते हुए रुलाने से हुआ है । अथवा समस्त दुःखों को दूर भगा देने से रुद्र नाम पड़ गया है । या दुष्टों को दुखों के दायक होने से रुद्र कहे जाते हैं । "पुष्कर"—यह पुष्टि करने से शिव का नाम हुआ है । 'पुष्पलोचनः"—यह नाम पुष्प अर्थात् कमल के समान सुन्दर नेत्र वाले होने से हुआ है । "अर्थिगम्यः"—यह शिव का शुभ नाम भक्तों को स्वर्ग-मोक्षादि की कामना पूरी करने के कारण हुआ है । "सदाचारः"—यह नाम सत्पुरुषों के आचरण रखने वाले होने से हुआ है । "शर्व"—यह शिव का नाम समस्त प्रजा के अन्त करने से हुआ है । "शम्भुः"-यह शिव का शुभ नाम भक्तों को सुख देने से हुआ है । 'महेश्वर'-यह नाम अर्थात् परमेश्वर 'यः परः स महेश्वरः'—इस श्रुति वचन के अनुसार जो सबसे ऊपर है वह महेश्वर होता है सबसे बड़े स्वामी होने के कारण ही हुआ है ।।२।। भगवान् शिव का "चन्द्रापीड"—यह शुभ नाम अपने मस्तक में चन्द्रमा धारण करने के कारण से हुआ है । "चन्द्रमौलि"-यह नाम अपने मस्तक का चन्द्रमाभूषण बनाने के कारण हुआ है । 'विश्वम्:-यह नाम शिवको परब्रह्म स्वरूप बतलाता है । "विश्वम्भरेश्वरः"-यह नाम संसार और समस्त देवों के स्वामी होने के कारण हुआ है । 'वेदान्त सार

सन्दीहः"—यह नाम वेदान्त शास्त्र के पूर्ण रूप से ज्ञाता होने से पड़ा है। "कपली" कपाल धारण करने से तथा 'नील लोहित'—यह नीले और लाल रंग वाली जटा धारण करने से नाम हुए हैं ।।३।।

ध्यानाधरोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्त्ता गणेश्वरः ।
शष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गः सगंसाधनः ।४।
ज्ञानगम्यो दृढप्रजो देवदेवस्त्रिलोचनः ।
वामदेवो महादेवो पटुः परिवृढ़ो दृढः ।५।
विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः सुरसत्तमः ।
सर्वप्रमाणसवादी वृषाको वृषवाहनः ।६।

'ध्यानाधारः'—यह नाम योगियों के ध्यान का आधार बनने से हुआ है। "अपरिच्छेद्य"—यह नाम देश और काल से परिच्छिन्न न होने के कारण शिव का हुआ है। 'गौरीभर्त्ता"—यह पार्वती के पति होने से और प्रमथादि गणों के नियन्त्रण करने वाले होने से "गणेश्वर"—यह नाम हुआ है। आकाश आदि आठ मूर्तियों में स्थिति रखने के कारण शिव का "अष्ट मूर्ति" नाम हुआ है। समस्त जगत् ही मूर्ति स्वरूप होने से 'विश्वमूर्ति' नाम है। "त्रिवर्ग स्वर्गसाधनः"—यह शिव का शुभ नाम धर्म-अर्थ और काम एवं स्वर्ग के अचिन्त्य सुख के देने वाले होने के कारण हुआ है ।।४।। "ज्ञान गम्य"—यह नाम ज्ञान मात्र से ही वेदान्त के अर्थ जानने योग्य होने के कारण शिव का है। "दृढ प्रज्ञः"—यह नाम सर्वदा ज्ञान से युक्त-"देवदेवः"—यह देवों को भी कर देने वाले देवता अथवा शक्ति प्रदान कर उनको पूर्ण प्रकाश तथा आनन्द देने वाले—"त्रिलोचन"—तीन नेत्रों के धारण करने वाले अथवा तीन गुण तीन लोक और तीन वेदों के ज्ञान से युक्त विम्बा अकार उकार और मकार ओम् ये तीन अक्षर के नेत्र वाले यद्वा शास्त्र आचार्य और ध्यान त्रिदर्शन इन साधन स्वरूपी तीन नेत्रों वाले होने से यह नाम पड़ा है। महाभारत ग्रन्थ की टीका के रचयिता नीलकण्ठ ने भी वही इसका अर्थ लिखा है। 'वामदेव"—यह नाम शिव का इसलिये हुआ है कि ये दुरात्माओं के मद को निकलवा देने वाले हैं अथवा लोकोत्तर एवं सुन्दर देवता हैं किम्बा कर्म फलों के विभाजन

करने के कारण सुन्दर देवता हैं "महादेव" इसका अर्थ ब्रह्मादि देवों के भी वन्दनीय बड़े देव हैं। "पटु" यह नाम दुःखों के नाश करने वाले अथवा अपने भक्तवर्ग के कल्याण करने में परम कुशल होने से हुआ है। "परिवृढ" जगत् के प्रभु—दृढ़—महाबलवान्—होने के कारण ये नाम हुए हैं ॥५॥ 'विश्वरूप' समस्त जगत्स्वरूप—'विरूपाक्ष' विषम नेत्र वाले—'वागीश' वेद वाणी के स्वामी—'शुचि सत्तम' तीनों माया के गुणों से रहित होने के कारण परम विशुद्ध—सर्व प्रमाण संवादी'—वेदादि के समस्त प्रमाणों के वेत्ता—'वृषाङ्क' वृष के चिन्ह को धारण करने अथवा धर्मयुद्ध और 'वृषवाहन नन्दीश्वर नामक वृष के वाहन वाले होने से ये सब शिव के नाम हुए हैं ॥६॥

ईशपिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरन्तनः ।
तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्माण्डहृज्जटी । ७
कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणतात्मक' ।
उन्नध्रः पुरुषो जुष्यो दुर्धासाः पुरशासनः ॥८
दिव्यायुधः स्कन्दगुरुः परमेष्ठी परात्परः ।
अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिजाधवः ॥९

'ईश'—सम्पूर्ण जगत् के स्वामी—'पिनाकी' पिनाक नाम वाले धनुष को धारण करने वाले—'खट्वांग' खाट के एक अंग को अपना आयुध बनाने वाले—"चित्र वेष" समय पर कार्य के अनुकूल अनेक वेषों के धारण करने वाले—'चिरन्तन' तीनों कालों से बाधा न पाने वाले अर्थात् परम प्राचीन—'तमोहर' अज्ञान के अन्धकार को हरण करने वाले अर्थात् अविद्या नाशक—'महायोगी' यम-नियम प्राणायामादि योग के आठों अंगों के तत्व ज्ञाता—'गोप्ता' सर्वप्रकाश से रक्षा करने वाले—'ब्रह्मा' जगत् में सभी कुछ की उत्पत्ति करने वाले और महान् समस्त गुणगणों से परिपूर्ण होने से उक्त सभी नाम भगवान् शिव के हुए हैं (५०) 'धूर्जटि'—सारभूत जटाओं वाले अथवा गंगा को जटाजूट में धारण करने वाले हैं ॥७॥ 'काल-कलः' अर्थात् मृत्यु और यम के काल अर्थात् संख्या करने वाले—'कृत्तिवासा'

अर्थात व्याघ्र चर्मके वस्त्र धारण करने वाले शिव हैं। "पिनाक हस्त, कृत्ति-वासः" यह श्रुति का भी वचन आता है अर्थात शिव पिनाक हाथ में धारण करने वाले तथा चर्म वस्त्र वाले हैं। 'सुभग'—सुन्दर स्वरूप वाले अथवा अत्यन्त ऐश्वर्यधारी --'प्रणवात्मक' ओंकर के स्वरूप धारण करने वाले—यहां "ओमित्येकाक्षर ब्रह्म" यह श्रुति भी यही बतलाती है।'उन्नध्र'अर्थात् पापात्मा पुरुषों को पाश से बांधने वाले 'पुरुषः—यह शिव का नाम इसलिए हुआ है कि शिव सब के शरीर में व्याप्त है अथवा अन्तर्यामी रूप से शयन करते हैं, अथवा सब प्रकार से परिपूर्ण होने से भी शिव का नाम पुरुष है। 'जुष्य सबके मन वचन और कर्म के द्वारा सेवा करके के योग्य हैं—,दुर्वासा' यह नाम वल्कलादि के वस्त्रधारण करने से हुआ है अथवा दुर्वासा नाम अत्रि के यहाँ पुरुष रूप से अवतार होने वाले होने से नाम है। 'पुरुशासन' त्रिपुर नामक असुर के सहारकर्त्ता हैं। (६०) 'दिव्यायुध' पिनाक प्रभृति अत्युत्तम आयुधों के धरण करने वाले हैं। 'स्वन्द गुरु' अर्थात् षडानन कार्त्तिकेय के पिता हैं। 'परमेष्ठी' अपनी अनन्त गुणमयी महिमा से युक्त और आकाश में स्थित होने से शिव के नाम हुए हैं।परात्पर' अर्थात् अव्यक्त, पर से भी परे हैं 'अनादि मध्य निधनः' अर्थात् देश और काल से भी अपरिछिन्न हैं। 'गरीश' अर्थात् मेरु आदि समस्त पर्वतों के स्वामी हैं। 'गिरिजाधवः' अर्थात् शिव हिमाचल की पुत्री पार्वती के स्वामी हैं ॥८॥९॥

कुवेरबन्धुः श्रीकण्ठो योकवणोत्तमो मृदुः।
समाधिवेद्यः कोदडी नीलकंठः परश्वधी ॥१०
विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः।
धर्माध्यक्षः क्षमाक्षेत्र भगवाग्भमनेगभित् ॥११
उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तः परंतपः।
दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः ॥१२

'कुबेरबन्धु' अर्थात् यक्षाधिपति कुबेर के भाई हैं। 'श्रीकण्ठ' अर्थात् अपने कण्ठ में सुषमा किम्बा वेद को रखने वाले हैं। यहाँ इसे शिव के शुभ नाम की पुष्टि—'ऋचः सामानि यजु ऋषि सा हि श्रीरमृतास तास' वह

श्रुति के वचन से होती है। 'लोक वर्णोत्तम' अर्थात् शिव के भास्वद् रूप को लोक द्वारा देखा जाता है अथवा लोक में ब्राह्मणादि से भी श्रेष्ठ है (७०) 'मृदु' अर्थात् भक्तों के लिये सौम्य रूप वाले हैं। 'समाधि वेद्य' अर्थात् धनुर्धारी हैं। 'नीलकण्ठ' अर्थात् प्राणीमात्र के त्राण के लिये महाविष के पान करने से नीले कण्ठ वाले हैं। 'परश्वधी' अर्थात् अपना सर्वस्व धन देकर भक्तों को सुख पहुचाने वाले हैं, किम्बा भक्तों में अपनी जैसी बुद्धि प्रदान करने वाले हैं। (८०) 'विशालाक्ष' बड़े नेत्रों से युक्त-मृगव्याध—मृग पशु के समान जीव के संहार करने के लिये व्याध के सदृश अथवा अर्जुन पर कृपा करने के लिये व्याध का स्वरूप रखने वाले सुरेश—अर्थात् समस्त देवों के स्वामी। 'सूर्य तापन'—अर्थात् दुजनों को सूर्य की भाँति ताप प्रदान करने वाले किम्वा सूर्य को भी तपा कर भय देने वाले हैं। इस बात का पूर्ण पोषण करने वाला—भीषोदेति सूर्य' यह श्रुति का वचन भी है। धर्माध्यक्ष—अर्थात् वर्ण और आश्रम प्रभृति धर्मों के स्थान हैं (८०) 'क्षमा क्षेत्रम्'—अर्थात् क्षमा के उद्भव के स्थान हैं। 'भगवान्' अर्थात् भग नाम छै प्रकार के ऐश्वर्यों से संयुक्त हैं। भगनेत्रभित्—अर्थात् शिव दक्ष के यज्ञ में भग नामक देवता के नेत्रों का भेदन करने वाले हैं। उग्रः—अर्थात् महाप्रलय के समय में समस्त सृष्टि का संहार करने के कारण शिव उग्र रूप वाले हैं। पशुपति'—पशु—जीवों के पालन कर्त्ता शिव का स्वरूप होने से उनका यह नाम हुआ है। 'तार्क्ष्यः' अर्थात् कश्यप का स्वरूप हैं। 'प्रिय भक्तः'—अर्थात् अपने भक्तों के ऊपर अत्यन्त प्यार करने से उनके परम प्रिय शिव हैं। 'परन्तपः'—अर्थात् शत्रुओं को ताप देने वाले हैं। 'जहाँ प्रिय-माह ऐसा पाठ है वहाँ प्रिय भाषण करने वाले हैं। 'दाता—इसका मतलव है कि शिव भक्तों को ऐश्वर्य के देने वाले हैं। दयाकरः—भक्तजनों के उद्धार करने के लिये पूर्ण अनुग्रह करने वाले हैं 'दक्षः'—इस जगत् के स्वरूप में वृद्धि पाकर समस्त कर्म-कलाप के करने में कुशल हैं। कपर्दी अर्थात् संन्यासी किम्बा कपर्दी मुनीकृत भिक्षु सूत्रके जानने वाले अथवा कपर्दी के रूप से प्रकट होकर ज्ञान का दान करने वाले शिव हैं काम शासन'—अर्थात् कामदेव को भस्म करने वाले हैं॥ १२॥

श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः ।
लोककर्त्ता मृगपतिर्महाकर्त्ता महौषधिः ॥१३
सोमपोऽमृतपः सौम्यो महातेजा महाद्युतिः ।
तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः ॥१४
उत्तमो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमतरः सुखी ॥१५

"श्मशाननिलयः"—अर्थात् श्मशान भूमि में अपना निवास बनाने वाले शिव होते हैं। "सूक्ष्मः"—इनका अर्थ है शिव शब्दादि के स्थूल कारण से रहित हैं। यहाँ श्रुति का वचन 'सर्वगतं सुसूक्ष्यम्'-यही बात पुष्टकर देता है। 'श्मशानस्थः'अर्थात् श्मशानमें ठहरने वाले हैं। 'महेश्वर'-सबसे बड़े स्वामी 'लोककर्त्ता'--इस विश्व के बनाने वाले 'मृगपतिः' अर्थात् पशुओं की रक्षा करने वाले और'महाकर्त्ता'-अर्थात् पाँच महाभूतोंके निर्माण करने वाले हैं। इस विषय के पोषक "विश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता" इत्यादि आगमों के वचन भी हैं। यहाँ पर भगवान् शिवके सहस्र नामोंका एक शतक पूरा होता है। (१००) शिव का नाम 'महौषधि' भी है। इसका अर्थ होता है शिव ब्रीहि यवादिके रूप वालेहैं अथवा संसार बन्धन स्वरूप रोगके छुड़ादेने वाले हैं। 'सोमपः' यज्ञादिमें देव स्वरूपसे सोमके पान करने वाले हैं। किम्वा धर्म की मर्यादा को दिखाते हुए यजमान के स्वरूप से सोमपान करने वाले हैं। 'अमृतपः'-अर्थात् अपनी ही आत्मा का अमृतपान करने वाले हैं। 'सौम्यः'-भक्तों के लिये परम सौम्य शान्य स्वरूप वाले हैं। 'महातेजाः'-इसका अर्थ है परम तेजस्वीहैं जिनसे सूर्यादि तेजोनिधि भी तपतेहैं। यहाँ येन सूर्यस्तपति तेजसेद्धः' यह श्रुति का वाक्य भी इसकी पुष्टि करने वाला है। 'महाद्युतिः'-अर्थात् महान् कान्ति वाले हैं। यहाँ भी 'स्वयज्योतिः' यह श्रुति वचन है। कहीं पर 'महानीतिमहामतिः' ऐसा भी पाठान्तर है। "तेजोमयः"--अर्थात् विश्व को प्रकाशित करने वालेहैं। किंवा तेजसे युक्तहैं। "अमृतमयः"-अर्थात् मरणसे रहित या जलमयहै। 'अमृतवा आपः'-यह श्रुति वचनहै। शिवकी अष्टमूर्ति के अन्तर्गत एक जल का स्वरूप भी है अथवा मोक्ष के आनन्द से परिपूर्ण है। "अन्नमय"—अर्थात् अन्न के स्वरूप वाले हैं। यहाँ पर भी

'अन्नमय आत्मा'—'अन्नं ब्रह्म' इत्यादि श्रुति के वचन हैं। 'सुधापति'—अर्थात् देवोंको अमृत का पान कराने के लिये उसकी रक्षा करनेवाले स्वामीहैं 'उत्तम'--इसका अर्थ है शिव संसार में आवागमन के समूह से पार करने में सर्वोत्कृष्टहैं। यहाँ 'विश्वस्म दिद्र उत्तरः' यह श्रुति का वचन भी इसका पोषक होता है। गोपतिः—अर्थात् पृथ्वी-स्वर्ग-पशु, वाणी, रश्मी और जल के स्वामी हैं।

"गोप्ता"—समस्त भूतों के पालन करने वाले हैं। 'ज्ञानगम्य'—इस शिव के नाम का तात्पर्य होता है भगवान् शम्भु केवल कर्म से प्राप्त करने के पश्चात् समुत्पन्न ज्ञान से प्राप्त करने के योग्य हैं। 'पुरातनः'--काल से अपरिच्छिन्न होने के कारण परम प्राचीन हैं। 'नीतिः'—दण्ड के योग्य व्यक्तियों को दण्ड के प्रणयन करने वाले हैं। "सुनीतिः"—अर्थात् निर्मल चित्त वाले, 'सोमः' अर्थात् चन्द्र के स्वरूप से औषधियों की पुष्टि करने वाले अथवा उमाके सहित रहने वाले हैं। ११०। 'सोमरतः'—चन्द्र अमृत या सोमलता के रस में अनुराग करने वाले हैं। "सुखी"—अर्थात् आनन्द से युक्त हैं। किम्बा भक्तों को सुख प्रदान करने वाले हैं। यहाँ—"एषह्येवानन्दयति" यह श्रुति का वचन भी है॥ ३-१४-१५॥

अजातशत्रुरालोकसंभाव्यो हव्यवाहनः।
सीकंकरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः॥१६
महर्षिः कपिलाचार्य्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः।
पिनाकपाणिर्भूदेवः स्वस्तिदः सुकृतः सुधीः॥१७
धातृधामा धामकरः सर्वदः सर्वगोचरः।
ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्गः कर्णिकारप्रियः कविः॥१८

"अजातशत्रु"—शत्रु से रहित है क्योंकि आप शिव स्वयं ही सबके शासक हैं। "आलोकः'—अर्थात् स्वयं ही प्रकाश स्वरूप हैं। "संभाव्यः"—अर्थात् समस्त देव असुरों के माननीय हैं। "हव्यवाहन"—अर्थात् शिव अग्नि स्वरूपसे समस्त देवों को हवि के पहुँचा देने वाले हैं। यहाँ पर 'देवेभ्योहव्य वाहनः प्रजानम्" यह श्रुति का वाक्य भी प्रमाणित करता है।

'लोककरः'—लोकों के सृजन करने वाले, 'वेदकरः'—ऋग्वादि वेदों के

प्रकाश करने वाले, 'सूत्रकारः'—व्यासादि के रूप में होकर सूत्रों की रचना करने वाले और "सनातनः"—सदा सर्वदा रहने वाले शिव हैं। "महर्षि कपिलाचार्यः"—सांख्य दर्शन के द्वारा शुद्ध आत्मा के जानने वाले कपिल के रूप में अवतीर्ण होने वाले हैं। जो वेद के एक ही देश को जानते हैं वे महर्षि कहे जाते हैं। यहाँ पर—"ऋषिं प्रसूतं कपिलं महान्तम्" यह श्रुति वाक्य भी इसकी पुष्टि करता है। 'विश्वदीप्तिः'—अर्थात् यह समस्त संसार शिव की ही दीप्ति का रूप है। यहाँ—'यस्य भासा सर्वमिदम्' यह वेद का वचन भी इसका पोषक है।

'त्रिलोचनः'—अर्थात् तीन नेत्रों वाले हैं। 'पिनाकपाणिः'—अर्थात् पिनाक धनुष अथवा त्रिशूल को हाथ में धारण करने वाले हैं। 'भूदेवः'—भूमि में दुर्वासा आदि ब्राह्मण के स्वरूप से अवतीर्ण होने वाले हैं। 'स्वस्तिदः'—भक्तों को कल्याण प्रदान करने वाले हैं। सुकृतः—अर्थात् भक्तों के मङ्गल करने वाले हैं। 'सुधीः'—श्रेष्ठ ज्ञान से परिपूर्ण हैं॥१७॥ धातृधामा'—अर्थात् विश्व के धारण करने वाले तेज से युक्त हैं। 'धामकरः'—सूर्यादि तेज और समस्त प्राणियों की देह के बनाने वाले हैं। 'सर्वगः'—सब में व्याप्त रहने वाले शिव हैं। 'सर्वगोचरः'—सम्पूर्ण जगत् को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। 'ब्रह्म सृक्'—अर्थात् ब्रह्मा अथवा वेद के सृजन करने वाले हैं। 'विश्वसृक्'—अर्थात् संसार की रचना करने वाले हैं। 'सर्गः'—स्वयं सृष्टि के स्वरूप में होने वाले, 'कविः'—सभी कुछ के ज्ञाता हैं। यहाँ पर श्रुति का वचन है—'कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः' इत्यादि। 'नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा' इत्यादि॥ १६।१७।१८॥

शाखो शिशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः।
गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः॥१९
विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः।
सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः॥२०
कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः।
भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः॥२१

'शाखः'—इसी नाम वाले ऋषि का स्वरूप, 'विशाखः' एक ऋषि के स्वरूपधारी अथवा स्कन्द के स्वरूप से उत्पन्न होने वाले हैं। 'गोशाखः शिवः—

अर्थात् वेदों की शाखा के अश्रय स्वरूप, अथवा इस सम्पूर्ण जगत् के शयन करने का आधार किम्बा त्रिगुण रहित होने के कारण शिव हैं। यहाँ दोशब्दों का एक ही शिव का नाम है। यहाँ पर 'स ब्रह्मा स शिवः' इत्यादि श्रुतिका वचत है। 'भिषक्'—धन्वन्तरि के स्वरूपमें अवतीर्ण होकर संसार के समस्त रोगों के नाशक हैं। यहाँ पर भी—'भिषक्तमं त्वा भिषजां श्रृणोमि इत्यादि श्रुति के वचन हैं जो उक्त नाम की पूर्ण पुष्टि करते हैं। अनुत्तमः'-अर्थात् संसार में सबसे श्रेष्ठ हैं यहाँ जिससे उत्तम कोई नहीं-ऐसा बहुव्रीहि समाज होता है। यहाँ 'यस्मात्परं नायमस्ति किंचित्' यह श्रुति का वचन समर्थक है।

'गंगाप्लवोदकः'—भागीरथी गंगा के जल-प्रवाह के समान हैं। 'जन तारकः'—अर्थात् भक्तों के उद्धारक हैं। 'भव्य'-समस्त कल्याण से परिपूर्ण हैं। 'पुष्कलः'—सब में व्यापक रहने वाले हैं। 'स्थपतिः स्थिरः'—अर्थात् अनन्त ब्रह्माण्डों के रचने वाले अथवा माया के कंचुकी हैं। यहाँ पर ये दोनों शब्द मिलकर शिव का एक ही नाम बतलाते हैं।'विजितात्मा'—आत्मा को जीत लेने वाले हैं। 'विषयात्मा'—समस्त इस प्रपञ्च जगत् की आत्मा हैं। कहीं 'विधेयात्मा' यह पाठान्तर भी होता है। 'भूत वाहन सारथिः'—प्राणियों के कर्मफलों को प्राप्त करने वाले ब्रह्मा को अपना सारथी रखने वाले हैं। 'सगणः'-अर्थात् प्रथमादिगणों से युक्त रहने वाले। 'गणकाय'—गणों के शरीर वाले किम्बा अपरिच्छेद्य काया वाले। 'सुकीर्ति'—सुन्दर कीर्ति से युक्त। छिन्न संशयः—सर्वज्ञता के कारण सब प्रकार के संशयों से रहित हैं॥ १९।२०॥

'कामदेवः'—अर्थात् धर्मार्थादि पुरुषार्थों की इच्छा रखने वाले शिव हैं। 'कामपालः'—कामिजन की कामनाओं को पूरा करने वाले। 'भस्मोद्धूलित विग्रहः'—भस्म लगाने से धूलित शरीर वाले। 'भस्म प्रियौ भस्मशायी'-भस्म-प्यारी लगनेके कारण उसी में शयन करने वाले। यहाँ ये दोनों शब्द मिलकर एक ही शिव का नाम बतलाते हैं। 'कामी —पूर्णकाम अर्थात् जिनकी सभी कामनायें स्वतः परिपूर्ण हैं। 'यहाँ-'सोऽकामाय'इत्यादि श्रुतिवाक्यभी उनको कामना रहित बतलाता है। 'कान्त'-मनोहर किम्बा द्विसीय परार्ध में ब्रह्मा के भी अन्त करने वाले हैं। 'कृतागमः'—श्रुति तथा मृत आदि आगम स्वरूप लक्षण के व्यक्त करने वाले हैं॥ २१॥

समावर्त्तो निवृत्तत्मा धर्म पुंजः सदा शिवः ।
अकल्मषश्च पुण्यात्मा चतुर्बाहुर्दुरासदः ॥२२॥
दुर्लभो दुगमा दुर्गः सर्वायुधविशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलयः सुतंतुस्तस्तु वर्द्धनः ॥ २३
शुभांगो लोकसारङ्गी जगदीशो जनार्दनः ।
भस्मशुद्धिकरोऽ भीरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः ॥२४

शिव का एक नाम 'समावर्त्त' होता है । इसका अर्थ संसार रूपी चक्र के घुमाने वाला होता है । अनिवृत्तात्मा — अर्थात् सर्वत्र व्याप्ति के कारण उनकी विद्यमानता रहती है । अतः अनिवृत्त आत्मा वाले हैं । धर्म पुञ्ज धर्म की राशि रूप है सदाशिव -अर्थात् शिव सर्वदा कल्याणस्वरूप वाले हैं ।

शिव का एक नाम अकल्मष है इसका अर्थ होता है नित्य शुद्ध रहने वाले । , चतुर्बाहु ' --अर्थात् चार भुजाओं वाले विष्णु का-सा स्वरूप वाले । ' दुरावासः '-- योगिजनों की समाधिमें भी बड़ी कठिनाई से ध्यानगत होने वाले । यहाँ 'सर्वावास ऐसा भी पाठान्तर मिलता है उसका अर्थ है सर्वत्र सब में निवास करने वाले शिव हैं । दुरासद बड़ी कठिनता से प्राप्त होने के योग्य शिव हैं ॥ २॥ ' दुर्लभ : अर्थात् अत्यन्त भक्ति से ही प्राप्त होने वाले हैं। दुर्गम बड़ी कठिन मेहनत से जानने के योग्य (१८० दुर्ग :- अर्थात् बहुत ही दुख उठाकर पाने के योग्य । सर्वायुधविशारद :-- समस्त शस्त्रास्त्र की विद्याओं के पूर्ण पण्डित ।

"अध्यात्म योग निलयः" --अर्थात् असंप्रज्ञात समाधि के स्थान सार की वृद्धि वा छेदन करने वाले ॥ २३ ॥ 'शुभांग' श्रेष्ठ अंगों वाले । लोक सारङ्ग-- सारग के सदृश लोक का सार ग्रहण करने वाले किम्बा ओंकार के द्वारा जानने के योग्य । जगदीश समस्त जगत् का नियन्त्रण करने वाले 'जनार्दनः' — इस जगत् के संहार करने वाले । भस्म शुद्धिकरः अर्थात् भस्म से शुद्धि करने वाले । (१९०) ॥ मेरु -- पर्वत के स्वरूप में संस्थित । औजस्वी -आत्मा के बल ओज से परिपूर्ण । 'शुद्धि विग्रहः'—अर्थात् चित्स्वरूप वाले ॥ २२॥ २३॥ २४॥

असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक् ।
हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरो बली ॥२५
महाह्रदो महागर्तः सिद्धो वृन्दारवन्दितः ।
व्याघ्रचर्माम्बरो व्यालो महाभूतो महानिधिः ॥२६
अमृतोऽमृतपः श्रीमान्पाञ्चजन्यः प्रभंजनः ।
पञ्चविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परात्परः ॥२७

'असाध्यः'—चरित्रहीन पुरुषों के द्वारा प्राप्त न होने वाले । 'साधु साध्यः'—सच्चरित एवं साधु वृत्ति वाले भक्तोंके द्वारा प्राप्त होने के योग्य है। 'भृत्यमर्कट रूप धृक्' अर्थात् हनुमान के स्वरूप में स्थित होने वाले । हिरण्य रेताः'-अग्निके सम स्वरूपवाले अर्थात् परम तेजस्वी । पौराण'-समस्तपुराणों के द्वारा ब्रह्म के रूप से प्रतिपादन करने के योग्य । 'रिपु जीव हरः'—शत्रुओं के प्राणों का हरण करने वाले । 'बलः'-महान् बल की शक्ति धारण करने वाले॥(२००)॥(यहाँ शिव के नामों का द्वितीय शतक समाप्त हो गया है ।) 'महाह्रदः'-ऐसे महान् सरोवर का स्वरूप जिसमें योगी विश्रामलेकर सर्वदा आनन्द में मग्न रहा करते हैं । 'महागर्त्तः'-महागर्त्त वाले किम्बा महान् दुरत्यय माया से युक्त । 'सिद्ध वृन्दारवन्दितः'—परम सिद्ध और देव समूह के द्वार वन्दना किये जाने वाले । 'व्याघ्र चर्माम्बरः'-अर्थात् बाघ के चर्म का वस्त्र धारण करने वाले । 'व्याली'—अर्थात् महान् विषधर वासुकि आदि अनेक सर्पों के भूषण धारी । 'महाभूतः'-महान् विराट्को उत्पन्न करनेवाले अथवा तीनों कालों में अवच्छिन्न महत्तत्त्व स्वरूप वाले । यहाँ यो ब्राह्मणं विदधाति पूर्वकम्'—यह श्रुति का वचन भी पोषक होता है । 'महानिधिः'-ऐसेविशाल स्वरूपके धारणकर्त्ता जिसमें समस्तप्राणी समा जाते हैं।२५।२६। 'अमृताशः'—अपने आत्मानन्द रूपी अमृतका सदा पान करने वाले । 'अमृत वपुः'—मृत्यु रहित शरीर के धारण करने वाले । यहाँ—'अजरोऽपरः'—यह वेदका वाक्य भी शिवके मरणाभावकी पुष्टि करता है । 'पाञ्चजन्यः'-अर्थात् पाँच जनों में रहने वाले अग्नि स्वरूपी । यहाँ पर भी-'अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः'—यह श्रुति वाक्य है। किसी जगह 'पञ्चयज्ञ'-ऐसा भी

पाठान्तर मिलता है । वहाँ इसका अर्थ यज्ञों के उत्पादक शिव हैं । 'प्रभञ्जनः' –भक्तों के मायात्मक आवरण के नाशक अथवा वायु के स्वरूप में संस्थित । 'पञ्चविंशति तत्त्वस्थः'-अर्थात् प्रकृति आदि पच्चीसतत्त्वोंमें विराजमान रहने वाले । यहाँ–'तत्सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्'–यह श्रुति का वचन उक्तार्थ का समर्थक है । 'पारिजातः'-अर्थात् मनुष्यों के मनोवांछित फल देने वाले कल्प वृक्ष के स्वरूप से युक्त । परात्परः'-ब्रह्म तथा जगत् के रूप वाले हैं ॥२७॥

सुलभः सुव्रतः शूरो वांग मयैकनिधिर्निधिः ।
वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥२८
आश्रमः श्रमणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः ।
प्रमाणभूतो दुज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः ॥२९
धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणः शशिगुणाकरः ।
सत्यः सत्यपरोऽदीनो कर्मो गोधमशासनः ॥३०

'सुलभः'—पत्र पुष्पादि के अत्यन्त साधारण उपचारों से पूजित होने पर प्राप्त होने वाले ।'सुव्रतः शूरः अपने भक्तों की रक्षा करने का अच्छा व्रत लेने वाले किम्वा भोजन नियत करने वाले शूर अर्थात् सूर्यके स्वरूप में स्थित यहाँ इन दोनों शब्दों से शिव का एक ही नाम व्यक्त होता है । 'ब्रह्म वेद निधिः'–वेदों के प्रादुर्भाव होने का स्थल । यहाँ—'अस्य महतो भूतस्य निःश्वासितमेतद्ऋग्वेदः'-अर्थात् इस महान् दैवकाजो निःश्वास है वही ऋग्वेद है यह श्रुतिका वचनभी उक्त नामार्थ की पुष्टि करताहै । 'वाङ्मयैक निधिः' कहीं ऐसा भी पाठान्तर मिलता है । वर्णाश्रम गुरुः–अर्थात् योगिजन द्वारा स्थापित ब्राह्मण आदिवर्णोंऔर ब्रह्मचर्य आदि आश्रमोंके उद्भव करने वाले अथवा उपदेशक ॥२८॥'वर्णी'-ब्रह्मचारी के स्वरूपमें रहने वाले॥(२२०)। 'शत्रुजिच्छत्रु तापनः'—देव शत्रु को जीतने तथा उन्हें सन्ताप देने वाले । यहाँ भी दोनों शब्दों द्वारा एक हो शिव का नाम होता है । 'आश्रमः'-आश्रम के सदृश संसार में भ्रमणशीलों को विश्राम प्रदान करने वाले । 'श्रुष्णः'—निज भक्तों के पापों का क्षय करने वाले । 'क्षामः'–प्रलयकालमें प्रजा को क्षीण करने वाले । 'ज्ञानवान्'–नित्यज्ञान से युक्त । 'अचलेश्वरः'–पृथ्वी पर्वत प्रभृति के स्वामी । 'प्रमाण भूतः'—प्रत्यक्षानुपानादि प्रमाणों के

उत्पादक। 'दुर्ज्ञेयः'-अत्यन्त चोर श्रम से जानने के योग्य। 'सुपर्णः'-धर्म अधर्म रूपी पक्षों से युक्त अथवा गरुड़ के स्वरूप में संस्थित किम्बा सबके उत्पन्न करने वाले यहाँ—'सुपर्णा विप्रा कवयो वचोभिरेकं सन्त बहुधा कल्पयन्ति' इत्यादि श्रुति वचन है जो उक्त नाम के अर्थ को बतलाता है। अथवा छन्द स्वरूप पर्ण वाले। 'वायु वाहनः'—वायु सोपान से युक्त रथ वाले अथवा जिसके भय से वायु समस्त प्राणियों का वहन करता है। वहाँ उसका पोषक—'भीषा स्माद्वातः पवते' इत्यादि श्रुति का वाक्य है। 'धनुर्धरो धनुर्वेदः—अर्थात् धनुर्वेद को प्रकट करने वाले पिनाक के धारक। यहाँ पर ये दोनों शब्द एक ही शिव नाम के वाचक होते हैं। 'गुणराशिर्गुणाकरः'—योगादि गुणों के संघात वाले और योग, साँख्य, तप, विद्या, विधि, क्रिया' ऋत, सत्य, दया, श्रेष्ठ मति, अहिंसा, शांति, दम, ध्येय, ध्यान, मति, धृति, प्रथा, मेधा, नीति, कान्ति, दृष्टि, लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, सरस्वती, प्रासाद, क्रिया, प्रतिष्ठा आदि अनेक गुणों की खान। यहाँ भी दोनों शिव का एक ही नाम बतलाते हैं। 'सत्यः सत्यपरः'—साधुओं के समाज में सत्य स्वरूप वाले और यथार्थ कथन करने में निष्ठा रखने वाले। यहाँ पर भी दोनों शब्द एक ही नाम को प्रकट करते हैं। 'दीनः'—सामान्य बाह्य दृष्टि रखने वाले के लिये श्मशान में निवास करने से एक दरिद्रके समान दिखलाई देने वाले किम्बा अदीन अर्थात् सर्वदा परम सन्तुष्ट रहने वाले। 'गर्माङ्गो धर्म साधनः'—अर्थात् यज्ञादि के धार्मिक अंगों वाले। जैसा कि हरिवंश पुराण में प्रथम पर्व २१ अध्याय में विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है और लिखा है—वेद रूप चरण, यज्ञ स्तम्भ स्वरूप दष्ट्रा, यज्ञ रूप हाथ वाला वाराह मूर्तिरूप है और जिसका विति रूप मुख, अग्नि स्वरूप जिह्वा, डाभ (कुश) रूप रोम, ब्रह्मात्मक शिव, दिनरात्रि स्वरूप नेत्र, दिव्य वेदान्त तथा श्रुति रूप आभरण, घृत रूप नासिका, स्रुवा स्वरूप तुण्ड, साम-वेदात्मक शब्द, धर्म सत्य स्वरूप शोभा, कर्म-विकर्म सत्क्रिया सयुत, प्रायश्चित रूपी नख और पशु रूप जानु और विकृत भुजा, उग्रता से युक्त होम स्वरूप वाला लिंग, फल बीज महौषधि वायु से समन्वित अन्त-रात्मा वाला वेदरूप फिर्चों से हुआ सोम स्वरूप रक्त, वेदी रूप स्कन्ध, हवि रूप गन्ध, हव्य-कव्य स्वरूप वेगवान्, प्राग्वंश रूपी शरीर विचित्र

दीक्षाओंसे समर्पित, दक्षिणा रूपी हृदय, योगी और महायज्ञ से युक्त उपकर्म रूपी ओष्ठ,प्रवर्गावर्त्त रूप भूषण तथा अनेक प्रकारके वेदरूप गमन,गुप्त उपनिषद् रूपी आसन और छाया पत्नीके सहित मेरु शृंगके तुल्य उन्नत बाराह रूप है एवं धर्म के साधनोंके विधाता हैं। यहाँ पर भी दोनों शब्दों से एक ही शिव के नाम की व्यक्ति होती है ॥२८ से ३०॥

अनंतदृष्टिरानन्दो दंडो दमयिता दम ।
अभिचार्यो महामायो विश्वकर्मविशारद ॥३१
वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः ।
उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामो जितेंद्रियः ॥३२
कल्याण प्रकृति कल्प सर्वलोकप्रजापति ।
तपस्वी तारको धीमान्प्रधान प्रभुरव्यय ॥३३

'अनन्त दृष्टिः'—अर्थात् असख्य दृष्टियों वाले। 'आनन्दः'–अर्थात् अत्यन्त सुख के स्वरूप हैं। यहाँ--आनन्द ब्रह्म' इत्यादि श्रुति से भी उनका नाम व्यक्त होता है 'दंडो दमयिता'–दमन करने वालों को भी दण्ड रूप और इन्द्रादि के रूप से प्रजा के दमन करने वाले हैं। यहाँ भी दोनों का एक ही नाम होता है। 'दमः'-इन्द्रियों के निग्रह के स्वरूप वाले। 'अभिचाद्यो महामायः'-सुरासुरों द्वारा वन्दित और मायासंयुतों को मोहने वाले हैं। ये दोनों भी एक ही हैं।२४०। 'विश्वकर्मा विशारदः'-विश्व की रचना करने वाले और सकल कलाओंमें प्रवीण जिनके द्वारा श्रेष्ठ सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ है। ये दोनों एक ही हैं। 'वीतरागः'-भक्तों के राग-द्वेष को मिटाने वाले। 'विनीतात्मा'-भक्तोंके स्वभाव को विनम्र बना देने वाले। 'तपस्वी' अर्थात् तप से युक्त। 'भूत भावन'-प्राणियों की वृद्धि के लिये सम्पादक। 'उन्मत्त वेष, प्रच्छन्न'—दिगम्बर (नग्न) होने के कारण गूढ रूप वाले। यहाँ भी दोनों से एक ही नाम का प्रकाशन होता है। 'जितकामः'-कामदेव पर विजय प्राप्त करने वाले। 'अजित प्रियः'—विष्णु के प्यारे।

किसी स्थान में—'जितरोचिः प्रियाकविः' ऐसा पाठान्तर भी है। 'कल्याण प्रकृति'-अर्थात् उत्तम स्वभाव से युक्त। 'कल्प'-सब चराचर के

आदि कारण ।(२५०)। 'सर्वलोकप्रजापतिः'—सम्पूर्ण लोकों तथा समस्त प्रजा के पालक स्वामी । 'तपस्वी'-अपने भक्तों की रक्षा करने के कार्यमें वेग सहित शीघ्रता करने वाले । 'तारकः'-इस संसार रूपी सागर से तार देने वाले । 'श्रीमान'-श्रेष्ठ बुद्धि एवं ज्ञान से युक्त । 'प्रधान प्रभु'-उस चराचर प्रकृति के स्वामी । 'अव्ययः'—नाश से नहित ।३१—३३।

लोकपालोऽन्तरात्म च कल्पादिः कमलेक्षणः ।
वेदशास्त्रर्थतत्वज्ञो नियमी नियमाश्रयः ।३४।
चन्द्रः सूर्य्यः शनि केतुर्वरांग विद्रुमच्छविः ।
भक्तवश्यः परं ब्रह्म मृगबाण र्पणोऽनघः ।३५।
अद्रिरद्रयालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरुः ।
सर्वकर्मालयस्तुष्टो मङ्गल्यो मङ्गलावृतः ।३६।

'लोकपालः'—लोकों के पालन-पोषण करने वाले । 'अन्तरात्मा'—माया के प्रभाव से अपने स्वरूप को छिपा कर रखने वाले । 'कल्पादिः'—समस्त शास्त्रों के आदि कारण । 'कमलेक्षणः-कमल के तुल्य सुन्दर नेत्रों वाले किम्बा अपनी दृष्टि में लक्ष्मी का निवास रखने वाले ।(२५०)। 'वेद शास्त्रार्थ तत्त्वज्ञः'-मुनियों को वेदों एवं शास्त्रों का असली तत्वार्थ का ज्ञान प्रदान करने वाले या स्वयं वेद शास्त्रों के तथ्वार्थ के ज्ञाता । 'अनियम'—स्वयं शिक्षा से रहित अथवा सबको सिक्षा देने वाले । नियताश्रम' सम्पूर्ण जगत् के आधार स्वरूप ।। ३४ ।। 'चन्द्रः' सबको प्रसन्नता देने से चन्द्र के स्वरूप वाले । 'सूर्यः'-कर्मों में सब लोकों को प्रेरित करने वाले आदित्य स्वरूप । 'शनि'--शनि के रूप वाले । 'केतु'--केतुवा धूमकेतु का स्वरूप वाले । वराँगः' शोभापूर्ण अंगों वाले । कहीं 'विरामः' ऐसा भी पाठान्तर होता है । 'विद्रुमच्छवी'-मूंगे के समान कान्ति वाले अर्थात् मंगल स्वरूप । 'भक्ति वश्यः'-- भक्ति के द्वारा बस में हो जाने वाले ।। (२७०) ।। 'परब्रह्म'-परात्पर ब्रह्म के स्वरूप वाले । 'मृग बाणापूर्ण'-अर्थात् अपने भक्तों के लिये मृग के अन्वेषण में मन रूपी बाण का अर्पण करने वाले । 'अनघ'-

सब प्रकार के पापों से रहित। 'अद्रिः'—मेरु आदि पर्वत के स्वरूप वाले। अद्रयालयः,-कैलास पर्वत के निवास करने वाले। कान्तः'—अत्यन्त सुन्दर अथवा ब्रह्मा को अपना सारथि रखने वाले। 'परमात्मा'-सब में व्यापक होकर निवास करने से सर्वोत्कृष्ट महान् आत्मा वाले अर्थात् सर्वत्र विद्यमान। जगद्गुरु'- सम्पूर्ण जगत् को हित का उपदेश देने वाले। सर्व कर्मालयः'—अर्थात् सबके नित्य के तथा नैमित्तिक कर्मों के अर्पण करने के आधार। 'तुष्टः'- परम सन्तोष तथा आनन्द के स्वरूप। 'मगल्यो मंगलावृतः'—अपने भक्तों के मंगल में हित स्वरूप तथा अनेक मंगलों से युक्त ये दोनों शब्द एक ही शिव के शुभ नाम के द्योतक हैं॥३४-३५३६॥

महातपा दीदीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः।
अहः संवत्सरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः॥३७
संवत्सरकरो मन्त्रः प्रत्ययः सर्वतापनः।
अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महातेजा महाबलः॥३८
योगी योग्यो महारेताः सिद्धिः सर्वादिरग्रहः।
वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः॥३९

'महातपाः'—संसार के समुत्पन्न करने से महान् तप करने वाले। यहाँ 'यस्य ज्ञान मयं तपः'—इत्यादि वेद के वचन का प्रमाण है। 'दीर्घ-तपाः'—स्वयं अजर अमर होने से दीर्घतम तपस्या करने वाले भगवान् शिव हैं।

'स्थविष्ठः'—अत्यन्त स्थूल। 'स्थविरः'—अत्यन्त वृद्ध अर्थात् सबसे प्राचीन बड़े। ध्रुवः'—अटल स्वरूप वाले। 'अहः'—प्रकाश स्वरूप। 'संवत्सरः'-वर्षात्मक काल के स्वरूप से युक्त। 'व्याप्तिः'-सर्वत्र विद्यमानता रखने के स्वरूप वाले। 'प्रमाणः'-प्रमित स्वयं प्रमाण रूप। यहाँ श्रुति वचन इसका पोषक—'प्रज्ञान ब्रह्म' होता है। 'परमम्'—पर शोभा से समन्वित अथवा मुक्ति स्वरूपिणी लक्ष्मी के दाता। 'तपः'-ऋत सत्य आदि के स्वरूप से युक्त। 'ऋत तपः'—इत्यादि श्रुति वाक्य हैं।३७। संवत्सर करः'-काल 'चक्र के प्रवर्त्तक अथवा प्रभव प्रभृति वत्सरों के उत्पन्न करने वाले। 'मन्त्र 'अत्ययः'-अर्थात् ऋग्यजुः साम स्वरूप मन्त्रोंके द्वारा प्रतीत होने वाले। 'सर्व

दर्शनः'--सभी कुछ का प्रत्यक्ष करने वाले। यहाँ 'विश्वतश्चक्षुर्विश्वाक्षम्' इत्यादि श्रुति के वचन इस उक्त अर्थ की पुष्टि करने वाले हैं।

'सर्वेश्वरः'--ईश्वरों के भी परमेश्वर।' एष सर्वेश्वर ! इत्यादि वेद के वाक्य यहाँ पर पोषक हैं। सिद्ध'--अर्थात् नित्य निष्पन्न स्वरूप। 'महारेता.' महान् वीर्य वाले। यहाँ 'ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षम्'--यह श्रुति वचन है। 'महाबल'—महान् पराक्रम वाले ॥३८॥ 'योगी योग्यः,—नित्य योग से युक्त अर्थात् योग में प्रवृत्त होने वाले। यहाँ ये दोनों शब्द एक ही नाम को प्रकट करने वाले है। (शिव नामों का यह तृतीय शतक समाप्त हो गया।) तेजोः'--महान् प्रभाव से युक्त किम्बा दुष्टों के अत्याचार न सहन करने वाले। 'सिद्धिः'—अनन्त काल का स्वरूप होने के कारण सिद्धियुक्त। 'सर्वादिः'—समस्त के आदि कारण। 'अग्रहः'—पुण्य से हीनों के द्वारा न ग्रहण करने के योग्य। 'वसेः'—अर्थात् समस्त प्राणियों को अपने अन्दर निवाह देने वाले। वसुमनाः' राग द्वेषादि से कालुज्ञ रहित चित्त वाले। 'सत्यः' अर्थात् आवर्तक स्वरूप। यहाँ-'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' यह वेद वचन इसका पोषक है। 'सर्व पाप हरोहर' अर्थात् कायिक प्रभृति समस्त पातकों के हरण करने वाले। यहाँ ये दोनों शब्द एक ही नाम को बतलाने वाले हैं।३९।

सुकीर्तिः शोभनः स्रग्वी वेदांगो वेद्विन्मुनिः।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुराधरः।४०।
अमृतः शाश्वतः शान्तो बाणहस्तः प्रतापवान्।
कमंडलुधरो धन्वी ह्यवाङ्मनसगोचरः।४१।
अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः।
कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः।४२।

'सुकीर्तिः' सुन्दर समुज्ज्वल यज्ञ से युक्त। शोभन–विविध प्रकार के वैभवोंसे युक्त शोभा वाले। (३०)। श्रीमान्-ऐश्वर्य ,लक्षण शोभा की समस्त सामग्री से युक्त। 'अवाङ् मनस गोचरः'--चक्षु आदि का तो कथन ही क्याहै वाणी और मनसे परे यहाँ, यतो वाचौ निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह' इत्यादि श्रुति वचन पोषक हैं। 'अमृतः आश्वतः-अमर और नित्य। यहाँ पर भी--'अजरोऽमृतः' इत्यादि श्रुति वाक्य हैं। ये भी दोनों एक ही

होते हैं ॥४०॥ 'कमण्डलु धरः,-कमण्डलु हाथ में धारण करने वाले 'धन्वी'-धनुष के धारक। वेदांग;—वेद के बोधक अंग रूप। 'वेदवि न्मुनिः,-वेदों के ज्ञाता मुनि स्वरूप।

'भ्राजिष्णुः'—एक रस प्रकाश के स्वरूप वाले। 'भोजनम्-इस भुवनमोहिनी माया का भोजन करने वाले। 'भोक्ता' पुरुष स्वरूप से भोग करने वाले। 'लोकनाथ'—सम्पूर्ण लोकों के स्वामी किम्बा सबका शासन करने वाले। 'दुराधरः'—दैत्यादि के द्वारा आराधना करने के अयोग्य एवं अशक्य ॥४१॥ अतोन्द्रियो महामाय'—शब्दादि का स्वरूप न होने के कारण इन्द्रियों के अविषय। यहाँ—'अशब्द सम्पर्कम्' इत्यादि श्रुति के वचन पुष्टिकारक हैं। जो स्वयं माया किया करते हैं उन पर भी माया का प्रभाव डालने वाले। यहाँ इन दोनों शब्दों से एक ही नाम की अभिव्यक्ति होती है। 'सर्व वास'—सब में निवास करने वाले। 'चतुष्पथः'—चारों पदार्थों के साधक मार्ग वाले। कालयोगी'-कर्म के परिपाक होने के समय प्राणियों को भोग की प्रेरणा देने वाले। 'महाः नाद,—अयि गम्भीर ध्वनि से युक्त। 'महोत्साहः,-इस जगत् की उत्पत्ति स्थिति और संहृति करने के कार्य में उत्साहपूर्वक सर्वदा उद्यत रहने वाले। 'महाबलः'—बड़े भारी बल वालों से भी बली।४२।

महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचार पुरन्दरः।
निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः।४३।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान्सर्वावार्यो मनोगतिः।
बहुश्रुतिर्महामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः।४४।
तेजस्तेजो द्युतिधरो जनकः सर्वशासनः।
नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रशाशकः।४५।

'महाबुद्धिः'—अर्थात् महान् बुद्धि के भण्डार। 'महावीर्यः'—इस जगत् के बड़ी भारी उत्पत्ति के कारणरूप वीर्य को धारक करने वाले।

'भूतचारी'-भूत पिशाच आदि के साथ सदा विचरण करने वाले। 'पुरन्दरः'--त्रिपुरासर का विदारण करने वाले। निशाचरः'--रात्रि के

समय में विचरण करने वाले। 'प्रेतचारी'—प्रेतों को साथ में लेकर गमन करने वाले। 'महाशक्तिर्महाद्युतिः—महान् शक्ति एवं महान् ज्योति के धारण करने वाले। यहां 'ज्योतिषाः' ज्योतिः' इत्यादि श्रुति का अर्थ भी यही है कि वह प्रकाशकों की भी ज्योति है। ये दोनों एक ही हैं।४३। 'अनिर्देश्य वपुः'-ऐसे शरीर धारण करने वाले जिसका ज्ञान किसी को भी नहीं होता है। 'श्रीमान्' ऐश्वर्य की शोभा से युक्त ॥ (३४०) ॥ 'सर्वाचार्य मनोगतिः' समस्त आचार्यों के मन में ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले। बहुश्रुतः'----अनेक शास्त्रों का उद्भव करने वाले 'महामायः'----बहुत बड़ी माया को उत्पन्न करने वाले। 'नियतात्मा ध्रुवः'--नियत आत्मा स्वरूप में स्थित निश्चल। 'अध्रुवः'--ध्रुव जिससे नहीं है। 'ओजस्तेजो द्युतिधरः'--प्राण, बल, शौर्यादि गुणों की दीप्ति को धारण करने वाले। 'नर्तकः'----ताण्डव नामक नृत्य के करने वाले सर्व शासकः.'----समस्त प्राणियों के नियन्ता। यहाँ--'अन्त प्रविष्ट शास्त जनानां सर्वात्मा' यह श्रुति वचन है। इसका अर्थ है अन्दर प्रविष्ट होता हुआ जीवों का शासक सबकी आत्मा है। 'नृत्य प्रियो नित्य नृत्य'.... नाच की प्रिय लगने के कारण नित्य ही शिव भक्तों के द्वारा उनके निकप नृत्य दिखाये जाने वाले। इन दोनों शब्दों के द्वारा एक ही नाम होता है। 'प्रकाशात्मा प्रकाशक.'----स्वयं तो प्रकाश स्वरूप है अत सबको प्रकाशित करने वाले हैं। ये दोनों एक ही हैं (३५०) ॥४४॥४५॥

स्पष्टाक्षरो बुद्धो मन्त्रः समानः सारसंप्लवः।
युगादिकृतद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः ।४६।
इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः सुलभः सारशोधनः।
तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यस्तु तीर्थदः ।४७।
अपां निधिरधिष्ठानं दुर्जतो जयकालवित्।
प्रतिष्ठमः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः ।४८।

'स्पष्टाक्षर,--ओङ्कार लक्षण वाले। 'बुध'--सबका ज्ञान रखने वाले शिथृणिता से रहित। 'सार सप्लव' वेदान्तके स्वरूपमेंस्थित होकरसंसार सागरसे पाप उतारनेमें साधना'युगादि कृत युगावर्त्त'--स्वयं काल स्वरूप

होने के कारण युगादि के भेद करने वाले तथा युगोंके आवर्तन कर्त्ता ये दोनों शब्द भगवान् शिव का ही नाम व्यक्त करते हैं। 'गम्भीरः—ज्ञान तथा ऐश्वर्य प्रभृति बल से अति गहन। 'वृष वाहनः' नन्दीश्वर नामक वृष को वाहन रखने वाले ॥४६॥ 'इष्ट'—अतिशयानन्द स्वरूप होने के कारक प्रिय किम्वा यज्ञादि के द्वारा समर्चित। 'विशिष्टः'--सबसे उत्कृष्ट।(३६०)। शिष्टेष्टः' महापण्डितोंको प्रिय लगने वाले किम्वा शिष्ट पुरुषोंके द्वारा पूजित। 'शलभः' सर्वत्र गमन करने वाले। 'शरभः'—शरभ के अवतार धारण करने वाले। 'धनुः'-पिनाक धनुष के धारण कर्त्ता। 'तीर्थरूपः'-सर्व विद्याओं के स्वरूप से युक्त। 'तीर्थनामाः'-सांसारिक जीवों को सद्गति करने के लिए भागीरथी आदि के लाने वाले। 'तीर्थदृश्य.'--गंगादि तीर्थोंके द्वारा भी दुष्प्राप्य होने वाले। स्तुतः'--अर्थात् ब्रह्मादि देवों के द्वारा स्तुति तथा वन्दना किये हुए। 'अर्थवः'--पुरुषार्थों के प्रदान करने वाले ॥४७॥ 'अगाधनिधिः'-समुद्र के स्वरूप वाले।'अधिष्ठानम्.'-उपादान कारण से समस्त प्राणियों के आधार।'विजयः' ज्ञान-वैराग्य आदि तथा ऐश्वर्य प्रभृति गुणों के द्वारा संसार पर विजय प्राप्त करने वाले।'जयकाल वित्'-दैत्य तथा असुरों के नाश और देवों के विजय के समय का ज्ञान रखने वाले। 'प्रतिष्ठितः'-अर्थात् अपनी महिमामें स्थित। यहाँ स भगवः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति स्वे महिम्नि इत्यादि श्रुत वचनसे उसके प्रतिष्ठित होने की पुष्टि होती है।

'प्रमाणज्ञः'-प्रत्यक्षादि प्रमाणों तथा समस्त प्राणियोंके प्रमाके ज्ञाता। 'हिरण्य कवच' हेम के निर्मित कवच को धारण करने वाले।'नमोहिरण्य बाहवे हिरण्य वर्णाय हिरण्य रूपाये, इत्यादि श्रुतिके महा वचन से उक्त नाम के अर्थ का वर्णन होता है। 'हरिः'-समस्त पापों को हरण करने वाले ॥४८

विमोचनः सुरगणो विद्यशो बिन्दुसंश्रयः।
वातारूपोऽमलोन्मायी विकर्ता गहनो गुहः ॥४९॥
कारणं कारणं कर्त्ता सर्वबन्ध विमोचनः।
व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः ॥५०॥
गुरुदो ललितो भेदो नवात्मात्मनि संस्थितः।
वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासनविधिर्गुरुः ॥५१॥

'विमोचनः'—आध्यात्मिकादि तीनों प्रकार के नाशक। 'सुरगणः'-सर्व देव स्वरूप।'विद्येशः'-सम्पूर्ण विद्याओं के प्रवर्तक स्वामी।(३८०)।'बिन्दु-संश्रयः'-प्रणव (ओङ्कार) के आत्मभूत। 'बालरूपः'-ब्रह्माके ललाट से समुत्पन्न बालक के स्वरूप में स्थित। 'बलोत्मत्तः'-बल द्वारा समस्त शत्रुओंके नाशक। :विकर्त्ताः'-विचित्र भवन के करने वाले। 'गहनः:अपूर्व एव अद्भुत सामर्थ्य रखनेवाले ऐसे गम्भीरजिसे कोईभी जान नहीं सकता।'गुहः'-अपनी प्रवल मायाके द्वारा अपने सत्यस्वरूप का छिपाने वाले।'करणम्'-इस जगत् के उद्भव में साधक स्वरूप। 'कारणम्'—सृष्टि की रचना में उपादान तथा निमित्त कारण स्वरूप। 'कर्त्ता'-परम स्वतन्त्र अर्थात् सभीकुछ करने वाले।

'सर्वबन्धविमोचनः'-अपने ज्ञान के प्रदान से अविद्याकृत समस्त बन्धनों से विमुक्त कर देने वाले। 'व्यवसायः'-सत्-चित् और आनन्द के स्वरूप में स्थित।'व्यवस्थानः'-वर्णों और आश्रमोंके विभाग कर व्यवस्था करनेवाले। 'स्थानदः'-सबको उनके कर्मों के अनुसार स्थान के दाता। 'जगदादिजः'-हिरण्यगर्भ के स्वरूप से इस जगत्के आदिमें होने वाले ॥५०॥'गुरुदः'-शत्रुओं को अधिक रूप से खण्डन करने वाले। 'ललितः'-सर्वाधिक सुन्दर स्वरूप वाले। 'अभेदः'-अद्वैत स्वरूप में स्थित। 'भावात्मात्मानि संस्थितः'-प्राणियों के पाँच भूतों द्वारा बने हुए शरीर और जीवात्मामें अन्तर्यामी रूपसे स्थित। 'वीरेश्वरः' शूरों के पति। 'वीरभद्रः'-वीरभद्र नाम वाले एक शिवके गण के स्वरूप में स्थित। (४००) (यहाँ चतुर्थ शतक नमों का समाप्त होता है।) 'वीरासन निधिः'-बीरों के आसन में विधान वाले 'विराट्'-समस्त जगत् के स्वरूप में संस्थित ॥५१॥

वीरचूडामणिर्वेत्ता चिदानन्दो नन्दीश्वरः।
आज्ञाधरस्त्रिशली च शिपिविष्टः शिवालयः ॥५२
बालखिल्यो महावीरस्तिग्मांशुबंधिरः खगः।
अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापति ॥५३
मघवा कौशिको गोमान्विरामः सर्वसाधनः।
ललाटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्र भृत्॥५४

'वीर चूड़ामणिः—अर्थात् वीरों के शिरोभूषण। 'वेत्ता'—सब के ज्ञाता। 'तीव्रानन्दः'—अत्यन्त आनन्द स्वरूप। 'नदीधरः'—मस्तक पर भागीरथ के धारण करने वाले समुद्र स्वरूप। दाज्ञाधारः'—सन्तति स्वरूप जगत् के द्वारा अविच्छिन्न रूप से आज्ञा के आश्रय। 'त्रिशूली'—त्रिशूल आयुध के धारक। 'शिपिविष्टः'—यज्ञ में विष्णु के रूप से विराजमान। 'यज्ञो वै विष्णुः पशवः शिपिर्यज्ञ एवं पमुषु प्रविश्य तिष्ठति' इत्यादि श्रुति का वचन प्रमाण है अथवा रश्मि में रहने वाले। 'शिवालयः' कल्याणयुक्त मंगलमय स्थानमें निवास करने वाले ॥४१०।५२

'वालखिल्य'—बालखिल्य नामक ऋषि के स्वरूप में स्थित। महाचापेः' विदेह राजा जनक के द्वारा अर्थित धनुष वाले। 'तिग्मांशु'—सूर्य स्वरूप में स्थित। 'वधिरः'—श्रोत्रेन्द्रिय से रहित। 'खग-'-अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले। 'अभिरामः'—समस्त योगियों के समूह रमण का आधार। सुशरणः' पीड़ित प्राणियों की शरण (रक्षक) रूप में हो कर त्रास देने वाले 'सुब्रह्मण्यः'—समस्त वेद ज्ञाति तथा ज्ञान के ज्ञाताओं के हित-सम्पादक। 'सुधापतिः'--अमृतके स्वामी ।५३। 'मघवान् कौशिकः-इन्द्र के स्वरूप में विराजमान। यहाँ ये दीनों एक ही नाम के द्योतक हैं। (४२०) 'गोमान्'—ससार रूपी गौ वाले। इनकी कथा लिंग पुराण में वर्णित है। 'विरामः'—प्राणियों के अवसान का आधार। सर्व साधनः'—समस्त पुरुषार्थों के देने वाले साधनयुक्त। ललाटाक्षः' मस्तक में तृतीय नेत्र धारण करने वाले। 'विश्वदेहः'—जगत् स्वरूपी देह वाले। सारः'-महाप्रलय काल में भी स्थित रहने वाले। 'संसार चक्र भृत्'—सम्पूर्ण जगत् के प्रपञ्चरूपी चक्र को धारण करने वाले ॥५४॥

अमोघदण्डो मध्यस्थो हरिणो ब्रह्मवर्चसः।
परमार्थः परमाय संचयो व्याघ्रकोमलः।५५
रुचिर्बहुरुचिर्वैद्यो वाचस्पतिरहस्पतिः
रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्ता वैवस्वतो यमः ॥५६
युक्तिरुन्नतकीर्तिश्च सानुरागः पुरञ्जनः।
कैलासाधिपतिः कान्तः सविता रविलोचनः ॥५७

'अमोघ दण्ड:'—सफल दण्ड वाले। 'मध्यस्थ:'—न्याय में स्थित रहते हुए पक्षपात से रहित रहने वाले। 'हिरण:'—सुवर्ण अथवा तेज के स्वरूप में विराजमान। 'ब्रह्म वर्चस्वी'— ब्रह्म अथवा ब्रह्म की दीप्ति का प्रकाश वाले। परमार्थ.—मोक्ष स्वरूप अर्थ की सिद्धि प्रदान करने वाले। 'परोमायी'—उत्कृष्ट माया वाले। यहाँ दौनों एक ही हैं।

'शम्बर:'- परमोत्कृष्ट कल्याण के दाता किम्बा जल के स्वरूप में स्थित। 'व्याघ्र लोचन:'. अर्थात् बाघ के समान दुष्टों पर क्रूर नेत्र वाले ॥५५॥ 'रुचि:'-दीप्ति स्वरूप वाले। 'विरंच:'-ब्रह्माके स्वरूप में विराजमान 'स्वन्धु:'-स्वर्ग लोक में बन्धु भाव के रूप में फल प्रदान करने वाले। 'वाचस्पति:'-समस्त विद्याओं के स्वामी। ईशान: सर्व विद्यानाम्' इत्यादि श्रुति वचन उनके स्वामी होने का समर्थन करता है। 'अहर्पति:' सूर्य स्वरूप में स्थित। (४००) 'रवि:'-रसों को किरणों द्वारा ग्रहण करने वाले। विरोचन:'-अग्नि अथवा सूर्य स्वरूप में स्थित। स्कन्द:'-प्रभृत के रूप में सब में और वायुके रूप में शोषणकर्त्ता। 'शास्ता वैवस्वतो मुन:' सब पर शासन करने के लिये सूर्यपुत्र धर्मराज के तुल्य। यहाँ तीनों शब्दों के द्वारा एक ही को बतलाया जाता है। 'युक्तिरुन्नतकीर्ति:'-आठ अंगों वाले योग से युक्त किम्बा न्याय स्वरूप महती कीर्ति वाले। यहाँ दोनों एक हैं। 'सानुराग:'-भक्तों पर प्रीति रखने वाले। 'परञ्जय:'-शत्रुओं को युद्ध में जीतने वाले। कैलाआधिपति:'-कैलास गिर के स्वामी। 'कान्त:'-परम सुन्दर। 'सविता'-समस्त जगत् को प्रसूत करने। (४५०) 'रविलोचन:'-सूर्य रूपी नेत्रों को धारण करने वाले। 'अग्नि मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ:' इत्यादि श्रुतिका समर्थन यहाँ वचग है ॥५६॥

विश्वोत्तमो वीतभयो विश्वभर्ता:।
नित्यो निगत कल्याण:पुण्यश्रवणकीर्तन: ॥५८
दूरश्रवो विश्वसहो ध्येय दु:स्वप्ननाशन:।
उत्तारणोदुष्कृतिहा विज्ञोयो दु:सहो धव:॥५९
अनादिर्भू वोलक्ष्मी:किरीटी त्रिदशाधिप :।
विश्वगोप्ता विश्वकर्ता सुवीरो रुचिरांगद:॥६०

'विश्वोत्तमः' शतिशय श्रेष्ठता से युक्त। 'वीतभयः'—संसार के समस्त भय से शून्य। 'विश्वभर्त्ता'—समस्त विश्व के भरण-पोषण करने वाले। 'अनिवारितः'-कर्मफल देने में किसी के भी द्वारा न निवारण करने के योग्य। 'नित्यः'- उत्पत्ति एवं विनाश से रहित सर्वदा एक रस रहने वाले। -नियत कल्याणः'—निश्चित कल्याण से युक्त। 'पुण्य श्रवण कीर्तनः'—परम पावन श्रवण और कीर्त्तन वाले ॥५८॥ 'दूरश्रवाः'-सुदूर देश में भी श्रवण करने वाले। 'विश्वसहः'—संसार के सहने वाले (४६०)। 'ध्येयः'— ध्यान तथा विचार करने योग्य। 'दुःस्वप्न नाशनः' —बुरे दिखलाई देने वाले स्वप्नों के नाशक। 'उत्तारणः'— संसार से पार कर देने वाले। 'दुष्कृतिहा'-दुष्टों के नाश करने वाले। 'विक्षेपः'— विशेष रूप से जानने के योग्य। 'दुःसहः'- दुख के साथ भी असुरादि के द्वारा सहन न करने योग्य। 'अभवः'—जन्म से रहित ॥५९॥ 'अनादिः'—सब चराचर के कारण होने आदि से रहित। 'भूर्भुवो लक्ष्मीः'--भूर्भुवस्वःस्वरूप लोक की लक्ष्मी की आत्म-विद्या वाले 'किरोटी' —किरीट नामक शिरोभूषण धारण करने वाले। (४४०)। 'त्रिदशाधिपः' देवगण के स्वामी। 'विश्वगोप्ता'-समस्त जगत् के रक्षक। 'विश्व कर्त्ता'—इस जगत् के उत्पन्न करने वाले। 'सुवीरः'—अनेक तरह की गति वाले। 'रुचिरांगदः' सुन्दर बाजूबन्द धारण करने वाले ॥६०॥

जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्ध्रुवः ।
वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः ॥६१
प्रणवः सत्यथाचारी महाकोशो महाधनः ।
जन्माधिपो महादेवः शकलागमपारगः ॥६२
तत्वं तत्वविदेधात्मा विभूर्विष्णुविभूषणः ।
ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्य्य जन्ममृत्युजरातिगः ॥६३

'जनन'-समस्त प्राणियों की उत्पत्ति करने वाले। जन-जन्मादिः'-समस्त प्राणियों के जन्म के आदि कारण। 'प्रीतिमान्'-नित्यही प्रीतिसे पूर्ण। 'नीतिमान्'- सर्वदा नीति से युक्त। 'ध्रुवः'-सबके स्वामी।४८०। 'वसिष्ठाः'-प्रलय के समय में भी विद्यमान। 'कश्यपः'-कश्यप नामक ऋषि के स्वरूप में अवस्थित। 'भानुः'-प्रकाश से युक्त। 'तमेव भान्तमनु भागि सर्वम्'- इत्यादि

श्रुति का वचन भी यहाँ इसका प्रतिपादक है। 'भीमः'—दुष्टों के लिये भय कारणस्वरूप। 'भीम पराक्रमः'—असुरादि दुरात्माओं को भययुक्त पराक्रम वाले ॥६१॥ 'प्रणवः'—ओंकार स्वरूप। शिव अथर्वशीर्ष में लिखा है—'अथ कस्मादुच्यते प्रणवो यस्मादुच्चार्यमाण एवर्चो यजूंषि सामान्यथर्वांगिरसश्च यज्ञे ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणमयति तस्मादुच्यते प्रणवः'। अर्थात् ओङ्कार कणव क्यों कहा जाता है—वह प्रश्न पूर्वक उत्तर में कहते हैं कि जिससे ऋचाओं यजुवद के तथा सामानि अथर्वाङ्गिरसम् के मन्त्रों के उच्चार्यमाण होने पर यज्ञ में ब्रह्म-ब्राह्मणों के लिये प्रणाम करवाता है अतएव इसे 'प्रणव' कहते हैं।

'सत्याद्याचारः'--अर्थात् सन्मार्ग में गमन करने वाले। 'महाकोशः'—अन्नमय प्रभृति महाकोशों से युक्त। 'महाधनः'—असीम धनैश्वर्य वाले। 'जन्माधिपः'—जन्म और उत्पत्ति के स्वामी। (४००)। 'महादेवः'—समस्त भावों को त्यागते हुए आत्म ज्ञान के ही ऐश्वर्य में पहुँचने से महान् देव हैं। 'सकलागमपारगः'-सम्पूर्ण वेदों के अन्त तक ज्ञान रखने वाले ॥६१॥ 'तत्वमू-ब्रह्म के स्वरूप में स्थित। 'तत्ववित्'—ब्रह्म के स्वरूप को ठीक-ठीक जानने वाले। 'एकात्मा'—एक ही आत्मा स्वरूप। 'आत्मा वा इदनेव एवाग्र आसीत्'—इत्यादि श्रुदि वचन उक्तार्थ का पूर्ण पोषक है। 'विभुः'—सबमें व्यापक। 'विश्वभूषणः'—जगत् के भूषण अथवा जगत् के आभरण वाले। 'ऋषिः'—इन्द्रियों से पर ज्ञान रखने वाले अर्थात् जो अगोचर है उसे भी जानने वाले। यहाँ 'विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः'—इत्यादि वेद वाक्य इसको प्रमाणित करता है। 'ब्राह्मणः'—उत्तर वर्ण स्वरूप। ऐश्वर्य जन्म मृत्यु जरातिगः'—अपने ऐश्वर्य से जन्म प्रभृति षट् विकारों का अतिक्रमण करने वाले शिव हैं। (५००)। (यहाँ पाँचवाँ शतक समाप्त हो गया)॥ ६३॥

पञ्चतत्व समुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः।
अनाद्यन्तो ह्यात्मयोनिर्वत्सलो भूतलोकधृक् ॥६४
गायत्रीवल्लभः पार्शविश्वावासः प्रभाकरः।
शिशुर्गिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा॥
अनेमिरिष्टनेमिश्च मुकुन्दो विगतज्वरः।
स्वयंज्योतिर्महाज्योतिस्तनुज्योतिरचंचलः ॥६६

'पञ्चयज्ञ समुत्पत्तिः'–देवादि पञ्च यज्ञों की उत्पत्ति करने वाले। 'विश्वेशः'—समस्त विश्व के स्वामी। 'विमलोदयः'—समस्त मङ्गलोंके उदय करने वाले। आत्मयोनिः'—सब चराचरके कारण स्वरूप। अनाद्यन्तः' –आदि तथा अन्त दोनों से रहित। वत्सलः'–सब पर प्यार करने वाले अर्थात् प्रिय। 'भक्तलोकधृक्'-भक्तजनों के धारण करने वाले ॥६४॥ गायत्री वल्लभः' शिव गायत्री रूपिणी प्रिया वाले। प्रांशुः'—सुषुम्ना प्रभृति किरणों के प्रकृष्ट स्वरूप से युक्त। 'विश्वावासः'—संसार में व्याप्त। (५१०)

'प्रभाकरः'–अत्यन्त दीप्ति का प्रकाश करने वाले। 'शिशुः'—बालक के स्वरूप में स्थित रहने वाले। इस सम्बन्ध में एक कथा लिंग पुराण में पार्वती स्वयम्वर के प्रकरण में लिखित है। 'गिरिशः' —कैलास पर्वत के निवास को प्रिय समझने वाले। 'सम्राट्'—सबके अधिपति प्रभु किम्बा नियन्ता। 'सुषेणः सुरशत्रुहा'– गणों की एक विशाल एवं सुन्दर सेना के स्वामी और देव शत्रुओं के संहारक। यह दोनों एक ही हैं। 'अमोघोऽरिष्टनेमिः'–स्तुति करने पर प्रसन्न होकर सब कुछ फल देने वाले। 'सत्यसंकल्पः'–यह श्रुति इसको प्रमाणित करती है। शुभाशुभ फल दान रूपी—अर्थात् शुभ और बुरे फलों के दान करने वाले स्वरूप में स्थित। ये दोनों शब्द एक ही हैं। 'कुमुदः'—भार को हटाकर पृथ्वी को परम प्रसन्नता देने वाले। यहाँ मुकुन्दो मुक्तिदः'–ऐसा पाठान्तर मिलता है।

'विगतज्वरः'–समस्त तापों के सन्ताप से पृथक् रहने वाले। 'स्वयं ज्योतिस्तनु ज्योतिः'-स्वप्रकाशात्मक सूक्ष्म तेज के स्वरूप वाले शिव हैं। यहाँ 'नीवार शूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा। तस्याः शिखाया मध्ये च परमात्मा व्यवस्थितः'-इत्यादि श्रुति वचन से से इस उक्तार्थ की पुष्टि स्पष्ट है। ये दोनों एक ही हैं। 'आत्मज्योतिः'—आत्मा स्वरूप ज्योति वाले। 'येन सूर्यः पति तेजसद्धः'—इत्यादि श्रुति के वचन से यह समर्थितार्थ है। (५२०)। 'अचञ्चलः' स्थिर स्वरूप वाले। 'वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठति'—इत्यादि श्रुति वाक्य है जिससे स्थिरता की पुष्टि हो जाती है ॥६५–६६॥

पिङ्गलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः।
ज्ञानस्कन्धा महानोतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ॥६७

भयो विवस्वानादित्यो गतपारो बृहस्पतिः ।
कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः ॥६८
उदारकीर्त्तिरुद्योगी सद्योगी सदतत्त्वप, ।
नक्षत्रमाली नाकेशः' स्वाधिष्ठानः षडाश्रय ॥६९

पिंगलः'-बाघ के चर्माम्बर धारण करने के कारण पिंगल वर्ण वाले । 'कपिलश्मश्रुः'-पिंगल वर्ण की दाढ़ी-मूंछ रखने वाले । 'भाल-नेत्रः-मस्तक में तृतीय नेत्र रखने वाले । 'त्रयी तनुः'—बेदमय शरीर के धारी । 'ज्ञान स्कन्दो महानीतिः'-अर्थात् ज्ञान के दान द्वारा भक्तों को मोक्षदाता और संसार रूपी समुद्र के शोषक । इस जगत् स्वरूप यन्त्र की निर्वाह साधन करने वाली नीति रखने वाले प्रभु शिव हैं । 'विश्वो-त्पत्तिः'—इस समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाले । उपप्लवः'—दुष्टों को पीडित करने वाले ।

'भगोविवस्वानादित्यः'-भग-विवस्वान् और आदित्य देवों के स्वरूप रखने वाले । यहाँ ये तीनों शब्दों के द्वारा एक ही शिव का नाम होता है । 'योगपारः'-योग के साँग ज्ञान रखने से सम्पूर्णता वाले । 'योगाधारः' अर्थात् योग के पूर्ण आश्रय ऐसा ही पाठान्तर होता है । (५३०) । 'दिवस्पतिः'—स्वर्ग के स्वामी इन्द्र के स्वरूप वाले । 'कल्याण गुणनामा' शिव शम्भु आदि मंगल वाचक नामों वाले । 'पापहा'-भक्तों के पापों का नाश करने वाले । 'पुण्य दर्शनः'—परम पावन पुण्यस्वरूप दर्शन वाले । ६७-६८।

'उदार कीर्त्तिः'—वन्दनीय सुन्दर कीर्त्ति वाले । 'उद्योगी'—जगत् को सृष्टि-रचना करने के कार्य में अतिशय उद्योग करने वालो । 'सद्योगी' सर्वदा सुन्दर योग के साधन में परायण । 'सदसन्मयः-भले बुरे इस जगत् के स्वरूप में अवस्थित । 'नक्षत्र माली'—आकाश के स्वरूप में विराजमान होकर नक्षत्र रूपी मालाओं के धारण करने वाले । 'नाकेशः' स्वर्ग के अधिपति । कही 'लोकेश'-ऐसा भी पाठान्तर मिलता है (५४०) 'स्वाधिष्ठान षडाश्रयः'-निज स्वरूप में लय स्थान वालों के आधारभूत ।६९

पवित्रः पापनाशश्च मणिपूरो नभोगतिः ।
हृत्पुण्डरीकमासीनः शकः शान्तिर्वृषाकपिः ॥७०

उष्णो गृहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः ।
अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः ॥७९
ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ।
जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः ॥७२

पवित्रः पापहारी'—परम पुनीत और भक्तों के पापों के हरण करने वाले । 'मणिपूर'-रत्नादि के द्वारा भक्तों के मनोरथों को पूर्ण करने वाले । 'नभोगति'-आकाश में विचरण करने वाले । 'हृत्पुण्डरीकमासीन'-योगिजनों के हृदय रूपी कमलमें सर्वदा निवास करने वाले । 'शक्र'-इन्द्र के स्वरूप में स्थित रहने वाले । 'शांतः'-सर्वदा शांतिमय स्वरूप वाले । वृषाकपिः'—धर्म की स्थिरता रखने के कारणभूत ॥७०॥ 'उष्ण' हलाहल महा विष के पान करने के कारण उष्णता से पूर्ण । 'गृहपतिः-सब गृहों के पालन करने वाले । (५५०) । 'कृष्णः'-काले कंठ वाले अथवा कृष्ण गोचर स्वरूप । 'समर्थः'-समस्त कार्यों के करने की सामर्थ्य वाले । अनर्थ नाशनः-संसार के समस्त दुःखों का नाश करने वाले ।

'अधर्म शत्रु'-अधर्म करने में तत्पर पापियों के नाशक किम्बा दुष्टों पर शासन करने वाले । 'अज्ञेय'-योगिजन के द्वारा भी न जानने योग्य किम्बा अगम्य । 'पुरुहूतः पुरुश्रुतः'-बहुतों के द्वारा उपासना में रहने वाले । कहीं 'पुरुहूत पुरुश्रुतः'-ऐसा भी पाठान्तर है । अर्थात् बहुतसे गुरुओं के द्वारा श्रवण होने वाले । यहां ये दोनों एकही नाम बताने वाले हैं ॥७१॥ब्रह्मगर्भ' अपने गर्भ में वेदों की स्थिति रखने वाले । बृहद्गर्भः-इस महान् ब्रह्माण्ड को गर्भ में धारण करने वाले । 'धर्मधेनुः'-धर्मोत्पत्ति के स्थान स्वरूप । 'धनागमः'-समस्त प्रकार के धन-वैभव के आगम करने वाले । (५६०) । 'जगद्धितैषी'-इस समस्त जगती तलके कल्याण करनेकी कामना रखनेवाले । 'सुगतः'-संसार का मोह न करने के कारण भगवान् बुद्ध के स्वरूपमें अवतीर्ण होने वाले । 'कुमारः':बाल स्वरूप में स्थित किम्बा अपने सम्मुख कामदेवको पराजित कर देने वाले । 'कुशलागमः-'अर्थात् समस्त कल्याणों के प्रदान

हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ।
आराज्ञो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः ॥७३
ब्रह्मज्योतिर्वसुर्धामा महाज्योतिरनुत्तमः ।
मातामहो मातरिश्वानभस्वान्नागहारधृक् ॥७४
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ।
निरावरणनिर्वारो वैरञ्च्यो विष्टरश्रवाः ॥७५

'हिरण्य वर्णः'—स्वर्ण के समान कान्ति वाले । नमो हिरण्य वर्णाश्रुतेः' ये दोनों एक ही हैं । 'नानाभूत रतः'-- अर्थात् भूत पिशाचादि में रमणानन्द लेने वाले ।'ध्वनिः'—नारद स्वरूप वेषधारी । 'अरागः'—राग से रहित । 'नयनाध्यक्षः'—समस्त लोकों के नेत्रों वर्तमान रहेने के कारण चक्षुओं के प्रवर्त्तन कराने वाले । 'विश्वामित्रः'—अर्थात् विश्वामित्र नाम वाले गाधितनय के स्वरूप में प्रवस्थित ऋषि रूप वाले । (५००) 'धनेश्वरः'—कुवेर के स्वरूप में विराजमान । 'ब्रह्मज्योतिः'—सबको प्रकार देने वाले ब्रह्म स्वरूप । 'वसुधामा'—धन रूपी तेज वाले । महाज्योतिरनुत्तमः'--अति महान् तेज वाले होने के कारण सबसे परमोत्कृष्ट । ये दोनों एक हैं । 'मातामहः'---जगत् की माता के भी पिता । 'मातरिश्वान्'भास्वान्---वायु के स्वरूप में स्थित । 'नागहार धृक्'—सर्पों के हारों को धारण करने वाले ॥७३।७४॥ 'पुलस्त्य नामक ऋषि के स्वरूप में स्थित रहने वाले । 'पुलहः'— पुलह नामधारी ऋषि के स्वरूप में स्थित । 'अगस्त्यः'--अर्थात् अगस्त्य नाम वाले ऋषि के रूप में स्थित । (५८०) 'जातूकर्ण्यः'—जातूकर्ण्य ऋषि के स्वरूप में स्थित ।'पराशरः' पराशरके स्वरूप में रहने वाले । 'निसवरण निर्वादः' अर्थात् माया के वन्धन से परे होने के कारण चारण करने में अशक्य । 'निरावरण विज्ञानः'—कहीं ऐसा भी पाठान्तर होता है । 'वैरंच्यः'—अर्थात् ब्रह्मा के स्वरूप में प्रादुर्भूत । 'विष्टरश्रवाः'--विष्णु के स्वरूप में स्थित ॥७५॥

आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः ।
लोकनीराग्रणीर्वीरश्चन्द्रः सत्यपराक्रमः ॥७६
व्यालकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ।
अलकरिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः ॥७७

आयुः शब्दपतिर्वाग्मी प्लवनः शिखिसारथिः ।
असस्पृष्टोऽतिथिः शत्रुः प्रमाथी पादपासनः ।७८।

'आत्मभूः'—स्वयं प्रकाश स्वरूप । 'अनिरुद्धः'—किसी भी आदुर्भाव में कभी किसीके द्वारा निरुद्ध न होने वाले । 'अत्रि' अत्रि नामक ऋषि के स्वरूपमें स्थित । 'ज्ञान मूर्त्तिः'-ज्ञानके स्वरूप वाले । यहाँ 'सत्यज्ञान मनन्त ब्रह्म' इत्यादि श्रुति वाक्य इसका पोषक है । 'महायशाः' अतुल कीर्तिधारी । (५९० 'लोक वीराग्रणीः'लोक के वीर विष्णु आदि से भी परम श्रेष्ठ एवं प्रमुख । 'वीरः'—महान् शूर । 'चण्ड'-दुष्ट जीवों पर अत्यन्त क्रोध करने वाले । 'सत्य पराक्रम'—सफल शक्तिके धारणा करने वाले ।७६। 'व्याल कल्पः'-महाविषधर सर्पोंके भूषणोंसे विभूषित । 'महाकल्पः'--अत्यन्त सामर्थ्य वाले । कल्पवृक्षः—भक्तोंके मनकी कामनाओंको पूर्ण करने वाले । 'कलाधरः'—भक्तजनोंके मन प्रसन्न करने के कारण चन्द्रके स्वरूप वाले । 'अलङ्करिष्णु'—अलंकृत करने के कारण विशेष कान्ति वाले । 'अचलः'—स्थिर स्वरूप वाले । (६००) यहाँ भगवान् शिवके नामों का छठवाँ शतक समाप्त होगया है ।) 'रोचिष्णु'—अत्यन्त दीप्ति वाले । विक्रमोन्नतः'—नाना प्रकारके पराक्रमसे युक्त होने के कारण सबसे बड़े हैं ।७७। 'आयुः शब्दपतिः'—अर्थात् समस्त प्राणियों को आयु और वेदकी वाणीके नियन्त्रण करने वाले । 'वाग्मीप्लवनः'—अर्थात् बहुत शीघ्रताके साथ भक्तोंके सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाले । यहाँ ये दोनों एक ही को बताते हैं । 'शिखिसारथिः'-अग्नि की सहायता वाले । 'असस्पृष्ट'—अर्थात् माया के सब तरहके संसर्गसे शून्य । 'अथितिः'-अपने भक्तजनकी अर्चा अतिथिके स्वरूप से ग्रहण करने वाले । 'शत्रु प्रमाथि'—असुरोंको सेनाके विलोडन करनेमें पूरी तरह समर्थ । 'पादपासनः'—वृक्षके समीप अपना आसन जमाकर बैठने वाले ।।७८।।

वसुश्रवाः कव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः ।
जप्यो जरादिशमनो लोहितश्च तनूनपात् ।७९।
बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा ।

निदाघस्तपनो मेघभक्षः परपुरञ्जयः ।८०।
सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशरात्मकः ।
वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहना ।८१।

'वसुश्रवाः'—मधुर श्रवणसे युक्त । (६१०) 'हव्यवाहः'—देवगणों के समीप हविको प्राप्त कराने वाले अग्नि के स्वरूप में समवस्थित । 'प्रतप्तः'-उग्र तपस्या करने वाले । 'विश्वभोजनः'—समस्त विश्व का पोषण करने वाले । 'जप्य' – जप तथा उपासना करने के योग्य । 'जरादि शमनः'वार्धक्य-आदिकी पीड़ाको शान्त करने वाले । 'लोहितात्मा तनूनपात्'—भक्तोंके शरीरको न गिराने वाले रक्त वर्णसे युक्त अग्नि के स्वरूपमें स्थित । यह ये दोनों शब्द एक ही को बताने वाले हैं ।७९।

'वृहदश्व'—बड़े अश्वोंसे युक्त वाले । 'निभोयोनिः'—सभी के कारण होनेके कारण आकाशके भी कारण है । 'सुप्रतीक'–सुरम्य अवयवोंस संयुक्त । 'तमिस्र हो'—अज्ञानके अन्धकार को दूर भगा देने बाले । (६२०) 'निदाघस्तपन'-ग्रीष्मके और सूर्यके स्वरूपमें स्थित । ये दोनों एक ही हैं । 'मेघ'—मेघके स्वरूपमें विद्यमान रहने वाले । 'स्वक्ष'–परम सुन्दर नेत्रों वाले । पर पुरकजय'–शत्रुओंके पुरको जय करने वाले ।।८०।। 'सुखानिल' सुखप्रद वायुके समुत्पन्न करने वाले । 'सुनिष्पन्न'– इस परम सुन्दर जगत् को उत्पन्न करने वाले । 'सुरभिः शिशिरात्मकः'–अर्थात् अत्यन्त प्रसन्नता के प्रदान करने वाले शिशिर ऋतुके स्वरूप में स्थित । यहाँ दोनों एक ही हैं । वसन्तो माधव'–वकरन्दसे युक्त बसन्त ऋतु स्वरुप में स्थिर रहने वाले । 'ग्रीष्म' – समस्त रसोंके शोषण करने वाले ग्रीष्म ऋतुके स्वरूप में अवस्थित । 'नभस्य'–श्रावण मास में होने वाली वर्षा ऋतु के रूप मे संस्थित । (६३०) 'बीज वाहन'–धान्यकी प्राप्ति कराने वाले शरद और हेमन्त ऋतुओं के स्वरूप में स्थित ।।८१।।

अङ्गिरागुरुरात्रेयो विमलो विश्वाहनः ।
पावनः पुरजिच्छक्रस्त्रैविद्यो नववारणः ।८२।
मनोबुद्धिरहङ्कारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ।

जमदग्निर्जलनिधिर्विगालो विश्वगालवः ।८३।
अघोरोऽनुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसप्रदः ।
शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिररिन्दमः ।८४।

'अङ्गिरा'—अंगिरा नामक ऋषि के स्वरूप में स्थित रहने वाले। 'गुरुरात्रेयः'—दत्तात्रेय के स्वरूप में स्थित गुरु। यहाँ ये दोनों शब्द एक ही शिव के नाम को प्रकट करने वाले हैं। 'बिमलः'—मलसे रहित परम शुद्ध। 'विश्व वाहनः'—सम्पूर्ण जगत् के निर्वहन करने वाले। 'पावनः'—पापों का नाश कर पवित्र बना देने वाले। 'सुमतिर्विद्वान्'—श्रेष्ठबुद्धि वाले होने के कारण सभी कुछ के ज्ञाता। ये दोनों एक ही हैं। 'त्रैविद्यः'—ऋग्—यजु और साम—इन तीनों वेद विद्याओं के ज्ञाता। 'नरवाहनः'—यक्षराज कुबेर के रूप में स्थित ॥८२॥ 'मनोबुद्धिः'—मन के सहित बुद्धि स्वरूप। (६४०) 'अहङ्कारः'—अहंकार नामक तत्व के रूप में स्थित रहने वाले। क्षेत्रज्ञः—लिंग शरीर स्वरूप क्षेत्र के ज्ञाता। 'क्षेत्र पालकः'—सिद्ध स्थानों की रक्षा करने वाले। जमदग्निः'—जमदग्नि नाम वाले ऋषि के रूप में स्थित। 'बल निधिः—समस्त शक्तियों के अधिष्ठान स्वरूप में स्थित। 'बिगाल.'—मोक्षरूपी अमृत का विशेष रूप से स्रवण करने वाले। 'विश्वगालवः'—संसार में गालव नाम वाले ऋषि के स्वरूप में स्थित ॥८३॥ 'अधीरः'—धीरता से रहित होकर अति अभयंकर। 'अनुत्तरः'—सबसे महान् अर्थात् जिनके आगे अन्य कोई भी बड़ा नहीं है। 'यज्ञः'—ज्योतिष्टोम प्रभृति यज्ञों के स्वरूप वाले। (६५०) 'श्रेयः'—कल्याण स्वरूप वाले। 'निःश्रेयसां पथ-—समस्त कल्याणों के मार्ग स्वरूप। 'शैलः'—शिला से समुत्पन्न अर्थात् नर्मदा नदी में लिंगात्मक। 'गगन कुन्दाभ.'—गगन कुन्द के पुष्प के समान कान्ति वाले। 'दानवारि.'—दैत्य दानवों के संहारक। 'अरिन्दमः'—अपने भक्तजन के शत्रुओं के नाशक ॥८४॥

रजनी जनकश्चारुर्निःशल्यो लोकशल्यधृक्।
चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरप्रियः ।८५।
आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थदेवः शिवालयः।
बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः ।८६।

न्यायनिर्मायको नेयो न्यायगम्यो निरञ्जनः।
सहस्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशास्त्रप्रभंजनः ॥८७

'रजनी जनकः'— कालरात्री रूपिणी शक्ति के उत्पादक। 'चारु विशल्यः'—दुःखों से रहित रखने वाली सूक्ष्म बुद्धि से युक्त। 'लोक कल्प धृक्'—लोकों की-सृष्टि पुष्टि आदि के धारण करने वाले। 'लोक शल्य-धृक्' ऐसा भी कहीं पाठान्तर प्राप्त होता है। यहाँ लोकों के दुःखों का हर्त्ता अर्थ होता है। 'चतुर्वेदः'—चारों वेदों का प्रादुर्भाव करने वाले। (६६०)॥ 'चतुर्भावः'-धर्म अर्थ आदि चारों भावों को प्रकट करने वाले, चतुरश्चतुर प्रियः'—परम प्रवीण और कुशलों से प्रेम करने वाले। यहाँ दोनों एक ही नाम के बोधक हैं ॥८५॥ 'आम्नायः'—वेद स्वरूप। समाम्नायः-वेद के भी प्रमाणभूत किम्बा वह जिससे सबके प्रमाण स्वरूप वेद का प्राकट्य है अथवा वेद के तुल्य। 'तीर्थ देव शिवालयः'—तीर्थों में स्थित देवों के कल्याण के स्थान। 'बहुरूपः'—असंख्य स्वरूप वाले। 'महारूपः'--महान् एवं पूज्य स्वरूप के धारण करने वाले। 'सर्व रूपः'—जगत् की समस्त वस्तुओं के स्वरूप वाले। 'चराचरः'—अस्थित लक्ष्मी के आश्रय स्वरूप ॥८६॥

'न्याय निर्मायकों न्यायी'-सदा सत्पक्ष के निर्वाह करने वाले और नीति से युक्त। यहाँ दोनों एक ही नाम के बोधक हैं ॥(६७०)॥ 'न्याय गम्यः'—नीति से जानने के योग्य। 'निरन्तरः'—भेद से रहित। 'सहस्रमूर्धा--एक सहस्र अथवा असंख्य शिरों वाले। देवेन्द्रः--समस्त देवगण के स्वामी। 'सर्व शस्त्र प्रभंजनः' समस्त प्रकार के शस्त्रों के जोड़ने वाले ॥८७॥

मुंडी विरूपो विकृतो दंडी दानी गुणोत्तमः।
पिंगलाक्षो हि बव्हक्षो नीलग्रीवो निरामयः ।८८
सहस्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक्।
पद्मासनः परंज्योतिः पारम्पर्य्य फलप्रदः ॥८९
पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः।
परावरज्ञो वरदो वरेण्यश्च महास्वनः ॥९०

मुण्डः'--लुंचित केशों वाले। 'विरूपः'--सबसे श्रेष्ठ रूप—लावण्य

वाले। 'विक्रान्त'--अत्यन्त महान् बल-विक्रम वाले। 'दण्डी'--काल दण्ड को धारणा करने वाले। 'शान्त'--दमनशील अर्थात् इन्द्रियोंको जीतने वाले। (६८०) 'गुणोत्तम'--श्रेष्ठ गुण-गण से युक्त। 'पिङ्गलाक्षः'--पिंगल वर्णके नेत्रों वाले। 'जनाव्यक्ष'--समस्त मनुष्योंके स्वामी। 'नीलग्रीव'--हलाहल महाविषको कण्ठमें रख लेने के कारण नीले रंग की गर्दन वाले। 'निरामयः'--समस्त रोगोंसे शून्य अर्थात् परम स्वस्थ ।८८। 'सहस्रबाहु'--एक सहस्त्र अथवा असंख्य भुजाओं वाले। 'सर्वेश'--सबके अधिपति। 'शरण्य' सबके रक्षक अर्थात् शरणागति में समागतके पालक। 'सर्वलोकधक'--भू प्रभृति समस्त लोकोंके धारणकर्त्ता।, पद्मासन' विद्यासनसे विराजमान अथवा हृदय कमलमें पद्मासनसे स्थित। (६९०) 'पर ज्योति--सर्वाधिक तेज वाले। 'परम्पार'--संसार दुःखसे अत्यन्त खिन्नोंको पार लगा देने वाले। 'परं फलम्'--परम पुरुषार्थ (मोक्षपद) स्वरूप ।८९।

'पद्मगर्भ'--समस्त संसार को अपने गर्भमें रखने वाले अथवा हृदय कमलकी कणिका में उपासकोंके ध्यानके लिये विराजमान। 'महागर्भः'--महा वन्दनीय विराट् स्वरूप। 'विश्वगर्भ' सम्पूर्ण जगतको अपने गर्भ में रखने वाले। 'विचक्षणः'--विशेष रूपसे वेदादिके ज्ञान का कथन करने वाले। 'वरद'--भक्तोंको अभीष्ट वरदान देने वाले। 'वरेश'--वरदान के प्रदाताओंमें सर्वश्रेष्ठ (७००) (यहाँ श्री शिवके नामोंका यह सप्तम शतक समाप्त हो गया) 'महाबल' समस्त महा शक्तियोंके समुत्पादक ।९०।

देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः।
देवासुरमहामित्रो देवासुरमहेश्वरः ।९१।
देवासुरेश्वरो दिव्यो देव सुरमहाश्रयः।
देवदेवोऽनयोऽचित्यो देवतात्मात्मसम्भवः ।९२।
सद्योनिर्ह्यसुरव्याधो देवसिंहो दिवाकरः।
विबुधाग्रवरः श्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ।९३।

'देवासुर महाश्रयः' देवगण और असुर समूह के महान् आधार

स्वरूप से स्थित । देवासुर गुरुर्देवः'—देव और असुरों को उपदेश देने वाले वे भी ज्ञानदाता गुरु। यहाँ ये दोनों एक ही हैं। 'देवादिदेवः'—ब्रह्मादिक के भी उत्पन्न करने वाले देवों के आदि देव। 'देवाग्निः'—अग्नि को प्रकाशवान् करने वाले। 'देवाग्निसुखदः प्रभुः'—देवगण को अग्नि के द्वारा सुख प्रदाता और स्वतन्त्र। ये दोनों एक ही शिव नाम को बताते हैं ॥९१॥ 'देवासुरेश्वरः'-देवगण और मसुर वर्ग के स्यामी। 'दिव्यः'-अलौकिक उत्तम स्वरूप वाले। 'नेवासुरमहेश्वरः'—देवगण और असुरों के परम पूजनीय प्रभु स्वरूप । 'देवदेवमयः'—देवताओं के पूज्य देव ब्रह्मादि स्वरूप वाले ॥(७१०)॥

'अचिन्त्यः'—ध्यान करने पर भी चिन्तन में न आने वाले । 'देव देवात्म सम्भवः'—ब्रह्मादिक देवों के भी देवता जिस ब्रह्मा से समस्त जीवों की सृष्टि हुई है ॥९१॥ 'सद्योनिः'-संसार की समस्त वस्तुओं के कारण । ,असुर व्याघ्र'—असुरों के लिने बाघ के तुल्य भयंकर प्रहारक। 'देवसिंहः-देवगण में सिंह के सदृश। विवाकरः—दिन के बनाने वाले सूर्य स्वरूप। 'विबुधाग्रवर श्रेष्ठ हैं शिव उन ब्रह्मासे भी श्रेष्ठ हैं।९१।९३।

शिवज्ञानरतः श्रीमांछिखी श्रीपवेतप्रियः ।
वज्रहस्तः सिद्धखड्गो नरसिंहनिपातनः ।९४।
ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ।
नन्दी नन्दीश्वरोऽनन्तो नग्नवृत्तिधरः शुचिः ।९५।
लिङ्गाध्यक्षः सुराध्यक्षो युगाध्यक्षो युगापहाँ ।
स्वर्धामा स्वर्गतः स्वर्गी स्वर स्वरमय स्वन. ।९६।

'शिवज्ञानरतः'—अपने स्वरूप के ज्ञान में सदा तत्पर। 'श्रीमासे'-त्रवर्ण सम्पत्ति से युक्त होने वाले ॥७२०॥ 'शिखि श्री पर्वत प्रियः'—चूड़ाधारी कुमार कार्तिकेय के लिए श्री पर्वत से प्रेम करने वाले। यह कथा 'ज्योतिर्लिंग माहात्म्य' में देखनी चाहिए 'वज्रहस्तः'-हाथ में वज्र-व धारी इन्द्र के स्वरूप में स्थित। 'सिद्धिखड्गी'-समस्त सिद्धियों से सम-न्वितखड्गकोधारण करनेवाले।'नरसिंहनिपातनः'-शरभके रूपसेनृसिंहकाग

चूर-चूर करने वाले ॥९४॥ 'ब्रह्मचारी'—वेद में शील सम्पन्ना 'लोक चारी' —भूप्रभृति लोकों में विचरणशील। 'धर्मचारी'—धर्म के कार्य करने वाले। 'धनाधिपः'—समस्त प्रकार के धन वैभवों के स्वामी। 'नन्दी'--नन्दीश्वर नाम वाले अपने ही गण के स्वरूप में स्थित। 'नन्दी-श्वरूप नाम वाले अपने ही गण के स्वरूप में स्थित। 'नन्दीश्वर-'--नन्दियों के स्वामी ॥(७३०)॥ 'अनन्तः'--देश और काल के परिच्छेद से शून्य। 'नग्न व्रतधरः'—दिगम्बर रहने के वृत (नियम) को रखने वाले अर्थात् सब भूत वेष को धारण करने वाले। 'शुचिः'--सम्पूर्ण दोषों से हीन अर्थात् पुर्ण निर्दोष ॥९५॥ 'लिगाध्यक्षः'—वाण आदि लिग (चिन्ह) रूप में सबके अध्यक्ष अथवा लिग रूप देह में अधिष्ठित। 'सुराध्यक्षः' समस्त देवों के स्वामी। 'योगाध्यक्षः' योग शास्त्र के प्रव-र्तक परमाचार्य। 'युगावहः' – सतयुग त्रेता आदि युग प्रभृति की सम-यानुसार प्राप्ति करने वाले। 'स्वधर्मी'-जगत् की रचना करने के अपने धर्म से युक्त। 'स्वर्गतः' स्वर्ग में निवास करने वाले। 'स्वर्ग स्वरः' स्वर्ग लोक में गमन वाले। 'स्वरमयःस्वनः' षडज ऋषभादि संगीत के सात स्वरों के समुत्पत्ति कारक ध्वनि वाले ॥ ६॥

वाणाध्यक्षो बीजकर्त्ता कर्मकृद्धर्मसम्भवः।
दम्भो लोभोऽथ वै शम्भुः सर्वभूतमहेश्वरः ॥९७
श्मशाननिलयस्त्र्यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः।
लोकोत्तरस्फुटो लोकस्त्र्यम्बको नागभूषणः ॥९८
अन्धकारिर्मद्वेषी विष्णकन्धरपातनः।
हीनदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः षूषदन्तभित् ॥९९

वाणाध्यक्षः'—बाणासुर के अधिपति। 'बीजकर्त्ता'—शुक्रके उत्पा-दक। 'धर्मकृद्ध र्मसम्भवः'--परम पुण्य करने वालों के धर्म का प्रादुर्भाव करने वाले 'दम्भः'—अपने भक्तों की परीक्षा करने के लिये माया से विविध रूप धारण करने वाले। 'अलोभः' लोभ से रहित। 'अर्थ-विच्छम्भुः'–वेदशास्त्र आदि धर्म के ज्ञाताओं को सम्भावना करने वाले 'सर्वभूत महेश्वरः'—समस्त प्राणियों के सबसे बड़े स्वामी ॥९७॥ 'श्मशान निलयः'—समस्त मृत्युगत प्राणियों के महा अनिष्ठा स्वरूप महा द्रलय के नाशक स्थान में निवास करने वाले: 'त्र्यक्षः'—तीन नेत्रों को धारण करने वाले।.(७३०)॥

'सेतुः'—इस संसार रूप सागर से तारने के लिए सेतु रूप। 'अप्रतिमाकृतिः'—उपमा से शून्य आकृति वाले। 'लोकोत्तरस्फुटालोकः'—अति उत्तम आत्म-स्वरूप वाले जिसे नेत्रों के द्वारा ग्रहण किया जाता है। 'त्र्यम्बकः—तीन नेत्रों से युक्त। 'नागभूषणः' सर्पों के विविध भूषणों से भूषित जिनमें शेषनागादि प्रमुख सर्प भी हैं ॥९८॥ "अन्धकारिः'—अन्धक नामक दैत्य के मारने वाले। 'मखद्वेषी'—प्रजापति दक्ष के यज्ञ का विध्वंस करने वाले। 'विष्णु कन्धर पातनः'—दक्ष के यज्ञ में विष्णु के कन्धर का निपात कर देने वाले। 'हीनदोषः'विषमतादि दोषों से रहित। 'अक्षयगुणः'—नाशशून्य अनेक अद्भुत गुणगण से युक्त। (७९०)। 'दक्षारिः'—अपने श्वसुर दक्ष प्रजापति के शत्रु। 'पूषदन्तभित्' पूषा के दाँतों के तोड़ने वाले ॥९९॥

पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः।
सन्मार्गपः प्रियो धूर्त्तः पुणकीर्त्तिर नामयः ॥९००
मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो नियमेश्वरः।
जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ॥१०१
सद्गतिः सिद्धदः सिद्धः सज्जातिः खलकंटकः।
कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः ॥१०२

'पूर्णः'— सम्पूर्ण कलाओं से युक्त। 'पूरयिता'—सबको अतुल सम्पति प्रदान कर पूर्ण बना देने वाले। 'पुण्यः'—स्मरण मात्र से पापों से छुटकारा देने वाले। 'सुकुमारः'—स्कन्द के सदृश सुन्दर पुत्र वाले। 'सुलोचनः'—सुन्दर नेत्रों वाले। 'सामगेय प्रियः'—सामवेद का गायन करने वालों को अत्यन्त प्रिय लगने वाले। 'अक्रूरः'--क्रूरता से रहित। 'पुण्य कीर्त्तिः' पाप नाशक यश वाले। (७८०)। 'अनामयः'—व्याधियों से रहित ॥१००॥ 'मनोजवः'—भक्तों के दुःख दूर करने के कार्य में मन के समान वेग वाले। 'तीर्थकरः'—शास्त्रों के प्रमाणों के निर्माता। 'जटिलः'—शिर पर सुन्दर जट जूट धारण करने वाले। 'जीवितेश्वरः'—समस्त प्राणियों को प्राणों का दान करने वाले स्वामी। 'जीवितान्तकरो नित्यः'-सब प्राणियों के संहारक तथा नित्य। 'ब्रसुरेताः' सुवर्ण के वर्ण तुल्य वीर्य वाले। 'वसुपदः'—अपने भक्तों के विविध

रत्नों को प्रदाता ॥१०१॥ 'सद्गतिः'—प्राणियों को अव्यभिचारिणी अच्छी गति के प्रदान करने वाले अथवा ब्रह्मादि सन्तों के द्वारा प्राप्त होने वाले। यहाँ पर 'सन्तमेनं ततो विदुः'— इत्यादि श्रुति का वचन इस अर्थ को प्रमाणित करता है। 'संस्कृतिः— जगती तल के रक्षक करने वाली आकृति से युक्त (७९०)। 'सिद्धिः'—समस्त वस्तुओं में संचित रूप अथवा अत्यन्त फल रूप। 'सज्जातिः'—साधु लोगों की जाति को जन्म देने वाले। 'कालकण्टकः'—काल के भी वेधन करने वाले। 'कलाधरः' शिल्पादि चौंसठ कलाओं से युक्त। 'महाकालः'—काल के भी काल। भूत सत्य परायणः'— समस्त प्राणियों के परम आश्रय ॥१०२॥

लोकलावण्यकर्त्ता च लोकोत्तरसुखालयः।
चन्द्रसंजीवनः शास्ता लोकग्राहो महाधिपः ॥१०३
लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कृत्तिभूषितः।
अनपायोऽक्षरः कान्तः सर्वशास्त्रभृतां वरः ॥१०४
तेजोमयो द्युतिधरो लोकमानी घृणार्णवः।
शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा ह्यजेयो दुरतिक्रमः॥१०५

'लोक लावण्य कर्ता—लोकों की सुन्दरता के निर्माता। 'लोकोत्तर सुखालयः'—सबसे उत्कृष्ट सुख- सौभाग्य को अपने अधीन रखने वाले। 'चन्द्र संजीवनः'--चन्द्र को संजीवन देकर लोक-पीड़ा के नाशक। 'शास्ता'—दुराचारियों को शिक्षा देने वाले। (८००) यहाँ शिव के नामों का अष्टम शतक समाप्त हो गया। 'लोक गूढः' मानवों की बुद्धि रूपिणी गुहा के आश्रय होने कारण अप्रत्यक्ष। 'महाधिपः'— सबसे महान् स्वामी ॥१०३॥ 'लोकबन्धु'— लोकों के लिये बन्धु के तुल्य। 'कृत्य' जोकि श्रुति और स्मृति के स्वरूप में स्थित हैं, उसको हिताहित के रूप में उपदेश करने वाले। 'लोकनाथः'— चौदह भुवनों के ईश्वर। 'कृतज्ञः- प्राणियों के द्वारा किये हुये पुण्य और अपुण्य कर्मों के ज्ञाता। कीर्ति- 'भूषणः'- यश रूपी भूषण से विभूषित। अनपायोक्षरः'- नाशरहित होने के कारण नित्य स्वरूप। यहाँ दोनों एक ही नाम को बताते हैं। 'कान्तः'- यमराज के भी नाशक। 'सर्वशस्त्र भृतां वरः'- समस्त शस्त्रधारियों में अति श्रेष्ठ ॥१०४॥ 'तेजोमयो द्युतिधरः'- अतिशय तेज की कान्ति के धारण करने वाले। (८१०)

'लोकानामग्रणीः'—सब लोकों में परम श्रेष्ठ। अणूः'—अत्यन्तसूक्ष्म स्वरूप। यहाँ 'एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः'—इत्यादि श्रुति बचन है जो इस अर्थ वाले नाम को बताता है। 'शुचिस्मितः'—मन्द हास से युक्त। 'प्रसन्नात्मा'—प्रसाद युक्त स्वभाव वाले। 'दुर्जयः,—महा—बलवान् शत्रुओं के द्वारा भी न जीते जाने वाले। 'दुरतिक्रमः'—दुख से भी अतिक्रमण के अयोग्य अर्थात् भय के कारण सूर्तादि को भी भीति देने वाले। यहाँ 'भयादस्माद वातः पवते भयात्तपतिः सूर्य भया—दिन्द्रश्चाग्निश्च मृत्युर्धावति पर्जन्यः'—इत्यादि श्रुति का वाक्य प्रमाण है ॥१०५॥

ज्योतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः ।
तुम्बवीणो महाकोपः विशोकः शोकनाशनः ॥१०६
त्रिलोकपस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः ।
अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशांपतिः ॥१०७
परः शिवो वसुर्नासासारो मानधरो मयः ।
ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः ॥१०८

'ज्योतिर्मयः'— तेज के पुंज। 'जगन्नाथः'-अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों के अधीश्वर। 'निराकारः'- बिना आकार वाले अथवा निर्गुण स्वरूप। 'जलेश्वरः'- भौतिक जल अथवा सुर नदी भागीरथी के स्वामी। (८२०)। तुम्बवीणः' तुम्बी फल की निर्मित वीणा से युक्त। 'महाकोपः'- सृष्टि के सहार करने की बेला में महान् क्रोध करने वाले। 'शोकनाशनः'- भक्तों के शोक नाश करने वाला ॥१०६॥ 'त्रिलोकपः- त्रिभुवनों के पालक। त्रिलोकेशः'- त्रिभुवन को अपनी आज्ञा से कर्मों में प्रवृत्त कराने वाले प्रभु। 'सर्वशुद्धिः'- समस्त प्राणियों की शुद्धि करने वाले। 'अधोक्षजः'- इन्द्रिय जन्य ज्ञान को नीचे पतित करने वाले। 'अव्यक्त लक्षणो देवः'—अस्पष्ट चिन्ह वाले तेज पुंज के स्वरूप में अवस्थित देव। यहाँ दोनों एक ही के बोधक हैं। 'व्यक्ताव्यक्तः'—साकार स्वरूप में गुण- उपाधि व्यक्त होते हुये भी निर्गुण निराकार रूप होने से अव्यक्त। (८३०)। 'विशांपतिः'—समस्त प्रजा के पालक स्वामी ॥ १० ॥ 'वरशीलः'—सर्वोत्तम शीलयुक्त किम्बा

श्रेष्ठ शील के दाता। 'वरगुणः'—सर्वश्रेष्ठ गुण-गण से अलंकृत। 'मारो-मानधनः' अत्यन्त बल वाले और दुष्टों के नाश करने के मान को धन समझने वाले। यहाँ दोनों एक ही हैं। 'मयः'—सुख के स्वरूप में स्थित। 'ब्रह्मा'—अपनी विभूति रूप चतुरानन के स्वरूप में स्थित करने वाले। 'विष्णुः प्रजापालः'—व्यापक होते हुए प्रजा का शासन करने के कारण विष्णु स्वरूप में स्थित। ये दोनों एक ही नाम के बोधक हैं। 'हसः'—अज्ञान के नाश करने वाले परमात्मा के स्वरूप में विराजमान। 'हँस-गतिः'—योगिजन की गति अर्थात् उद्धारक। 'वयः'—पक्षी के स्वरूप में स्थित। यहाँ 'एकः सुपर्णः स समुद्रमाविवेश स इदं विश्वं भवन विचष्ठे द्वा सुपर्णा'—इत्यादि श्रुति वचन प्रमाण है ॥(८४०) ॥१०८॥

वेधाविधाता धाता च सृष्ठा हर्त्ता चतुर्मुखः।
कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः। १०९
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथ भूपतिः।
सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्रह्माणप्रियः॥ ११०
देवप्रियो देवनाथो देवकी देवचिन्तकः।
विषमाक्षो विरूपाक्षो वृषदो वृषवर्द्धनः॥ १११

'वेधा विधाता धाता'—शिव इस जगत् की उत्पत्ति करने के कारण वेधा नाम वाले, सांसारिक मानवों के कर्म तथा उनके फल का दान करने के कारण विधाता कहे जाते हैं और विविध रूप से समस्त जगत् को धारण करने के कारण धाता हैं। यहाँ ये तीनों शब्द एक ही नाम के बोधक होते हैं। 'सृष्टा' संसार को उत्पन्न करने वाले। 'हर्त्ता'—जगत् के संहारक। 'चतुर्मुखः'—हिरण्य गर्भ के स्वरूप से अवस्थित कैलासशिखरवासी'—कैलास नामक गिरि की चोटी पर निवास करने वाले। 'सर्वावासीः'—सब में अन्तर्यामी स्वरूप से वास करने वाले। सदागतिः'—सब जीवों को गति देने वाले ॥१०९॥

'हिरण्य गर्भः'—हिरण्य गर्भ को उत्पन्न करने वाले किम्बा हिरण्य-मय में व्याप्त होने से हिरण्यगर्भ अथवा ब्रह्मा के स्वरूप में अपनी ही आत्मा से स्थित। यहाँ 'हिरण्यगर्भ' समवर्त्तताग्रेः—इत्यादि श्रुति वचन उक्तार्थ को प्रमाणित करता है। द्रुहिणः'—ब्रह्मा के स्वरूप में

स्थित। 'भूतपालः'—प्राणियों के पालक ॥ (८५०) ॥ 'भूपतिः'—भूमि के स्वामी। 'सद्योगी'---सत्कर्मों की योजना करने वाले। 'योग-विद्योगी'--योग के पूर्ण ज्ञाताओं को भी योग में प्रवृत्त कराने वाले। 'वरदः'--प्राणियों को वरदान देने वाले। 'ब्राह्मणप्रियः'-- विप्रों पर अत्यधिक प्यार करने वाले किम्वा विप्रों को प्रिय लगने वाले ॥ ११० ॥ 'देवप्रियः'--देवगण के प्यारे अथवा देवों पर प्यार करने वाले। 'देवनाथः'---देवगण के स्वामी।

'देवज्ञः'---देवों को ज्ञानी बनाने वाले। 'देव चिन्तकः'--देवताओं के द्वारा चिन्तित होने वाले। 'विषमाक्षः'--विषम अर्थात् तीन नेत्र वाले। (८६०) 'विशालाक्षः'--बड़े नेत्रों वाले। 'वृषदो वृष वर्द्धनः'—उपदेशक के द्वारा धर्म के वर्धक तथा जिनसे धर्म समृद्ध होता है। यहाँ दोनों एक ही हैं ॥ १११ ॥

निर्ममो निरहङ्कारो निर्मोहो निरुपद्रवः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वर्तु परिवर्त्तकः ॥११२
सहस्रार्चिर्भूतिभूषः स्निग्धाकृतिरदक्षिणः ।
भूतभव्यभवन्नाथो विभवो भूतिनाशनः ॥११३
अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः ।
निष्कंटकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः ॥११४

'निर्ममः'—ममता के भाव से शून्य। 'निरहङ्कारः'—अहङ्कार से रहित। 'निर्मोहः'—बिना मोह वाले। 'निरुपद्रवः'—उपद्रवों से रहित। 'दर्पहा दर्पदः'—सबके अभिमान का हनन करने वाले तथा शत्रुओं के दर्प के दलनकर्त्ता। ये दोनों एक ही हैं। 'दृप्तः'—अपने ही आत्मा के सुधार-सास्वाद से सदा परम प्रसन्न। 'सर्वर्तु परिवर्त्तकः'—समस्त ऋतुओं के परिवर्तनकर्त्ता ॥ १२ ॥ 'सपत्नजित्'—अनन्त असंख्य शत्रुओं पर जय प्राप्त करने वाले। (८७०) 'सहस्रार्चिः'—असंख्य दीप्तियों से युक्त। 'स्निग्ध प्रकृति दक्षिणः'—स्वाभाविक स्नेह के कारण कुशल एवं सरल। 'भूत भव्य भवन्नाथः'—त्रिकाल के स्वामी। 'प्रभवः'—संसार को अकृष्टता से उत्पन्न करने वाले। 'भूति नाशनः'—शत्रुओं की सम्पत्ति के नाशक ॥११३॥ 'अर्थः'—सबके द्वारा प्रार्थनीय। 'अनर्थः'—सब प्रकार के प्रयोजनों से रहित। 'महाकोशः'—महान् धन सम्पन्न।

परकार्यैकपण्डितः'—मोक्ष प्रदान करने के कार्यमें महापण्डित। 'निष्कण्टक;'—कामादि क्षुद्र शत्रुओं से रहित। (८८०) कृताधुन्दः'—अविच्छिन्न परमानन्द से युक्त। 'निर्व्याजो व्याज मर्दनः'—स्वयं कपट के दूषित भाव से दूर रहते हुए अन्य के कपट के नाशक। ये दोनों एक ही हैं॥ ११४॥

सत्यवान्सात्त्विकः सत्यः कृतस्नेहः कृतागमः।
अकम्पितो गुधाग्रहो नैकात्मा नैककर्मकृत् ॥११५
सुप्रीतः सुखदः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः।
नन्दिस्कन्ध धरो धुर्य्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः॥ ११६
अपराजितः सर्वसहो गोविन्दः सत्त्ववाहनः।
अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः॥ ११७

'सत्त्ववान्;'-शौर्य वीर्यादि गुणों से युक्त। 'सात्त्विकः'—सत्त्व गुण की प्रधानता रखने वाले। 'सत्य कीर्त्तिः'—वास्तविक कीर्ति से युक्त। 'स्नेह कृतागमः'—अपने भक्तोंपर अमित स्नेह होने के कारण उनके हित के लिये ही शास्त्रों का प्रकाश करने वाले। 'अकम्पितः'—कम्पसे रहित अर्थात् निश्चल। 'गुणग्राही'—अपने भक्तजनों के सामान्य गुणों को भी आदर से ग्रहण कर कृपा करने वाले। 'नैकात्मा नैक कर्मकृत्'-अनेक स्वरूपों से युक्त तथा समस्त कर्मों के कर्त्ता ॥११५॥ सुप्रीत;-श्रेष्ठ प्रीति से युक्त रहने वाले। 'सूक्ष्मः'—अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूपसे सब में व्याप्त रहने वाले। यहाँ सर्वगतं सुसूक्ष्मम्: इत्यादि श्रुति वाक्य इस कवितार्थ में प्रमाण हैं। 'सुकरः'- भक्तों को वरदान देने के कारण सुन्दर कर (हाथ) वाले। 'दक्षिणानितः'—आनन्द करने के कारण मलयाचल से समात वायु के स्वरूप में अवस्थित।

'नन्दिस्कन्धधरः'—नन्दी के कन्धे पर विराजमान। धुर्यः—समस्त प्राणियों के जन्म प्रभृति लक्षणों को धारण करने वाले। प्रकट;-सूर्यादि के स्वरूप से सबको प्रत्यक्ष दर्शन देने वाले। यहाँ पर –उतैन गोपा अदृशन्ना दहार्य –यह श्रुति का वाक्य है जो उक्तार्थ का समर्थन करता है। 'प्रीति वर्द्धनः'–भक्तों के प्रेम को बढ़ाने वाले॥११६॥ 'अपराजितः'–शत्रुओं से कभी भी न हारे जाने वाले।

'सर्वसत्त्वः'—समस्त प्राणियों का उद्भव करने वाले। (९००) यहाँ श्री शिव के नाम का नवम शतक समाप्त हो गया है।)'गोविन्दः'—स्वर्ग अथवा गो-भक्तों को देने वाले। 'सत्त्व वाहनः'—मोक्ष के उपयोगी पराक्रम के प्रदाता। 'स्वधृतः'—अपनी आत्मा से धारण किये हुए। 'अधृतः'—अनन्य आधार। 'सिद्धः'—समस्त प्रकार की सिद्धियों से पूर्ण। 'पूतमूर्त्तिः'—पवित्र एवं विशुद्ध मूर्ति वाले। 'यशोधनः'—यश रूपी धन से सम्पन्न॥११७॥

बाराह शृङ्गधृक् ऋङ्गी बलवानेकनायकः।
श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेक धृक्॥ ११८
श्रीवत्सलः, शिवारम्भः शान्तभद्रः समो यशः।
भूशयो भूषणो भूतिर्भूतिकृद् भूतभावनः॥ ११९
अकपो भक्तिकायस्तु कालहानि कालविभुः।
सत्यव्रती महात्यागी नित्यः शान्ति परायणः १२०

'वाराह शृङ्ग धृक्छृङ्गी'—वाराह का दन्त शिखर तथा शृङ्ग धारण करने वाले शृङ्गी। ये दोनों एक ही नाम को व्यक्त करते हैं। 'बलवान्'—सब प्रकार की शक्तिसे युक्त। 'एक नायकः'—अद्वितीय स्वामी॥९१०॥ 'श्रुति प्रकाशः'—वेदों के द्वारा प्रकाशित। यहाँ-तत्त्वौपनिषदं पुरुष पृच्छामि' इत्यादि श्रुति वाक्य इसको प्रमाणित करता है।

'श्रुतिमान्'—सर्वदा वेदों से युक्त। 'एकबन्धुः'—अद्वितीय बन्धु। 'अनेककृत्'—अपने आपके स्वरूप को अनेक बना लेने वाले। यहाँ पर 'बहुस्यां प्रजायेति तदात्मानं स्वयम् कुरुत' इत्यादि वेद बचनसे पुष्टि होती है॥११८॥ 'श्री वत्सलः शिवारम्भः'—लक्ष्मी के प्रिय विष्णुके मंगल के लिये आरम्भ करने वाले। 'शान्त भद्रः'—सत्पुरुषों के मङ्गल के कर्त्ता। 'समोयशः'—समस्त प्राणियों में समान किम्बा सब ऐश्वर्य लंक्ष्मी के सहित यश वाले। यहाँ दोनों शब्दों द्वारा एक ही शिव का नाम बताया गया है। कहीं 'समज्जसः'—ऐसा पाठान्तर दिखलाई देता है। 'भूशयः'—भूमि में शयन करने वाले। 'भूषणः'—सबको भूषित बनाने वाले। 'भूतिः'— समस्त सम्पत्तियों के स्वरूप में स्थित। (९२०)

'भूतकृत्'—समस्त प्राणियों की उत्पत्ति करने वाले। 'भूतवाहनः'—सम्पूर्ण जीवों का यथातथा निर्वाह करने वाले ॥११९॥ 'अकम्पः'—कम्प अर्थात् चञ्चलता से रहित स्थिर स्वरूप में स्थित। 'भक्तिकायः'—भक्तिरूपी काया के धर्त्ता। 'कालहा'—सबको भक्षण कर जाने वाले महाबली काल के भी नाशक। 'नीललोहितः'—कण्ठ में नीलवर्ण होने पर स्वयं वर्ण वाले। 'सत्यव्रत महात्यागी'—सत्यव्रत से सम्पन्न तथा समस्त पुरुषार्थों को देकर अत्यन्त त्याग करने वाले। नित्य शान्ति परायणः'—त्रिकाल में अबाध्य शान्ति के आगार ॥१२०॥

परार्थवृत्तिर्वरदो विरक्तस्तु विशारदः।
शुभदः शुभकर्त्ता च शुभनामा शुभः स्वयम् ॥१२१
अनर्थितो गुणग्राही ह्यकर्त्ताकनकप्रभः।
स्वभावभद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नोविघ्ननाशनः॥१२२
शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली।
अमृत्युः सर्वदृक् ।सहस्तजोरा।शर्महामाणः ॥१२३

'परार्थ वृत्तिर्वरदः'—प्राणियों को परार्थ वरदान देने वाली वृत्ति से युक्त माया के आवरण को खण्डित करने वाले अथवा वरदाता। यहाँ दोनों एक ही के बोधक हैं। यहाँ पर 'तत् सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्' इत्यादि श्रुति का वाक्य प्रमाण है। अथवा भक्तों के हृदय में सर्वदा प्रवेश की इच्छा रखने वाले ॥(९३०)॥ 'विशारदः—समस्त विद्याओं की कलाओं में नितान्त निपुण। 'शुभदः'—अपने भक्तों को शुभ का दान करने वाले। 'शुभ कर्त्ता' भक्तों के कल्याण के उत्पादन करने वाले। 'शुभ नामा शुभः'—शुभ नाम के धारण करने वाले होने के कारण स्वयं भी परम कल्याण से सम्पन्न। यहाँ दोनों शब्द एक ही के बोधक हैं ॥१२१॥ 'अनर्थितः'—याचना से रहित रहने वाले। 'अगुणः'—गुण रहित अर्थात् निराकार स्वरूप। 'साक्षी ह्यकर्त्ता'—इस समस्त चराचर जगत् के द्रष्टा होने के कारण अकर्त्ता हैं और मायाकी उपाधि से युक्त होने के कारण ईश्वर को जगत् का कर्त्ता होना माना जाता है। अतः ईश्वर स्वयं कर्त्ता नहीं है। यहाँ दोनों एक ही के बोधक हैं। 'कनक प्रभः—स्वयं

के तुल्य दिव्य एवं ज्वलन्त कान्तिके धारण करने वाले। 'स्वभाव भद्रः—स्वकीय भक्तोंकी भावनाके कारण ही मंगल स्वरूप अथवा मंगलों के दाता। 'मध्यस्थः'—ब्रह्मा और विष्णुके मध्यमें संस्थित। (९४०)। 'शीघ्रगः'–निज भक्तोंके कार्य सम्पादनके करनेके लिये शीघ्रतासे गमन करने वाले। 'शीघ्रनाशना'—भक्तोंके दुःखोंको अति शीघ्र नाश कर देने वाले ॥१२२॥ 'शिखण्डी, कवची, शूली चूड़ा, कवच और त्रिशूल धारण करने वाले। यहाँ तीनों शब्द एक ही नामका बोध कराते हैं।

'जटी, मुण्डी, कुण्डली'- शिरपर जटा-जूटसे युक्त, मुण्डित शिर वाले और सर्पोंके कुण्डल धारण करने वाले। तीनों शब्द यहाँ एकही शिव नाम के बोधक हैं। 'अमृत्युः'—मौतसे रहित रहने वाले। 'सर्वदृक् सिंहः'–सबके द्रष्टा तथा दृष्टोंके संहार करने में सिंहके स्वरूप वाले। यहाँ ये दोनों एकही नामके बोधक हैं। 'तेजो राशिर्महामणिः'–तेजका स्वरूप होने के कारण महान्मणि कौस्तुभ आदिके रूप वाले। यहाँ दोनों एक हैं ॥१२३॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्य्यवान् वीर्यकोविदः ।
वेद्यश्च वै वियोगात्मा परावरमुनीश्वरः ॥१२४
अनुत्तमो दुराधर्षो मधुरः प्रियदर्शनः ।
सुरेशः स्मरणः शर्व शब्दः प्रतपतां वरः ॥१२५
कालपक्षः कालकालः सुकृती कृतवासुकिः ।
महेष्वासो महीभर्त्ता निष्कलङ्को विशृङ्खलः ॥१२६

'असंख्येयः प्रमेयात्मा:'—अपार एवं अपरिच्छेद्य स्वरूप वाले। 'वीर्य वान्वीर्य कोविदः'—वीर्य सम्पन्न तथा समस्त पराक्रमोंमें परम प्रवीण। 'वेद्यः'–मुक्तिके इच्छुक पुरुषोंके द्वारा जानने योग्य ॥ (९५०) ॥ 'वियोगात्मा'–विशिष्ट योगसे युक्त आत्मा अर्थात् स्वरूप वाले। 'परावर मुनीश्वरः' पर अवर और मुनिगणके भी ईश्वर।१२४। 'अनुत्तमो दुराधर्षः'–सबसे उत्तम अर्थात् परम श्रेष्ठ और असह्य तेजयुक्त जिसके तेजको कोई भी आसानीसे सहन नहीं कर सकता है। 'मधुर प्रिय दर्शनः'—परमसौम्य एवं मधुर स्वरूप वाले तथा सबको प्रिय दर्शन वाले। 'सुरेशः'–देवगणके

स्वामी । 'शरणम्'–सम्पूर्ण जगत् की रक्षा करने वाले । 'पर्वः'–विश्वके स्वरूप वाले विराजमान । 'शब्द ब्रह्म सताँ गतिः' वेदके स्वरूपमें संस्थित तथा साधु पुरुषों की गति अर्थात् उद्धारक । यहां दोनों एकही हैं ॥१२५॥ 'कालपक्षः'—सृष्टिकी रचनादि के कार्य में-कालकी सहायता वाले । 'कलाकारी'—सबके उत्पादक कालको उत्पन्न करने वाले । (९३०) 'कङ्कणीकृत वासुकिः— वासुकि सर्पको अपना कङ्कण बना लेने वाले । 'महेश्वासः'—अक्षय महान् धनुष के धारी । 'महीभर्त्ता'—इस समस्त जगत् के धारण करने वाले । 'निष्कलङ्कः'—अविद्याके दोषसे रहित । 'विश्वकुलः'— मायाके बन्धनसे मुक्त ॥१२६॥

द्युतिमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदःसिद्धिसाधनः ।
विश्वतः सम्द्रवृत्तस्तु व्यूढोरस्को महाभुजः ॥१२७
सर्वयोनिर्निरातङ्को नरनारायणप्रियः ।
निर्लेपो यतिसङ्गात्मा निर्व्यङ्गो व्यङ्गनाशनः ॥१२८
स्वतः स्तुतिप्रियः स्तोताव्याप्तमूर्तिनिराकुलः ।
निरवद्यमयोपायो विद्याराशिश्च सत्कृतः ॥१२९

'द्युमणि स्तरणि'—सूर्यके स्वरूपमें स्थित होकर संसाररूपी सागरसे तारने वाले । 'धन्यः'— परम कृत्त कृय । 'सिद्धिदः सिद्ध साधनः'-अणिमा महिदादि अष्ट सिद्धियोंके प्रदाता होनेके साधनों द्वारा समस्त पुरुषार्थों के प्रदान करने वाले । ये दोनों एक ही हैं । 'विश्वतः सवृतः'–सब ओरसे मायाके द्वारा आच्छादित स्वरूप वाले । 'स्तुत्या'—देव, दनुज और मानवों द्वारा स्तुति करनेके योग्य ॥९७०॥ 'व्यूढोरस्कः'–परम विस्तृत वक्षःस्थल वाले । 'महाभुजः'—लम्बी भुजाओं से युक्त ॥१२७॥ 'सर्वयोनिः'—सम्पूर्ण उत्पन्न करनेके स्थल तथा कारण । 'निरातङ्कः' सांसारिक व्याधि अथवा लौकिक सन्तापसे रहित । 'नरःनारायण प्रियः'—नर-नारायण मुनियों पर अतिशय प्यारकरने वाले । 'नर्लेपः निष्प्रपञ्चात्मा'-कर्मके बन्धनोंसे विमुक्त होते हुक पञ्चभूतादिके समुदाय स्वरूप प्रपञ्चसे शून्य शरीके धारण करने वाले । यहाँ ये दोनों एकही शिवनामके प्रकाशक हैं । 'निर्व्यंगः'—विशिष्ट अङ्गयुक्त प्राणियोंके उत्पादक । 'व्यङ्गनाशनः'— व्यंग कर्मोंके नाश करने

वाले ।।११८।। 'स्तवा:'-स्तवन करने के योग्य । 'स्तव प्रिय:'-स्तुति से प्रेम (प्यार) करने वाले ।९८०। 'स्तोता'-प्रेम पूर्वक भक्तों के द्वारा स्तुत होने वाले । 'व्यास मूर्त्ति:'-व्यास महर्षि की मूर्ति के स्वरूप में विराजमान । निरंकुश:-मायास्वरूप अंकुश से शून्य । 'निरवद्यमयोपाय:'-अनिन्द्य स्वधन स्वरूप मोक्ष से सम्पन्न । 'विद्या राशि:'-समस्त विद्याओं के समूहके स्वरूप में संस्थित । 'रस प्रिय:' भक्ति रस पर प्यार करने वाले ।।१२९।।

प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः संग्रहो नित्यसुन्दरः ।
वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः ।।१३०
परमार्थगुरुर्दृत्तः सूरिराश्रितवत्सलः ।
सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्वावलम्बनः ।।१३१
एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टाव हि हर हरिः ।
प्रार्थयामास शम्भुं वै पूजयामास पंकजैः ।।१३२

'प्रशान्त बुद्धिः - परम शान्त एवं सौम्य बुद्धि वाले । 'अक्षुण्णः' — दूसरों के द्वारा तिरस्कृत न होने वाले । 'सग्रहः'-भक्तजनों के संग्रह करने वाले । 'नित्य सुन्दरः' सर्वदा सुन्दर दिखाई देने वाले ।।९९०।। 'वैयाघ्र-धुर्यः'-बाघम्बर को सदा धारण करने वाले । 'धात्रीशः'-समस्त भूमण्डल के अधीश्वर । 'शाकल्यः'-शाकल्य नामक ऋषि के स्वरूप में स्थिति करने वाले । शर्वरी पतिः'-रात्रियों के सर्वेश्वर ।।१३०।। 'परमार्थ गुरुः'-तापक मन्त्र का उपदेश करते हुए मुक्ति पद प्राप्त कराने वाले गुरु । 'दृष्टिः'-चक्षु के अंधिष्ठाता देवता के स्वरूप वाले । 'शरीराश्रित वत्सलः'-शरीरधारी जीवों पर अतिशय दया करने वाले । 'सोमः'—उमाके सहित सर्वदा विराजमान । 'रसोज्ञपकः'-हलाहल महाविषके स्वादके ज्ञाता तथा वीर्य के प्रदान करने वाले । 'सर्वसत्वावलम्बनः'-संसार के समस्त प्राणियों के आश्रय भूत ।।१०००।। यहाँ श्री शिवके एक सहस्र नामोंका वर्णन समाप्त होता है ।।१३१।। इस तरह इन उक्त शिवके सहस्रनामों के द्वारा भगवान् विष्णुने शिवकी स्तुतिकी और पद्म दलोंसे अर्चना करके उनकी प्रार्थना की ।।१३२।।

।। शिव सहस्रनाम स्तोत्र का फल ।।

श्रुत्वा विष्णुकृतं दिव्यं परनामविभूषितम् ।
सहस्रनाम स्वस्तोत्र प्रसन्नोऽभून्महेश्वरः ।१।
परीक्षार्थं हरेरीशः कमलेषु महेश्वरः ।
गोपयामास कमलं तदैकं भुवनेश्वरः ।१।
पंकजेषु तदा तेषु सहस्रेषु बभूव च ।
न्यूननेकं तदा विष्णुर्विकलः शिवपूजने ।३।
हृदा विचारितं तेन कृतो वै कमलं गतम्
यातं यातु सुखेनैव मन्नेत्रं कमलं न निम् ।४।
ज्ञात्वेति नेत्रमुद्धृत्य सर्वसत्वावलम्बनात् ।
पूजयामास भावेन स्तवयामास तेन च ।५।
ततः स्तुतमथो दृष्ट्वा तथाभूत हरो हरिम् ।
मामेति व्यापरन्ननेव प्रादुरासांज्जगद्गुरुः ।६।
तस्मादवतताराशु मंडलात्पार्थिवस्य च ।
प्रतिठितस्य हरिणा स्वलिंगस्य महेश्वरः ।७।

सूतजी ने कहा–उस समय विष्णु द्वारा निर्मित सुन्दर नामों से विभूषित अपने सहस्रनाम नाम स्तोत्रका श्रवण कर शिवको परम प्रसन्नता हुई ।।१।। समस्त लोकों के स्वामी महेश्वर ने विष्णु भगवान्की परीक्षा करने के लिए उन सहस्र कमलों में से एक कमल को छिपा लिया ।।२।। शिव समर्चनके लिए लायेगये सहस्र कमलोंमें जब एक कमल कम हुआ तो विष्णु भगवान् पूजाकी साङ्ग सम्पूर्णता के अभावसे पहिले कुछ व्याकुल हुये और सोचाकि एक कमल कहाँ गया ? यदि कम है तो रहे उसकी पूर्तिके लिये मेरा नेत्ररूपी कमल उपस्थित है ।।३-४।। भगवान् विष्णु ने ऐसा जानकर तुरन्त अपना नेत्र उखाड़ डाला और विविध सत्व के अवलम्ब शिव का स्वभाविक रूप से पूजन एवं स्तवन किया ।।५।। इस प्रकार से विष्णु को स्तवन करते हुए देखकर जगत्के गुरु महेश्वर ने ऐसा मत करो··ऐसा मत

करो।' यह कहके हुए समक्ष में अपना आविर्भाव किया।६।भगवान् विष्णुके द्वारा प्रतिष्ठित अपने पार्थिव लिंगसे मण्डल शम्भु शीघ्रही प्रकट हो गये।७।

यथोक्तरूपिणं शम्भुं तेजोराशिसमुत्थितम् ।
नमस्कृत्य पुरः स्थित्वा स तुष्टाव विशेषतः ।८।
तदा प्राह मादेवः प्रसन्नः प्रहसन्निव ।
सम्प्रेक्ष्य कृपया विष्णुं कृतांजललिपुटं स्थितम् ।९।
ज्ञातं मयेदं सकलं तव चित्तेप्सितं हरे ।
देवकार्य्य विशेषेण देवकार्य्यरतात्मनः ।१०।
देवसार्य्यस्य सिद्धयर्थं दैत्यनाशाय चाश्रमम् ।
सुदर्शनाख्यं चक्रं वै ददामि तव शोभनम् ।११।
यद्रूपं भवता दृष्टं सर्वलोकसुखावहम् ।
हिताय तव देवेश धृतं भावय तद् ध्रुवम् ।१२।
रणाजिरे स्मृतं तद्वै देवानां दुःखनाशनम् ।
इदं चक्रमिदं रूपमिदं नामसहस्रकम् ।१३।
ये शृण्वन्ति सदा भक्त्वा सिद्धिः स्यादनपायिनो ।
कामनां सकलां चैवं प्रसादान्मम सव्रत ।१४।

शास्त्रमें लिखेहुए स्वरूपमें स्थित परमोज्ज्वल तेजके पुञ्ज समक्षमेंप्रकट हुए शिवका दर्शन कर विष्णु ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर विशेष रूपसे उनकी स्तुति करनेमें प्रवृत्त होगये ।८। उस समय परमप्रसन्न शिव हाथजोड़कर समक्षमें भगवान् विष्णुको देखकर हंसते हुए कहने लगे । ।९। शिवने कहा–हे विष्णो ! आपके मनमें जोभी कुछ विचारहै वह मैंने सब समझ लिया है तुत इस समय देवगणके कार्य उत्पादन में तत्पर होते हुए उनका समस्त कार्य पूरा करनेके इच्छुक हो ।१०। देवगण के कार्योंकी सिद्धि के लिये और बिना श्रम के दैत्योंका संहार करने के लिये मैं प्रसन्न होकर आपको 'सुदर्शन' नाम वाला परम शोभन चक्र देता हूँ ।।११।। हे देवेश ! हे विष्णु ! आपने समस्त लोकों का सुखदायक जो स्वरूप देखा है उसका निश्चय ही ध्यान करो । इससे आपका परम हित होगा ।।१२।।

रणभूमि में यदि उस रूपकाका ध्यानकिया जावेतो देवताओंका सम्पूर्णदुःख दूर हो जाता है । यह सुदर्शनचक्र यह रूप और सहस्रनाम स्तोत्र महान् फल देने वाले हैं ॥१३॥ हे सुव्रत ! जोभी कोई पुरुष दृढ़ भक्तिके साथ इस स्तोत्रका श्रवण किया करते हैं और नित्य ही सुनते हैं उनको मेरी कृपा से समस्त अभीप्सितोंकी अक्षय सिद्धि अवश्य ही हो जाती है ।१४।

एवमुक्त्वा ददौ चक्रं सूर्य्यायुतसमप्रभम् ।
सुदर्शनं स्वपादोत्थं सर्वशत्रुविनाशनम् ।१५।
विष्णुश्चापि सुसंस्कृत्य जग्राहोदङ्मुखस्तदा ।
नमस्कृत्य महादेवं विष्णुर्वचनमब्रवी ।१६।
श्रृणु देव मया ध्येयं पठनीयं च कि प्रभो ।
दुःखानां नाशनार्थ हि वद त्वं लोकशङ्कर ।१७।
इति पृष्ठस्तदा तेन सन्तुष्टस्तु शिवोऽब्रवीत् ।
प्रसन्नमानसो भूत्वा विष्णुं देवसहायकम् ।१८।
रूपं ध्येय हरे मे हि सर्वानर्थ प्रशान्तये ।
अनेकदुःखनाशार्थं पठ नामसहस्रकम् ।१९।
धार्य्य चक्रं सदा मे हि सर्वाभीष्ठस्य सिद्धये ।
त्वया विष्णो प्रयत्नेन सर्वचक्रवरं त्विदम् ।२०।
अन्ये च ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति नित्यशः ।
तेषां दुःख न स्वप्नेऽपि जायते नात्र संशयः ।२१।

सूत ने कहा--शिव ने ऐसा कहते हुए सहस्रों सूर्यों के तुल्य कान्ति वाले अपने चरणसे समुत्पन्न सम्पूर्ण शत्रुओं के नाशक सुदर्शनचक्र को दे दिया ॥१५॥ इसके अनन्तर उस समय उत्तर दिशाकी ओर अपना मुख करके भली-भाँति संस्कारके साथ सुदर्शनचक्रको ग्रहणकिया और भगवान् महेशको नमस्कार करके विष्णु ने प्रार्थना की ॥१६॥ विष्णु ने कहा हे प्रभो ! हे देव ! हे लोकोंके कल्याण करनेवाले ! मेरे ध्यानकरने के योग्य क्या है और मेरेद्वारा पढ़नेकेयोग्य क्या २ है ? यह सभी दुःखोंके निवारण [illegible] कृपया बतला देवें ।१७। सूतजी ने कहा-विष्णु भगवान

के द्वारा इस तरह पूछने पर शिव मनमें परम प्रसन्न एव अत्यन्त सन्तुष्ट होकर देवोंकी सहायता करनेवाले वचन विष्णुने करने लगे ।।१८।। शिवने कहा-हे विष्णो ! समस्त उपद्रवोंकी शांतिकेलिये मेरे मङ्गलमय स्वरूप का ध्यान करना चाहिए और समस्त दुःखो के नाश होनेकेलिये मेरे सहस्रनाम स्तोत्रका पाठ करना चाहिये ।।१९।। हे विष्णो ! समस्त कामनाकों की सिद्धिके लिये चक्रोमें परमश्रेष्ठ मेरे चक्रको जिसका नाम सुदर्शन है सर्वदा प्रयत्न पूर्वक धारण करना चाहिए ।।२०।। जो मानव मेरे इस शिव सहनाम वाले स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करेंगे या श्रवण करायेंगे उनको कभी स्वप्नमें भी दुःख नहीं सतायेंगे-इसमें तनिकभी संदेह नहीं है ।२१।

राज्ञां च संकटे प्राप्ते शतावृत्तिं चरेद्यदा ।
साङ्गं च विधिसयुक्तं कल्याणं लभते नरः ।२२।
रोगनाशंकर ह्येतद्विद्यावित्तदमुद्यमम् ।
सर्वकामप्रद पुण्यं शिवभक्तिप्रदं सदा ।२३।
यदुद्दिश्य फलं श्रेष्ठं पठिष्यन्ति नरास्त्विह ।
यप्स्यन्ते नात्र संदेहः फलं तत्सत्यमुत्तमम् ।२४।
यश्च प्रातः समुत्थाय पूजां कृत्वा मदीयिकाम् ।
पठने मत्समक्ष वै नित्यं सिद्धिर्न दूरतः ।२५।
ऐहिकीं सिद्धिमाप्नोति निखिलां सर्वकामिकाम् ।
अन्ते सायुज्यमुक्तिं वै प्राप्नोत्यत्र न संशयः ।२६।
एवमुक्त्वा तदा विष्णु शंकरः प्रीतिमानसः ।
उपस्पृश्य कराभ्यां तमुवाच गिरिशः पुनः ।२७।
वरदोऽस्मि सुरश्रेष्ठ वरान्वृणु यथेप्सितान् ।
भक्त्या यशीकृनो नूनं स्तवेनानेन सुव्रत ।२८।
इत्युक्तो देवदेवेन देवदेवं प्रणम्य तम् ।
सुप्रसन्नतरो विष्णुः सांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ।२९।
यथेदानीं कृपा नाथ क्रियते चान्यतः पराः ।
कार्य्या चैव त्रिशेषेण कृपालुत्वात्वया प्रभो ।३०।

यदि भूतियोंके द्वारा सङ्कट आनेका अवसर आवे तो सविधि अङ्ग-न्यास पूर्वक सहस्रनाम की एकशत आवृत्ति करने पर दुःख दूर होकर निश्चय ही कल्याण होता है ॥२२। यह शिव सहस्रनाम स्तोत्र रोगनाशक विद्या और वैभवका दाता तथा सम्पूर्ण मनोरथोंको पूर्ण करने वाला एवं निरन्तर पवित्र शिवकी भक्तिके प्रदान करने वाला है ॥२३॥ मनुष्य जिस किसी भी श्रेष्ठ फल प्राप्त करने के उद्देश्य से इसका पाठ करेंगे वे निस्स-न्देह इस लोक में उस श्रेष्ठ फलकी प्राप्ति करेंगे ॥२४॥ जो भी कोई मनुष्य नित्य बहुत तड़के उठकर मेरी अर्चा करके इस स्तोत्रका पाठ करेंगे उनसे सत्सिद्धि दूर नहीं रहती है ॥२५॥ जो सहस्रनामका नित्य पाठ करता है वह लोकमें समस्त कामनाओं को सिद्ध करने वाली सम्पत्ति पाता है और अन्त में सायुज्य मुक्ति का पद प्राप्त करता इसमें कुछ भी संशय नहीं है । ॥२६ । सूत जीने कहा-इस तरह विष्णु के कहने के पश्चात् शङ्कर प्रसन्न मन होकर विष्णु भगवान की अपने दोनों हाथों से स्पर्श करते हुए कहने लगे ॥२७॥ शिवने कहा-हे देवगण में श्रेष्ठ विष्णो ! मैं तुम्हें वरदान देता हूँ कि तुम अपने मनोवाञ्छित वरोंको स्वीकार करो । हे परम शोभन व्रत वाले ! भक्ति पूर्वक इस स्तोत्र रत्नके पाठसे निश्चय ही शिव वशीभूत हो जाते हैं ॥२८॥ सूतजीने कहा—इस प्रकार से देवों के भी पूज्य देव महादेवके कहने पर उनको प्रणाम करके परम प्रसन्न विष्णु उनसे हाथ जोड़कर फिर प्रार्थना करने लगे ॥२९॥ भगवान् विष्णु ने कहा-हे नाथ ! हे प्रभो ! इस समय आपने जैसा अनुग्रह किया है, हे दयालो वैसी ही कृपा आगे भी आपको करनी चाहिए ।।३०॥

॥ नारद का शिवतत्व श्रवण ॥

सूत सूत महाभाग ज्ञानवानसि सुव्रत ।
पुनरेव शिवस्यैव चरितं ब्रूहि विस्तरात् ॥१
पुरातनाश्च राजान ऋषयो देवतास्तथा ।
आराधनञ्च तस्यैव चक्रुर्देववरस्य हि ॥२
साधुपृष्टमृषिश्रेष्ठाः शृणुतां कथयामि किम् ।
चरित्र शङ्करं रम्यं शृण्वतां भुक्तिमुक्तिदम् ॥३

एतदेव पुरा पृष्ठो नारदेन पितामहः ।
प्रत्युवाच प्रसन्नात्मा नारदं मुनिसत्तमम् ॥४
श्रृणु नारद सुप्रीत्या शंकरं चरितं वरम् ।
प्रवक्ष्यामि भवत्स्नेहान्महापातकनाशनम् ॥५
रमया सहितो विष्णु शिवपूजां चकार ह ।
कृपया परमेशस्य सर्वान्कामानवाप हि ॥६
अहं पितामहश्चापि शिवपूजनकारकः ।
तस्यैव कृपया तात विश्वसृष्टिकरः सदा ॥७

ऋषियोंने कहा हे महान् भाग्य वाले ! हे सुव्रत ! हे सूतजी ! आप अत्यन्त ज्ञान वाले हैं, अतएव हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप अब भगवान् शङ्करके चरित्रका विस्तारके सहित वर्णन करें ॥१॥ पहिले होने वाले राजा लोगों ने एवं ऋषिगण और देववृन्दने सर्वश्रेष्ठ भगवान् शिव का ही आराधन किया है ॥२॥ सूतजीने कहा-हे ऋषिप्रवर ! इस समय आपने अति उत्तम प्रश्न किया है । मैं आपके सामने अब परम सुन्दर एवं श्रोताओंको भोग और मोक्ष दोनों ही के दाता भगवान् शिवका विस्तृत चरित्र सुनाता हूँ । आप सब ध्यानके साथ सुनिये ॥३॥ यही बात पहिले एक समय नारदजीने ब्रह्माजीसे पूछी थी । परम प्रसन्न होकर ब्रह्मा जीने नारदजीसे कहा था ॥४॥ ब्रह्माजीने कहा-हे नारद ! तुम प्रेम पूर्वक सुनो, मैं आपके स्नेह से वशीभूत होकर ही महापातकों का नाशक शिवेश्वरके चरित्रका वर्णन करता हूँ ॥५॥ अपनी प्रिय लक्ष्मी को साथ में लेकर भगवान् विष्णुने एकबार शिवका पूजन किया था तब उनके सभी मनोरथ पूर्ण हो गये थे ॥६॥ हे तात ! मैं जगत् का विधाता ब्रह्मा भी शिव-समर्चन के अतुल प्रभाव के कारण ही उनकी कृपा से इस सुविस्तृत संसार की रचना किया करता हूँ ॥७॥

शिवपूजाकरा नित्यं मत्पुत्राः परमर्षयः ।
अन्ये च ऋषयो ये ते शिवपूजन कारकाः ॥८
नारद त्वं विशेषेण शिवपूजनकारकः ।
सप्तर्षयो वसिष्ठायाः शिवपूजनकारकाः ॥९

अरुंधती महासाध्वी लोपामुद्रा तथैव च ।
अहल्या गोतमस्त्री च शिवपूजनकारकाः ।१०।
दुर्वासाः कौशिकः शक्तिर्दधीचो गोतमस्थता ।
कणादो भार्गवो जीवो वैशपायन एव च ।११।
एते च मनुयः सर्वे शिवपूजाकरा मताः ।
तथा पराशरो ध्यासः शिवपूजारतः सदा ।१२।
उपमन्यूर्महाभक्तः शिवस्य परमात्मनः ।
याज्ञवल्क्यो महाशवो जैमिनिर्गर्ग एव च ।१३।
शुकश्च शौनकाद्याश्च शंकरस्य प्रपूजकाः ।
अन्येऽपि बहवः सन्ति मुनयो मुनिसत्तमाः ।१४।

हे श्रेष्ठ ऋषिवृन्द ! मेरे पुत्र भी नित्यप्रति भगवान्शिवका पूजनकरते हैं तथा अन्यभी बहुतसे ऋषिगण शिवकी पूजा करने वाले हुए हैं ।।८।। हे नारदजी ! तुमभी विशेष रूपसे भगवान्शिवका पूजनकरने वाले हो और अन्य ऋषि लोग भी शिवके समाराधक हुए हैं ।।९।। परम पतिव्रत धर्मके पालन करने वाली अरुन्धती, लोपामुद्रा और गौतम की पत्नी अहिल्या भी शङ्करकी पूजा-अर्चन करने वाली हैं ।।१०।। इनके अतिरिक्त दुर्वासा विश्वामित्र, शक्ति, दधीच, गौतम, कणाद, भार्गव, बृहस्पति, वैशम्पायन आदि ये समस्त ऋषि, मुनि भगवान्शिवकी पूजोपासना करने वाले हैं यथा पराशर और व्यासमुनि निरन्तर शिवको आराधनामें परायण रहा करते हैं ।।११-१२।। उपमन्यु महर्षि भी परमेश्वर शिवके महान्भक्त हुए है । याज्ञवल्क्य, जैमिनि तथा गर्ग भी परम शैव थे ।।१३।। शुक्र एवं शौनक आदि भी भगवान्शिवके पूजक हैं । हे मुनिश्रेष्ठो ! अन्य भी बहुत से ऋषि हैं जो एक मात्र शङ्कर भगवान् की पूजा करने वाले हैं ।।१४।।

अदितिर्दैवमाता च नित्य प्रीत्या चकार ह ।
पार्थिवीं शैवपूजां वै सा वधूः प्रेमतत्परा ।१५।
शक्रादयो लोकपाला वसवश्च सुरास्तथा ।
महाराजिकदेवाश्च साध्याश्च शिवपूजकाः ।१६।

गन्धर्वाः किन्नराद्याश्चोरगासुराः शिवपूजकाः ।
तथाऽसुरा महात्मानः शिवपूजाकरा मताः ॥१७
हिरण्यकशिपुर्दैत्यः सानुजः ससुतो मुने ।
शिवपूजाकरो नित्यं विरोचनबली तथा ॥१८
महाशैबः स्मृतो बाणो हिरण्याक्षसुतास्तथा ।
वृषपर्वा दनुस्तात दानवाः शिवपूजकाः ॥१९
शेषश्च वासुकिश्चैव तक्षकश्च तथाऽपरे ।
शिवभक्ता महानागा गरुडाद्याश्च पक्षिणः ॥२०
सूर्यचन्द्रावुभौ देवौ पृथ्व्यां वंशप्रवर्त्तकौ ।
शिवसेवारतौ नित्यं सर्वेश्यां तौ मुनीश्वर ॥२१

देवगणकी माता अदितिने अपनी वधूके सहित परम प्रेम मग्न होकर प्रीति-भक्तिके साथ पार्थिव शिवका पूजन किया था ॥१५॥ इन्द्र आदि समस्त लोकपालोंने—आठ वसुओंने और सभी देवताओंने महाराजिकगण के साथ एवं साध्योंके सहित भगवान् महेश्वरका पूजन किया था ॥१६॥ इनके अतिरिक्त किन्नर गन्धर्व, प्रभृति तथा महान्आत्मा वाले दैत्यलोग भी सब शिवके उपासक हुए हैं ॥१७॥ हे मुनिवर ! महान् दैत्यराज हिरण्य-कशिपु अपने भाई एवं पुत्रके साथ नित्यही शिवका पूजन किया करता था। विरोचनभी शिव-पूजक हुआ है ।१८। हे तात ! बाणासुर और हिरण्याक्ष पुत्र वृषपर्वा, दनुदैत्य और उसकेपुत्र ये सभी शिवकी आराधना करने वाले हुए हैं ॥१९॥ भगवान् शेष, वासुक, तक्षक और अन्यभी नागजातिके बड़े बड़े नाग एवं गरुड आदि पक्षीभी शिवकी उपासना करने वाले परम शिव भक्त हुए हैं ॥२०॥ हे मुनीश्वर ! इस भूमण्डलपर सोम और सूर्य ये दोनों अपने-अपने महान् वंशके चलाने वाले माने गये हैं वे भी सभी स्वकीय वंशजोंके साथ शिवके अनन्य उपासक एवं परम भक्त हुए हैं ॥२१॥

मनवश्च तथा चक्रुः स्वायंभुवपुरःसराः ।
शिवपूजां विशेषेण शिववेशधरा मुने ॥२२
प्रियव्रतश्च तत्पुत्रस्तथा चोत्तानपात्सुतः ।
तद्वंशाश्चैव राजानः शिवपूजनकारकाः ॥२३

ध्रुवश्च ऋषभश्चैव भरतो नवयोगिनः ।
तद्भ्रातरः परे चापि शिवपूजनकारकः ।२४।
वैवस्वतसतास्तार्क्ष्य इक्ष्वाकुप्रमुखा नृपाः ।
शिवपूजारतात्मानः सर्वदा सुखभोगिनः ।२५।
ककुत्स्थश्चापि मांधाता सगरः शैवसत्तमः ।
मुचुकुन्दो हरिश्चन्द्रः कल्माषांघ्रिस्तथैव च ।२६।
भगीरथादयो भूपा बहवो नृपसत्तमाः ।
शिवपूजाकरा ज्ञेयाः शिववेषविधायिनः ।२७।
खट्वांगश्च महाराजो देवसाहाय्यकारकः ।
विधितः पार्थिवीं मूर्ति शिवस्यापूजयत्सदा ।२८।

हे मुने ! स्वायम्भुव आदि जो मनु हुए हैं वे सब नित्य शिवकी वेष-भूषा धारण करके ही शिवका पूजन किया करते थे ॥२२॥ महाराज प्रियव्रत तथा उसके पुत्र और उत्तानपाद के पुत्र एवं उनके वंश में जो भी राजा हुये वे सभा शिवके पूजनको करने वाले हुए है ॥२३॥ इनके अतिरिक्त ध्रुव, ऋषभ, भरत नवयोगी तथा अन्य उनके समस्त भाई ये सब परम शिव-पूजक हुए हैं ॥२४॥ वैवस्वत मनुके पुत्र तार्क्ष्य तथा इक्ष्वाकु, प्रभृति नृपगण सी शंकर की पूजा के प्रेमी और इसीके प्रभावसे निरन्तर सुखके भोक्ता हुए हैं ।२५। ककुत्स्थमान्धाता, राजा सगर, मुचुकुन्द, राजा हरिशचन्द्र और कल्माषपाद भी शैवों में परम श्रेष्ठ हुए हैं ।२६। भगीरथ आदि अनेक महान् पुरुषार्थी राजा शिवका वेष धारण करने वाले तथा शिवके पूजन करने वाले हुए में ।२७। देवोंके सहायक राजा खट्वाङ्गने सविधि शिवका पार्थिव पूजव किया था ॥२८॥

तत्पुत्रो हि दिलीपश्च शिवपूजनकृत्सदा ।
रघुस्ततनयः शव सुप्रीत्या शिवपूजकः ।२९।
अजः शिवार्चकस्तस्य तनयो धर्मयुद्धकृत ।
जातो दशरथो भूपो महाराजो विशेषतः ।३०।
पुत्र र्थे पार्थिवी मूर्तिशैवीं दशरथो हि सः ।
समानच विशेषेण वसिष्ठस्याज्ञया मुनेः ।३१।

पुत्रेष्टिं च चकारासौ पार्थिवो भवभक्तिमान् ।
ऋष्यश्रृंगमुनेराज्ञां सप्राप्य नृपसत्तमः ॥३२
कौसल्या तत्प्रिया मूर्तिं पार्थिवीं शांकरीं मुदा ।
ऋष्यश्रृंगसमादिष्टा समानर्च सुताप्तये ॥३३
सुमित्रा च शिवं प्रीत्या कैकेयी नृपवल्लभा ।
पूजयामास सत्पुत्रप्राप्तये मुनिसत्तम ॥३४
शिवप्रसादतस्ता वै पुत्रान्प्रापुः शुभकरान् ।
महाव्रत पितो वीरान्सन्मार्गनिरतान्मुने ॥३५

इसी वंशमें उनके पुत्र महाराज दिलीप एवं इनके पुत्र राजा रघुशैव होकर परम प्रीति से शिवका वेष रखकर उनका पूजन किया करते थे । ॥२९॥ महाराज रघुके पुत्र अज नृप जिन्होने धर्मसे युद्ध किया था वे शिव के परम प्रिय भक्त हुये थे इसके अनन्तर राजादशरथ तो विशेष रूपसे शिव की उपासना करने वाले हुए हैं ॥३०॥ राजा दशरथ अपने गुरु वसिष्ठ मुनिकी आज्ञा से पुत्र-प्राप्ति के लिये शिवकी पार्थिव मूर्तिका निर्माणकर विशेष रूपसे नित्य ही महादेवका पूजन किया करते थे ॥३१॥ भक्तिमन् महाराज दशरथने ऋशि श्रृङ्ग मुनिकी आज्ञासे पुत्रेष्टि योग किया था ।३२। दशरथकी पत्नी कौशल्याने ऋष्य श्रृङ्ग मुनिकी आज्ञासे रोज ही शिवकी पार्थिव मूर्ति बनाकर अपने पुत्र की प्राप्तिके लिये शिवका पूजन किया था ॥३३॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! दशरथ नृपकी अन्य महारानी सुमित्रा तथा कैकेईने भी श्रेष्ठ पुत्रकी प्राप्तिकी कामनासे शिवका अर्चन किया था ।३३। हे मुने ! उन सभी रानियोंने भगवान् महेशके प्रसादसे महान् प्रताप वाले, परम वीर, सन्मार्गगामी एवं अतिशय कल्याणकारी पुत्रोंको प्राप्त किया था ।३५।

ततः शिवाज्ञया तस्मात्तासु राज्ञः स्वयं हरिः ।
चतुर्भिश्चैव रूपैश्चाविर्बभूव नृपात्मजः ॥३६
कौसल्यायाः सुतो रामः सुमित्रायाश्च लक्ष्मण ।
शत्रुघ्नश्चैव कैकेय्या भरतश्चेति सव्रताः ॥३७
रामः ससहजो नित्यं पार्थिवं समपूजयत् ।
भस्मरुद्राक्षधारी च विरजो योगमास्थितः ॥३८

तद्वंशे ये समुत्पन्ना राजानः सानुगा मुने ।
ते सर्वे पार्थिवं लिंग शिवस्य समपूजयन् ।३९।
सुद्युम्नश्च महाराजः शैवो मुनिसुतो मुने ।
शिवशापात्प्रियाहेतोरभून्नारी ससेवकः ।४०।
पार्थिवेशसमर्चातः पुनः सोऽभूत्पुमान्वरः ।
मासं स्त्री पुरुषो मासमेवं स्त्रीत्वं त्यवर्त्तत ।४१।
ततो राज्यं परित्यज्य शिवधर्मपरायणः ।
शिववेषधरो भक्त्या दुर्लभ मोक्षमाप्तवान् ।४२।

इसी शिव-पूजनके प्रभाव से शिवकी आज्ञा पाकर विष्णु महाराज दशरथके द्वारा चतुर्भुजी मूर्तिके स्वरूपमें श्रीरामचन्द्र रूपसे प्रकट हुए थे। ।।३६।। इस प्रकार से दशरथ की तीनों रानियों के पुत्र हुए। महारानी कौशल्याके श्रीराम, सुमित्राके लक्ष्मण और शत्रुघ्न तथा कैकेयीके भरत नामवाले पुत्र प्रकट हुए थे ।।३७।। भगवान् श्रीरामचन्द्रभी नित्यही पार्थिव मूर्ति बनाकर शिवका बड़ेही प्रेमके साथ पूजन किया करते थे और भस्म तथा रुद्राक्षमाला धारणकरके विरक्तिके मार्गमें स्थित रहा करते थे ।३८। हे मुने ! इसके पश्चात् भी उनके वंशमें जोभी राजा हुए हैं वे समी शिव का पार्थिव पूजनकरने वाले थे ।३९। हे मुनीश्वर ! ऋषिके पुत्र परम शिव के भक्त महाराज सुद्युम्न शिवके शापसे अपनी स्त्री और समस्त अनुचरों के साथ स्त्रीके रूपमें होगये थे ।।४०।। राजा सुद्युम्नने नित्य पार्थिव शिवके पूजनका नियम ग्रहण किया और इसके प्रभावसे पुनः पुरुष रूप हुए किन्तु महेशके शापका फिर भी इतना प्रभाव रहा कि एकमास पर्यन्त पुरुष और एकमास तक स्त्री रहते थे। इस तरह स्त्रीत्वसे उन्होंने छुटकारा पाया था। इसके पश्चात् वे अपना राज्य त्यागकर शिवोपासनामें तत्पर होकर अन्त में मोक्षपदकी प्राप्ति के अधिकारी हो गये थे ।।४१-४२।।

पुरूरवाश्च तत्पुत्रो महाराजः सुपूजकः ।
शिवस्य देवदेवस्य तत्सुतः शिवपूजकः ।४३।
भरतस्तु महापूजाँ शिवस्यैव सदाऽकरोत् ।
नहुषश्च महाशैवः शिवपूजारतो ह्यभूत् ।४४।

ययातिः शिवपूजातः सर्वान्कामानवाप्तवान् ।
अजीजनत्सुतान्पञ्च शिवधर्मपरायणान् ॥४५
तत्सुता यदुमुख्याश्च पञ्चापि शिवपूजकाः ।
शिवपूजाप्रभावेण सर्वान्कामांश्च लेभिरे ॥४६
अन्येऽपि ये महाभागाः समानर्चुः शिवं हिते ।
तद्वंश्या अन्यवंश्याश्च भुक्तिमुक्तिप्रदं मुने ॥४७
कृष्णेन च कृतं नित्य बदरीपर्वतोत्तमे ।
पूजनं तु शिवस्यैव सप्तमासावधि स्वयम् ॥
प्रसन्नाद् भागवांस्तस्माद्वरान्दिव्याननेकशः ।
सम्प्राप्य च जगत्सर्वं वशेऽनयत शङ्करात् ॥४९

राजा पुरूरवा तथा उनका पुत्र शिवके पूजक एवं परम भक्त हुए हैं। शिवके पूजनके अतुल प्रभावसे उनके सभी मनोरथ पूर्ण भी हुए थे ।४३। राजा भरत शिवकी महासमर्चा किया करते थे तथा महाराज नहुष महा शैव थे और निरन्तर शिवके समाराधनामें तत्पर रहा करते थे ॥४४॥ राजा ययातिने भी भगवान् शङ्करकी पूजाके प्रभावसे अपनी समस्त कामनाओंकी प्राप्तिकी और शिव धर्ममें तत्पर पाँच पुत्रोंको जन्म दिया था ॥४५॥ यदुवंशमें मुख्य उनके पाँचपुत्र शिवके परम पूजक हुए और भगवान् शिवकी कृपासे अपनी समस्त अभीष्ट कामनाओंकी उन्हेंने प्राप्ति की थी ॥४६॥ हे मुने ! इनके अतिरिक्त अन्य भी जो महान् भाग्यशाली राजा इस संसारमें हुए हैं उन सबने भी शिवका पूजन किया था । उनके वंशज सभी राजाओंने भोग और मोक्षके प्रदाता शिवका समर्चन किया था । ॥४७॥ महात्मा श्री कृष्ण ने बदरी गिरिपर सातमास पर्यन्त स्वयं बड़ी तत्परताके साथ शिवका पूजन किया था ॥४८॥ उस समय परम प्रसन्न होने वाले शिवसे श्री कृष्ण ने अनेक दिव्य वरदान प्राप्त किये और उन्हींके प्रभावसे समस्त जगत्को अपने वशमें कर लिया था ॥४९॥

प्रद्युम्नः तत्सुतस्तात शिवपूजाकरः सदा ।
अन्ये च कार्ष्णिप्रवराः साम्बाद्याः शिवपूजकाः ॥५०

जरासंधो महाशैवस्तद्वंश्याश्च नृपास्तथा ।
निमि शैवश्च जनकस्तत्पुत्राः शिवपूजकाः ।५१।
नलेन च कृता पूजा वीरसेनसुतेन वै ।
पूर्वजन्मनि यो भिल्लो वने पान्थसुरक्षकः ।५२।
यातिश्च रक्षितस्तेन पुरा हरसमीपतः ।
स्वयं व्याघ्रादिभी रात्रौ भक्षितश्च मृतो वृषात् ।५३।
तेन पुण्यप्रभावेण स भिल्लो हि नलोऽभवत् ।
चक्रवर्ती महाराजो दमयन्तीप्रियोऽभवत् ।५४।
इति ते कथितं तात यत्पृष्टं भवताऽनघः ।
शांकर चरित दिव्यं किमन्यत्प्रष्टुमिच्छसि ।५५।

हे तात ! भगवान् श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्नजी सदा शिवकी पूजा किया करते थे और साम्ब प्रभृति सभी श्रीकृष्णके वंशजोंने शिवकी परम भक्तिका आश्रय लिया था ।५०। महान् शिव भक्त राजा जरासन्ध तथा उनके अन्य वंशज सभी शिवोपासक थे । राजा निमि और जनक तथा उनके पुत्र सभी लोग शिवके परम भक्त हुए हैं ।।५१।। वीरसेन राजा के पुत्र नल राजा ने भी शिवकी पूजाकी थी जोकि अपने पहिले जन्ममें वनके भील रहकर वन-मार्गकी रक्षा किया करते थे । ५२।। भील के जीवन में उसने एक बार शिवके समीपमें स्थित एक सन्यासी की रक्षा की थी और भाग्य वश ही बाघ के भक्षण करने से उसका रक्षण करनेके कारण मृत्युगत होगया था ।५३। इसी महान् पुण्य कार्य के प्रभाव से अपने दूसरे जन्ममें राजा नल के रूप में उत्पन्न हुआ और चक्रवर्ती राजा नल दमयन्तीरानी के परम प्रिय पति हुए ।।५४।। हे तात ! हे पापशून्य आपने जो प्रश्न मुझसे पूछा सो मैंने महेश्वर शिवका अनिदिव्य चरित्र तुम्हारे सामने वर्णनकर दिया । अब तुम बताओ और मुझसे क्या-क्या पूछना चाहते हो ।५५।

।। शिवरात्रि व्रत का माहात्म्य ।।

धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि जीवितं स फल तव ।
यच्छ्रावयसि नस्तात महेश्वरकथां शुभाम् ।१।

बहुभिश्चर्षिभिः सूत श्रुतं यद्यपि वस्तु सत् ।
सन्देहो न गतोऽस्माकं तदेतत्कथयामि ते ।२।
केन व्रतेन सन्तुष्टः शिवो यच्छति सत्सुखम् ।
कुशलः शिवकृत्ये त्वं तस्मात्पृच्छामहे वयम् ।३।
भुक्तिर्मुक्तिश्च लभ्येत भक्तैर्येन व्रतेन वै ।
तद्वद त्वं विशेषेण व्यासशिष्य नमोऽस्तु ते ।४।
सम्यक्पृष्टसृषिश्रेष्ठा भवद्भिः करुणात्मभिः ।
स्मृत्वा शिवपदांभोजं कथयामि यथाश्रुतम् ।५।
यथा भवद्भिः पृच्छ्येत तथा पृष्टं हि वेधसा ।
हरिणा शिवया चैव तथा वै शङ्करं प्रतिः ।६।
कस्मिंश्चित्सतये तैस्तु पृष्टं च परमात्मने ।
केन श्रुतेन सन्तुष्टो भुक्तिं मुक्तिं च यच्छसि ।७।

ऋषियोंने कहा—हे सूतजी ! आप भगवान् शिवकी शुभ कथाका श्रवण कराते रहते हैं ।।१।। हे सूतजी ! हमने अन्य बहुतसे ऋषियों के द्वारा अनेक उपाख्यान सुने हैं किन्तु उनसे हमारे हृदयके संशयका नाश नहीं होसका इसी कारणसे हम अब आपसे प्रार्थना करते हैं ।।२।। आपतो परम कुशल शिव भक्त और उनके कृत्योंके ज्ञाता है । इसीलिये हम आपसे यह जानना चाहते हैं कि भगवान् शङ्कर किस व्रतसे सन्तुष्ट होकर सच्चा सुख प्रदान किया करते हैं ।।३।। हे व्यासजीके प्रमुख शिष्य सूतजी ! जिस व्रतके करनेसे मनुष्य भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ति किया करता है अब आप उसे विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये । हम आपको नमस्कार करते हैं ।।४।। सूतजीने कहा-हे श्रेष्ठ ऋषिवृन्द ! सांसारिक प्राणियों पर दया करते हुए आपने बहुत ही सुन्दर बात पूछी हैं । मैंने जैसाभी सुना है वही भगवान् शिवके चरण कमलका स्मरण करके आपको सुनाता हूँ ।।५।। आज आप लोगोंने जैसी बात पूछी है वैसा ही प्रश्न एकबार ब्रह्मा, विष्णु और जगदम्बा पार्वतीने भी शिवसे पूछा था ।।६।। किसी समय शिवको प्रसन्न देखकर इन सबने परमेश शिवसे पूछा था कि हे शिव ! किस व्रत से सन्तुष्ट होकर आप भोग-मोक्ष दोनों दिया करते हैं ।।७।।

इति पृष्टास्तदा तैस्तु हरिणा तेन वै तदा ।
तदहं कथयाम्यद्य शृण्वतां यापहारकम् ।८।
भूरि व्रतानि मे सन्ति भुक्ति मुक्तिप्रदानि च ।
मुख्यानि तत्र ज्ञेयानि दशसंख्यानि तानि वै ।९।
दश शैवव्रतान्याहुर्जाबालश्रुतिपारगाः ।
तानि व्रतानि यत्नेन कार्याण्येव द्विजैः सदा ।१०।
प्रत्यष्टम्यां प्रयत्नेन कर्तव्यं नक्तभोजनम् ।
कालाष्टम्यां विशेषेण हरे त्याज्यं हि भोजनम् ।११।
एकादश्यां सितायां तु त्याज्यं विष्णोऽद्धि भोजनम् ।
असितायां तु भोक्तव्यं नक्तमभ्यर्च्य मां हरे ।१२।
त्रयोदश्यां सितायां तु कर्तव्यं निशि भोजनम् ।
असितायां तु भूतायां तन्न कार्यं शिवव्रतैः ।१३
निशि यत्नेन कर्तव्यं भोजनं सोमवासरे ।
उभयोः पक्षयोर्विष्णो सर्वस्मिञ्छिवव्रतपरैः ।१४।

इस प्रकार सबके और विशेष रूपसे विष्णुके द्वारा किये गये इस प्रश्न को सुनकर उस समय शिवजीने जो उत्तर दिया था, मैं श्रोताओंके उसी पापनाशक उपायको बतलाता हूँ ।८। श्रीशिवने कहा-हे देवबृन्द ! यों तो भोग और मोक्ष दोनों को प्रदान करने वाले मेरे विविध व्रत हैं किन्तु उन सबमें दशव्रत परममुख्य होते हैं ।९। वेदोंके पारगामी जाबाल आदि मुनियों ने ये दशही व्रत बतलाये हैं । इन दशव्रतोंको द्विजाति मात्रको यत्नपूर्वक करना चाहिए ।१०। हे विष्णो ! प्रत्येक अष्टमीके दिन एकबार रात्रिमें ही भोजन करना चाहिए । कालाष्टमीकेदिन तो खासतौरसे रात्रिके भोजनका भी त्याग करदेना चाहिए ।११। हे विष्णुदेव ! मासके शुक्लपक्षकी एकादशीकेदिन विशेषरूपसे भोजनको सर्वथा छोड़ ही देना चाहिए । हे हरे ! कृष्णपक्षकी एकादशीके दिन मेरा पूजनकरके रात्रिमें एकबार भोजन करना उचित है ।१२। शुक्लपक्षकी त्रयोदशीके दिन रात्रिमें एकबार भोजनकरे और कृष्णपक्षकी त्रयोदशीके दिन तो शिवके व्रत धारण करने वालोंको सर्वथा

कदापि भोजन नहीं करना चाहिए ।१६। हे विष्णो ! कृष्ण और शुक्ल दोनोंपक्षोंमें जो भी सोमवार पड़े उनमें शिव व्रतियों को केवल एकबार रात्रिमें ही यत्नके साथ भोजन करना उचित है ।१४।

ब्रतेष्वेतेषु सर्वेषु शैवा भोज्याः प्रयत्नतः ।
यथाशक्ति द्विजश्रेष्ठा व्रत संपूर्त्तिहेतवे ।१५।
व्रतान्येतानि नियमात्कर्तव्यानि द्विजन्मभिः ।
व्रतान्येतानि तु त्यक्त्वा जायन्ते तस्करा द्विजाः ।१६।
मुक्तिमार्गप्रवीणैश्च कर्तव्यं नियमादिति ।
मुक्तेस्तु प्रापकं चैव चतुष्टयमुदाहृतम् ।१७।
शिवार्चनं रुद्रजप उपवासः शिवालये ।
वाराणस्यां च मरण मुक्तिरेषा सनातनी ।१८।
अष्टमी सोमवारे च कृष्णपक्षे चतुर्दशी ।
चतुर्ष्वपि बलिष्ठं हि शिवरात्रिव्रतं हरे ।
तस्मात्तदेव कर्त्तव्यं भुक्तिफलेप्सुभि ।२०।
एतस्माच्च व्रतादन्यन्नास्ति नृणां हितावहम् ।
एतद् व्रतं तु सर्वेषां धर्मसाधनमुत्तमम् ।२१।

हे द्विजवरो ! इनसब व्रतोंमें शिव सेवियोंको यथाशक्ति व्रतकी समाप्ति परही भोजन करना चाहिये ।१५। हे द्विजवृन्द ! ये समस्तव्रत द्विजातियों को बहुतही नियमके साथ करने चाहिये । जो लोग इन व्रतोंका त्यागकर दिया करते हैं वे दूसरे जन्ममें चोर होते हैं ।।१६।। जो मुक्तिके मार्ग को जाना चाहते हैं उन्हें ये व्रत नियमपूर्वक अवश्य ही करने चाहिए । इसका कारण यही है कि ये चारोंबातें मोक्ष के देनेवाली होती हैं ।१७। शिवका समर्चन रुद्रका जप शिवालयमें रहकर उपवास,और काशीपुरीमें मृत्यु इनसे सनातनी मुक्ति होती है ।।१८।। कृष्णपक्ष में सोमवारसे युक्त अष्टमी तथा चन्द्रवारसेयुक्त चतुर्दशी होतो येदोनों भगवान्शिवके परमप्रसन्नता देनेवाले दिन होते है । इसमें कुछभी चिन्ता नहीं करनी चाहिये ।।१९।। हे भगवन् !

ऊपर बतलाये हुए चारों व्रतोंसे भी शिवरात्रिका व्रत बहुत अधिक बलवान् होता है। अत एव भोग-मोक्षके दोनों फल प्राप्त करने की इच्छा वालों को यह व्रत अवश्य ही करना चाहिये ॥२०॥ शिवरात्रिके व्रतके दिनसे अधिक अन्य कोई भी व्रत मनुष्यों के हित करने वाला नहीं है। यह व्रत मनुष्यके समस्त उत्तम धर्मोंका साधन है ॥२१॥

निष्कामानां सकामानां सर्वेषां च नृणां तथा।
वर्णानामाश्रमाणां च स्त्रीबालानां तथा हरे ।२२।
दासानां दासिकानां च देवादीनां तथैव च।
शरीरिणां च सर्वेषां हितमेतद् व्रतं वरम् ।२३।
माघस्य ह्यसिते पक्षे विशिष्टा सा ति कीर्तिता।
निशीथव्यापिनी ग्राह्या हत्याकोटि विनाशिनी ।२४।
तद्दिने चैव यत्कार्यं प्रातरारभ्य केशव।
श्रूयतां तन्मनो दत्वा सुप्रीत्या कथयामि ते ।२५।
प्रातरुत्थाय मेधावी परमानन्दसंयुतः।
समाचरेन्नित्यकृतं स्नानादिकमतन्द्रितः ।२६।
शिवालये ततो गत्वा पूजयित्वा यथाविधि।
मनस्कृत्य शिवं पश्चात्सङ्कल्पं सम्यगाचरेत् ।२७।
देवदेव महादेव नीलकण्ठ नमोस्तु ते।
कर्त्तुमिच्छाम्यहं देव शिवरात्रिव्रतं तव ।२८।

हे विष्णो! यह व्रत सकाम तथा निष्काम मनुष्योंके-चारोंवर्णों वाले तथा चारोंआश्रमों वाले मानवोंके-स्त्री-वर्ग और बालक वृन्दके धर्मका श्रेष्ठ साधन माना गया है ॥२२॥ यह ऐसा शिवका श्रेष्ठव्रत है जो समस्त दास दासियोंका सब देवता आदिका तथा सम्पूर्ण देहधारी मनुष्यों का हित सम्पादन करने वाला है ॥२३॥ माघ मासके कृष्णपक्षमें त्रयोदशी तिथि किसी अन्य तिथिसे मिश्रित तथा रात्रिमें व्याप्त होने वाली होतो उसे ग्रहण करना चाहिए क्योंकि ऐसी त्रयोदशी अत्यन्त श्रेष्ठ कही गई है और ऐसी तिथि कोटि (करोड़) हत्याओं के पापोंकी भी नाशकारणी बताई गई